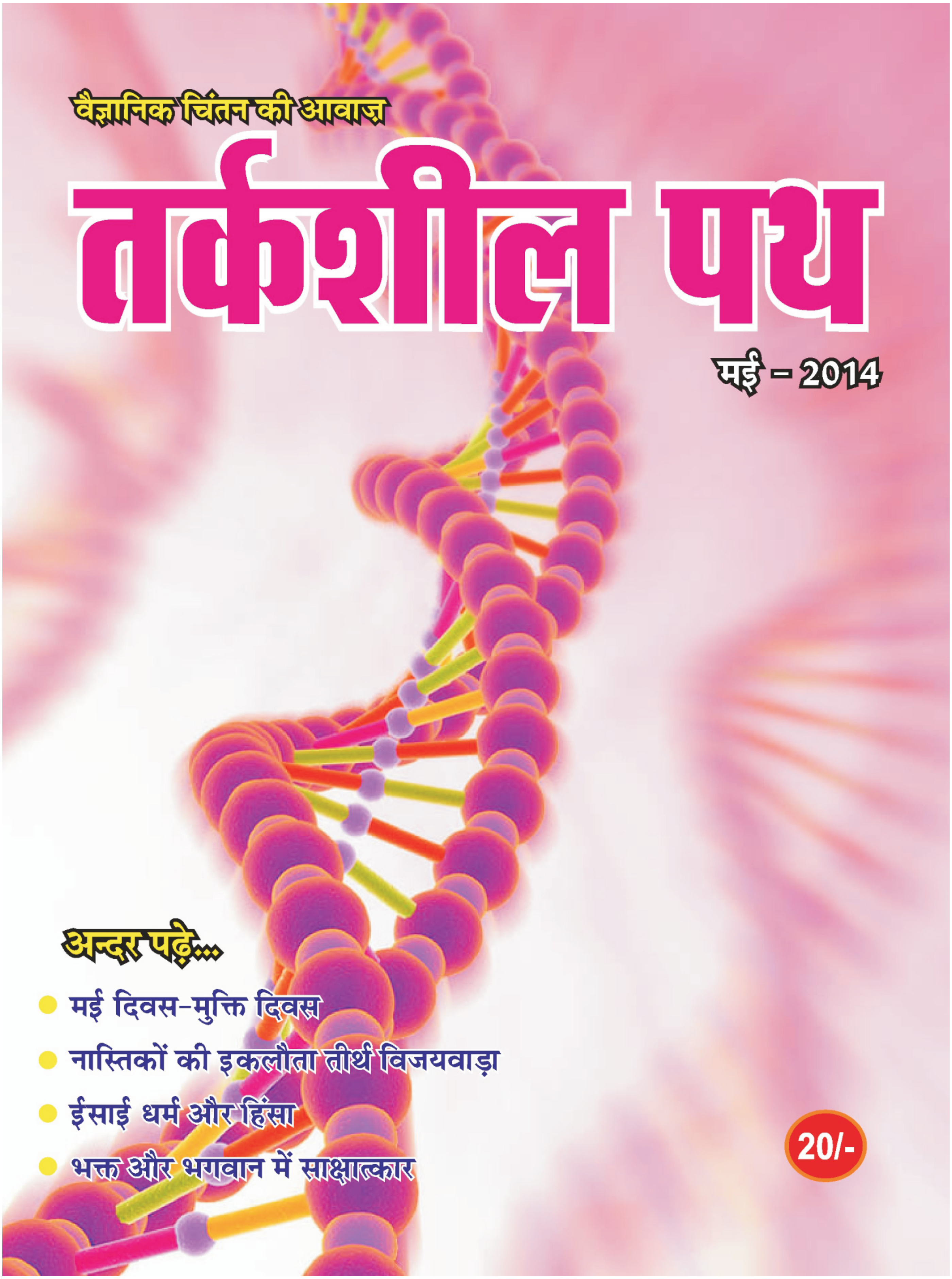
वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

मई – 2014



अन्दर पढ़ें...

- मई दिवस–मुक्ति दिवस
- नास्तिकों की इकलौता तीर्थ विजयवाड़ा
- ईसाई धर्म और हिंसा
- भक्त और भगवान में साक्षात्कार

20/-

संस्थापक संपादकः
आर.पी.गांधी - 093154-46140
संपादक
बलवन्त सिंह (प्राध्यापक) - 094163-24802
पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.com
संपादन सहयोगः-
गुरमीत अम्बाला-094160-36203
अनुपम राजपुराः 094683-89373
बलबीर चन्द लोंगोवालः 098153-17028
हेम राज स्टेनोः 098769-53561
अजायब जलालानाः 094167-24331
पत्रिका शुल्कः-
वार्षिकः 100/- रू.
विदेशः वार्षिकः 25 यू.एस.डॉलर
पत्रिका वितरणः
गुरमीत अम्बाला
e-mail:tarksheeleditor@gmail.com
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः
बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं.1062, आदर्श नगर, नज़दीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा)
e-mail:tarksheeleditor@gmail.com
तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुडने के लिए
www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग
Gurmeet Singh C/o
Hindu Institute of Computer & Accounts
Lukhi Road, Bhiwani Khera, KKR.
e-mail:hindu.institute@gmail.com
M.No. 089502-82815

विशेष लेखः

विशेष रिर्पोटः

केस रिर्पोटः

नियमित स्तम्भः

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक जाट धर्मशाला, कुरूक्षेत्र में दिनांक 14-07-2014 दिन रविवार को प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें, क्योंकि परिस्थिति वश इसमें बदलाव हो सकता हैं

संपर्क सूत्रः

निरंजन, कसेरला -090503-12551

बलजीत सिंह -082950-51400

विज्ञान ज्योति पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा माडल टाऊन, अम्बाला शहर। (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं: 30191855465 में जमा करा सकते हैं। शुल्क जमा कराते समय 500 रुपये तक 10 रुपये अतिरिक्त जोडें एवं अपना पता मोबाईल नं. 94160-36203 पर **SMS** कर दें

नोटः किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी, यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

लोकसभा चुनावों में अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिये राजनैतिक पार्टियों का प्रचार शिखर पर है, विभिन्न सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण रखने की बजाए, पार्टियाँ ज्यादातर जाति, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र आदि के आधार पर, समाज विरोधी नारे लगा कर अपनी राजनैतिक रोटियां सेकने का काम कर रही हैं। पैसा व शराब का खेल भी गुप-चुप तरीके से चल रहा है।

अंग्रेजों के सत्ता-हस्तांतरण के बाद का 67 वर्षों का इतिहास हमारे सामने है। गरीबी, बेराजगारी, मंहगाई घटने की बजाए बढ़ रही है। मेहनतकश जनता जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं शिक्षा, स्वास्थ्य व रोज़गार से वंचित है। नई आर्थिक नितियों से रोज़गार के अवसर शोषण के चंगुल में हैं। कृषि क्षेत्र जो कि भारत का सबसे बड़ा क्षेत्र था, तबाह हो चुका है, दस्तकारी तबाह हो रही है, नई आर्थिक नितियों ने वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा निजिकरण के नाम पर देसी-विदेशी कम्पनियों को लूटने के आसान रास्ते दिये हैं तथा मेहनतकश जनता का कचूमर निकाल कर अधमरा कर के रख दिया है। अमीर-गरीब का फासला दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। नौजवानों को नशों, अश्लीलता व अंधविश्वासों में फंसाया जा रहा है, बढ़ते शराब के ठेके, इलैक्ट्रॉनिक व प्रिन्ट मीडिया में नंगेज व बाबाओं के बढ़ते डेरे इस का प्रमाण हैं। शिक्षा को वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित बनाने के स्थान पर, सत्ताधारी पार्टियों ने उसे अपनी विचारधारा की रंगत देने का हर संभव प्रयास किया है। अपने अधिकार मांगने के लिये जब-जब जनता सड़कों पर उतरती है तो उसका स्वागत करती हैं-लाठियां, पानी की तेज़ बौछारें, आंसू गैस के गोले तथा गिरफ्तारियां। कहां है प्रजातंत्र ? प्रतिदिन प्रजातंत्र की हत्या हो रही है। चुनावी जंग में उतरी राजनैतिक पार्टियां बड़े-बड़े दावे कर रही हैं। हमारे विचार-चिंतन का विषय है - विकास किसका हुआ है ? ये तथाकथित नेता लगातार जीतते आ रहे हैं एवं जनता हारती जा रही है। मेहनतकश जनता के विकास का कोई एजेन्डा न होने पर इनका मत है कि लोगों को धर्म के नाम पर उलझाया जाए। धार्मिक स्थानों, डेरों, बाबाओं के माध्यम से वोट प्राप्त किये जाएं। यदि डेरे स्वयं को धार्मिक संस्थान कहलवाते हैं तो इनके राजनैतिक अंग क्यों ? हर नेता इन स्थानों पर चक्कर काट रहा है। अप्रत्यक्ष रूप से इनको राहत दे रहा है। अधिकतर उम्मीदवार ज्योतिषियों से मुहूर्त निकलवाकर चुनावी मैदान में कूदे हैं। अवैज्ञानिक विचारधारा के धारक ये नेता लोग जनता का क्या भला करेंगे ? साम्प्रदायिक राजनीति सर्वोपरि है। हर-हर के नारे गूंज रहे हैं। कहीं किसी बड़े नेता के जामा मस्जिद के शाही इमाम से मुलाकात के बयान सामने आ रहे हैं। साम्प्रदायिक संगठन खुल्लमखुल्ला राजनैतिक पार्टियों के प्रवक्ता बन कर उनकी मदद कर रहे हैं। स्कूलों में बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने का लोगों से वादा किया जा रहा है। शिक्षा दी जायेगी कि लोग कर्म करें परन्तु फल की इच्छा न करें। भाव जो मेहनत करते हैं करते रहेंगे और जिनके कर्मों में मौज करना लिखा है वे अ य्याशी करेंगे। स्पष्ट है कि इस चुनाव में जीत कर आने वाली पार्टी लोगों का कुछ भला नहीं करेंगी। समानता पर आधारित, लूट रहित समाज की स्थापना के लिये मेहनतकश लोगों को वयवस्था के बदल तलाशने होंगे।

125वें मई दिवस परः

मई दिवस-मुक्ति दिवस

हेम राज स्टेनो

विश्व स्तर पर एक मई को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है और इस बार भी मनाया जाएगा। मजदूर दिवस की सच्ची भावना क्या है, इस पर विचार करने से पूर्व इस दिवस के घटनाक्रम के विषय पर कुछ बात करते हैं।

एक मई 1886 को हजारों नहीं बल्कि लाखों की संख्या में मजदूर अपनी पत्नियों एवं बच्चों समेत अपने-अपने सुन्दर समझे जाने वाले वस्त्र पहन कर शिकगो शहर के मिचिगन ऐवेन्यू चौक की ओर जा रहे हैं। उनके दिलों को दहलाने के लिए हूटर बजाए जाते हैं। परन्तु मजदूरों के गीतों एवं नारों की रौद्र पूर्ण आवाजें इन हूटरों की आवाज को कुचल कर रख देती हैं। भूख-दुखों एवं दिन रात के श्रम की थकावट के सताए मजदूरों के चेहरे चाहे पीले-जर्द हैं, परन्तु उनका आत्मविश्वास शिखर पर है। मजदूर रोष एवं रौद्र रूप प्रकट करते हैं। इसी तरह से 2 मई को भी होता है। परन्तु यह दोनों दिन शान्त निकल जाते हैं। इस शान्ति के पीछे का तूफान अदृश्य रहता है।

फिर 3 मई का दिन आता है। मजदूरों का सैलाब फिर से बहता है। ''सभी मानव समान हैं'' का नारा लगाने वाला अमेरिकी पूंजीपति वर्ग अब अपना सभी मनुष्यों को समान समझने का नकाब उतार फैंकता है एवं अपना वास्तविक और खूंखार चेहरा दिखाता है। चार मजदूरों को शहीद एवं अनेकों को घायल कर देता है। परन्तु मजदूर झूकते नहीं, रूकते नहीं। झूकना उन्हें अपने आत्मसम्मान के विरूद्ध लगता है तथा रूक जाना मौत के समान। वे पूंजीपति राजसत्ता द्वारा ढहाए गए जब्र-जुल्म के विरूद्ध 4 मई को फिर से हेअ मार्केट चौक में रैली करते हैं। लूट, दबाव एवं अत्याचार का रिश्ता अटूट है। अतः पूंजीपति वर्ग अपने शोषण को जारी रखने हेतू अत्याचार का नया हथकंडा प्रयोग में लाता है। वह अपने किसी जरखरीद द्वारा लोगों के समूह में बम फैंकवा देता है। इसी का बहाना बनाकर मजदूरों पर पुलिस अंधाधूंध गोली चला देती है। दो मजदूर सरेआम शहीद कर दिये जाते हैं। एक मजदूर, मजदूरों की नज़र से बच कर शहीद कर दिया जाता है तथा अनेकों को घायल कर दिया जाता है। इस पर मजदूर वर्ग के क्रोध का ज्वालामुखी भी फट पड़ता है तथा पूंजीपति वर्ग की पुलिस के 7 व्यक्तियों को ढेर कर देते हैं तथा 69 पुलिस कर्मियों के शरीर को भी सेंक पहुंचता है। इस प्रकार मजदूर वर्ग जवाब कार्यवाई (Retalliation) के तौर पर पूंजीपति वर्ग को नज़राना पेश कर देता है एवं दर्शा देता है कि मजदूर एवं पूंजीपति वर्ग में चल रहा वर्ग संघर्ष क्या रूप धारण करेगा, यह स्पष्ट रूप में राजसत्ता पर काबिज पूंजीपति वर्ग पर निर्भर रहता है।

पूंजीपति वर्ग शोषण पर आधारित शासन-व्यवस्था का सदा-सदा के लिए चालू रहने का भ्रम पालता है तथा मजदूर वर्ग के संघर्ष को सदा-सदा के लिए समाप्त कर देने के लिए गिरफ्तारियों एवं यातनाओं का अंधा दौर शुरू करता है। कईयों पर संगीन 'जुर्मों' के अधीन मुकद्दमें चलते हैं, कईयों को कैद होती है तथा सात मजदूर नेताओं को सजाए-मौत सुना दी जाती है। मजदूर झुकते नहीं, वे दमन का विरोध करते हैं। इस विरोध के दबाव के अधीन तीन मजदूर नेताओं की मौज की सजा उम्र कैद में बदल दी जाती है परन्तु शेष चार नेताओं को फांसी बहाल रखी जाती है। ये चार मजदूर नेता था- पारसंज, स्पाईस, फिशर एवं एंगल। इनमें से पारसंज वही नेता था जिसने 4 मई को कहा था, "सिर्फ आठ घंटे के कार्य दिवस की लहर में ऐसा कुछ नहीं है जिस पर सरमायेदार इतना बौखला रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि सेना हथियार उठाए खड़ी है और बन्दूकें आप लोगों को कुचलने के लिए तैयार हैं?... जब भी आप कोई मांग उठाते हो तो जिलाधीश द्वारा हथियार-बन्द दस्ते बुला लिए जाते हैं आप लोगां पर गोलियां एवं लाठियां बरसाई जाती हैं और सड़कों पर कत्ल कर दिये जाते हैं।... मेरा मकसद किसी को भड़काना नहीं है बल्कि हकीकत बताना है... चाहे सुबह होनें से पूर्व मुझे उसके लिए जान की बलि भी दनी पड़ जाए... अगर आप अपने बीवी-बच्चों को प्यार करते हो, अगर उन्हें भूख से दम तोड़ते हुए अथवा सड़कों पर कुत्तो की मौत मरते हुए नहीं देखना चाहते, अगर आप मुक्ति चाहते हैं तो आप का फर्ज़ है कि स्वयं को हथियार बन्द करें।"

मजदूर दिवस का उच्चतर स्तरः

मजदूरों ने संकल्प लिया कि मई दिवस वाले दिन कारखाने नहीं चलेंगे, खानों में कुदालें नहीं चलेंगी, खेतों में हल नहीं चलेंगे अर्थात् मेहनतकश दिखा देंगे कि श्रम के बगैर कोई उत्पादन संभव नहीं। उन्होंने समझ लिया कि वास्तव में श्रम ही समाज की शाह-रग है तथा श्रम केवल और केवल श्रमिक ही करते हैं। इसलिए श्रम के फल पर केवल श्रमिकों का ही अधिकार है।

इसलिए मजदूर वर्ग ने पारसंज द्वारा कहे गए बोल कि "केवल 8 घंटे के कार्यदिवस की लहर में ऐसा कुछ नहीं है जिस पर सरमाएदार इतना बौखला रहे हैं।... यदि तुम मुक्ति चाहे हो तो तुम्हारा कर्त्तव्य है कि स्वंय हथियार-बंद हो जाओ को अपना कर मई-दिवस को मुक्ति-दिवस के रूप में मनाने का संकल्प कर लेता है।

मूजदूरों में फैल रही इस चेतना से पूंजीपति वर्ग का दिमाग चकराने लगा। इसलिए विश्व स्तर पर पूंजीपति वर्ग ने भी उसी दिन बैठक बुलाई जिस दिन मई-दिवस मनाया जाना था। मजदूर वर्ग में मुक्ति के बारे में आई चेतना को कुन्द करने के लिए पूंजीपति वर्ग ने आठ घंटे कार्य दिवस का ऐलान कर दिया। इस प्रकार से आठ घंटे कार्य-दिवस प्रारम्भ हो गया। यह पूंजीपति वर्ग का लहर को केवल कार्य-घंटों तक सीमित करते हुए उनकी मुक्ति की चेतना को कुन्द करने के लिए गुप्त हथकंडा था।

परन्तु पूंजीपति वर्ग ने जब यह भांप लिया कि यह हथकंडा प्रयोग करने पर भी श्रमिक वर्ग अभी भी पीछे धकेल रहा है तो उसने

श्रमिकों के मनों में दमन के द्वारा दहशत बैठाने का मन बनाया। उसने मई दिवस को न मनवाने देने के लिए गुप्त रूप में तैयारियां आरम्भ कर दी। इस प्रकार से मजदूर वर्ग एवं पूंजीपति वर्ग आमने-सामने मैदान में डट गए। देखो, युद्ध एक ही है- एक तरफ के लोग अपने अधिकार एवं न्याय के युद्ध के लिए डटे हुए हैं जबकि दूसरी ओर का वर्ग अनाधिकार एवं अन्याय-पूर्वक युद्ध को लड़ने के लिए खड़ा है।

इसी प्रकार की हालत में जर्मन में मई दिवस में भाग लेने वाले श्रमिकों को नौकरियों से निकाल देने की धमकियां दी गई, फ्रांस के पूंजीपति वर्ग ने हथियार-बंद टुकड़ियां तैनात कर दी, इसी प्रकार अन्य देशों में भी किया गया। परन्तु इस सभी कुछ के बावजूद फ्रांस, जर्मन, अमेरिका, अर्जनटाईना एवं अन्य कई देशों में मई दिवस पर प्रदर्शन किए गए।

1891 में मई दिवस पर आस्ट्रिया, हंगरी एवं बैल्जियम में 125000 मजदूर एकत्र हुए। डब्लिन, आयरलैंड, ब्रिटेन एवं जर्मनी में भी मई दिवस मनाया गया फ्रांस में शान्तिपूर्वक प्रदर्शन कर रहे मजदूरों पर हथियार-बन्द टुकड़ियों ने गोलियां चला कर 10 लोगों को मार कर शिकागो के अत्याचार को फिर से ताज़ा कर दिया। इस कत्लेआम को ज़ायज ठहराने के लिए पाल लाफग्यू नामक नेता पर सशस्त्र एक्शन उकसाने का झूठा दोष लगा कर मुकद्दमा चलाया गया। इस सारे अत्याचार के बावजूद गोली का शिकार हुए मजदूरों के अन्तिम संस्कार पर 30000 लोगों का रौद्र-रूप धारण किया हुआ जमावड़ा लगा। इस प्रकार से मजदूर वर्ग की आठ घंटों के कार्य दिवस की मांग को लेकर शुरू संघर्ष मजदूरां की मुक्ति के संघर्ष परिवर्तित हो गया तथा मजदूर लहर उच्चतर पड़ाव में दाखिल हुई। मजदूर वर्ग ने मई दिवस को मुक्ति दिवस के रूप में मनाना शुरू किया।

मई दिवस का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस में परिवर्तित हो जानाः

1889 में कार्ल मार्क्स के साथी का एंगेल्स की सहायता से द्वितीय विश्व कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल की कांग्रेस हुई। इसमें 1890 में शिकागो में हुए अत्याचार के रोष स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन करने का प्रस्ताव पास किया गया। बाद में 1891 में कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल की द्वितीय कांग्रेस में प्रथम मई को प्रत्येक वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में बाकायदा मनाने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार प्रथम मई विश्व स्तर पर मनाया गया। उसके पश्चात् विभिन्न देशों में यह बाकायदा तौर पर मनाया जाने लगा।

अब प्रश्न उठता है कि ये दो वर्ग-पूंजीपति वर्ग एवं मजदूर वर्ग का एक दूसरे के विरूद्ध जीवन और मृत्यु के संघर्ष में कूद पड़ने के पीछे वास्तविक कारण क्या है? इस सवाल को समझने के लिए हमें पूंजीवादी व्यवस्था में मौजूद बुनियादी विरोध को समझना पड़ेगा।

पूंजीवादी व्यवस्थाः

पूंजीवादी व्यवस्था में जो भी उत्पादन किया जाता है वह खपत करने के लिए नहीं बल्कि उसके विक्रय द्वारा मुनाफा कमाने के लिए किया जाता है। जैसे कि एक पूंजीपति सीमेंट का कारखाना लगाता है तो वह सीमेंट अपने प्रयोग के लिए नहीं बल्कि इसे बेच कर मुनाफा कमाने के लिए बनाता है।

अब आगे यह कि कारखानों में काम कौन करेगा, इसके लिए पूंजीपति वर्ग को कार्य करने के लिए श्रमिक की श्रम-शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। यह श्रम-शक्ति उसे उन मनुष्यां से मिलती है जिनके पास कोई संपत्ति नहीं होती अथवा नाम-मात्र होती है अथवा इतना सम्पत्ति एवं पूंजी नहीं होती कि वह स्वतंत्र रूप में अपने कौशल एवं साधनों के द्वारा पूंजीपति बनते हुए कोई शोषण कर सकें। इस तरह से पूंजीवादी व्यवस्था में दो बुनियादी वर्ग बन जाते हैं- प्रथम बड़े उत्पादन के साधनों के मालिक शोषण करने वाले पूंजीपति एवं द्वितीय श्रम करने वाले श्रमिक।

पूंजीपति, मुनाफा कमाने के लिए उत्पादन करवाता है अर्थात् उसका समस्त उत्पादन माल (बेच कर मुनाफा कमाने के लिए पैदा की जाने वाली वस्तु) बन जाता है। पूंजीवाद में श्रमिक स्वतंत्र तो दिखाई देता है परन्तु वह स्वतंत्र होता नहीं। वह अपनी श्रम-शक्ति बेचने वाला उजरती गुलाम बना रहता है। क्यांकि उसके पास श्रम-शक्ति बेचने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं होता। इस तरह से शारीरिक तौर पर स्वतंत्र होते हुए श्रम-शक्ति बेचने पर मजबूर होने के कारण वह पूंजीपति का गुलाम बना रहता है अर्थात् उजरती गुलाम। इस प्रकार श्रम-शक्ति भी बाजार में बिकने वाली एक वस्तु बन जाती है। यह श्रम-शक्ति बेचने में अकेले साधनहीन मजदूर ही नहीं बल्कि वे सभी के सभी श्रमिक लोग होते हैं जो पूंजीपति की तरह अपने तौर पर स्वतंत्र कार्य नहीं चला सकते। इस प्रकार इन सभी श्रमिक लोगों की श्रम-शक्ति भी एक माल बन जाती है जिसे बेचने के लिए वे मजबूर होते हैं।

दूसरी बात, ऊपरी तौर पर देखने में लगता है अथवा पूंजीवादियों के जर-खरीदों द्वारा प्रचारा जाता है कि पूंजीपति श्रमिकों का शोषण नहीं करता क्योंकि वह उन्हें काम के बदले में उजरत देता है। परन्तु फिर पूंजीपति के पास पूंजी के ढेर क्यों लगते जाते हैं, इसे हम एक संक्षिप्त उदाहरण द्वारा समझते हैं।

नया रूप धारण करनाः

जब पूंजीपति बाजार में माल के विक्रय के लिए परस्पर मुकाबलेबाजी में पड़ते हैं तो एक ढह जाता है तथा दूसरा उसका स्थान ले लेता है अथवा फिर इसी मुकाबले के कारण उनमें से दो अथवा दो से भी बढ़कर अपना गट बना लेते हैं ताकि किसी क्षेत्र के अन्य पूंजीपति को निकाल बाहर किया जाए अथवा उन पर पूर्ण तौर पर अधिपत्य पाया जा सके। इस तरह से पूंजीपति वर्ग ` अकेले-अकेले पूंजीपति अलग-अलग नहीं रहते बल्कि उनकी इजारेदारियां अस्तित्व में आ जाती हैं तथा आई भी हैं। इससे पूर्व पूंजीपतियों के दरम्यान मुकाबला तो होता है परन्तु उतना तेज़ नहीं होता जितना इजारेदारियों के अस्तित्व में आ जाने पर, क्योंकि एक-अकेले पूंजीपति के पास अपने तौर पर पूंजी मुकाबलतन कम होती है।

अतः इजारेदारियों के अस्तित्व में आ जाने पर यह मुकाबला उच्चतर स्तर का बन जाता है तीक्ष्ण भी हो जाता है जैसे कि अब हम देख सकते हैं कि अमेरिका की परचून क्षेत्र की अकेली वाल्मार्ट कम्पनी के पास इतनी पूंजी है कि वह कितने ही देशों को अपनी लपेट में लिए बैठी है तथा हमारे जैसे देशों को भी लपेट में ले

जाने की तैयारी में बैठी है। अब इस वाल्मार्ट कम्पनी को वही गिरा सकेगा जो इससे भी अधिक ताकतवर हो। इस प्रकार से वाल्मार्ट एवं अन्य ताकतवर के दरम्यान जो मुकाबला होगा वह भी तीखा होगा।

इजारेदारियों के अस्तित्व में आने से पूर्व पूंजीवादी देशों के पूंजीपति विश्व के अन्य देशों को अपने अधीन अर्थात् बस्तियां बना कर शोषण करते एवं दबाते थे जैसे कि इंग्लैंड के पूंजीपति वर्ग ने हमारे भारत को अपने अधीन करके किया। परन्तु तब वे मुख्य तौर पर बस्तियों से कच्चा माल ले जाकर अपने देश का बनाया हुआ माल इन मंडियों में बेचते थे। इसी कारण वे साम्राज्यवादी देश कहलाते थे। परन्तु पूंजीवादी व्यवस्था में इजारेदारियों के अस्तित्व वाले इजारेदारी साम्राज्यवादी देश नहीं थे।

इजारेदारियों के अस्तित्व में आने से पूर्व वाले साम्राज्यवाद से इजारेदारी साम्राज्यवाद अलग प्रकार का बन गया जिसका का.लेनिन ने विश्लेषण करते हुए दर्शाया था कि 1900 में इजारेदारियां अस्तित्व में आ गई हैं। इसे उन्होंने ''साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की उच्चत्तम अवस्था कहा। अब देखें कि इस साम्राज्यवाद के बन जाने से क्या हुआ। पहले वाला साम्राज्यवाद जहां सरेआम बस्तियों को अधीन करके लूटता एवं दबाता था तो बस्तियां पराधीन देशों, राष्ट्रों एवं लोगों को अपना शत्रु सामने दिखाई देता था। परन्तु अब वह पर्दे के पीछे हो गया है। वह बाहर के देशों में पूंजी लगा कर अपना शोषण एवं दमन कायम रखने लग गया, एफ.डी.आई. की उदाहरण इसका प्रमाण है अर्थात् बस्तियों वाले शोषण के रूप से नया (नव-बस्तीवादी) रूप धारण कर लिया। इस तरह करते हुए इजारेदारी साम्राज्यवाद ने समूचे विश्व को एक व्यवस्था में लपेट लिया। विश्वभर के साम्राज्यवादी देशों में होने वाली प्रत्येक आर्थिक एवं राजनैतिक हलचल समूचे विश्व को प्रभावित करने लग गई। जैसे कि अभी पिछले दिनों अमेरिका में आए संकट का प्रभाव लगभग समूचे विश्व में देखा जा सकता है।

इस प्रकार पूंजीवादी देशों में पहले विरोधा श्रमिक वर्ग एवं पूंजीपति वर्ग के दरम्यान था तथा उनका नारा ''सभी देशों के मजदूरों, एक हो जाओ'' था, अब लड़ाई इजारेदारी साम्राज्यवाद की विश्व-व्यवस्था के विरूद्ध बन जाने के कारण पहले वाला नारा तब्दील होकर ''सभी देशों के मजदूरों एवं शोषित देशों के लोगों, एक हो जाओ'' बन गया। उस समय से विश्व स्तर पर साम्राज्यवादी व्यवस्था के विरूद्ध कम्यूनिज़्म अर्थात् वर्ग रहित, शोषण रहित तथा प्रत्येक तरह के दमन से मुक्त समाज के सृजन के लिए संघर्ष इस नारे के द्वारा आगे बढ़ रहा है। यह एक तर्कशील निष्कर्ष है कि इस समूची विश्व व्यवस्था को आमूल-चूल परिवर्तित किये बिना यहां श्रमिकों की मुक्ति वाला समानता वाला समाज का सृजन नहीं किया जा सकता।

अतः मई दिवस का संदेश अथवा भावना यही है कि वर्तमान परिस्थितियों में उपरोक्त व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष करते हुए वर्ग रहित, शोषण समानता वाला समाज (साम्यवाद) के सृजन के लिए संघर्ष के रास्ते पर चला जाए। इस भावना से रिक्त मनाया जाने वाला मई दिवस एक रस्म बन कर रह जाता है।

हिन्दी अनुवाद, बलवन्त सिंह लैक्चरार

धर्म, सत्य का प्रर्यायवाची नहीं

का.श्याम सुन्दर

सभी धर्मो की मूल बात मानव मस्तिष्क अथवा भूतद्रव्य से स्वतंत्र किसी चेतना अथवा आत्मा के अस्तित्व का होना है जोकि पूर्णतः अवैज्ञानिक और एक निराधार कल्पना है लकिन पदार्थ से स्वतंत्र किसी आत्मा अथवा चेतना की मान्यता क्योंकि सभी धर्मो में समान रूप से विद्यमान है इसलिए बड़े-बड़े धार्मिक लोग कहा करते हैं कि सभी धर्म मूलतः एक हैं। गांधीजी ने भी यही कहा और स्वामी विवेकानन्द ने भी यही। स्वामी विवेकानन्द ने तो यहां तक कहा कि विभिन्न धर्मो में जो अन्तर और कलह दिखायी देता है वह मात्र विभिन्न धर्मो की पूजा पद्धतियों के कारण से है। लेकिन उन्होंने कहा कि पूजा पद्धति का नाम धर्म नहीं है वरन् धम तो किसी वृत्त का वह केन्द्र है जिस पर उस वृत्त की परिधि से चलकर आनेवाला प्रत्येक अद्धव्यास मिल जाता है। स्वामी विवेकानन्द द्वारा धर्म की, एक वृत्त के केन्द्र के साथ तुलना किये जाने का तात्पर्य यह है कि वृत्त का केन्द्र केवल एक है और उसकी त्रिज्याएं अनेक। वृत्त की त्रिज्याओं को जो परिधि से आकर केन्द्र पर मिलती हैं स्वामी जी ने विभिन्न धर्मो की पूजा-पद्धतियों से तुलना की है। जबकि सभी पूजा-पद्धतियों (त्रिज्याओं) के माध्यम से वृत्त की परिधि पर खड़े विभिन्न धर्मो के लोग अपनी-अपनी त्रिज्याओं के जरिये उसी एक केन्द्र पर पहुंचेंगे। इसलिए वृत्त की परिधि पर खड़े विभिन्न धार्मावलिम्बियों को स्वामी विवेकानन्द और गांधी जी सर्वधर्म समभाव की शिक्षा देते हैं। पर अब सवाल का अस्तित्व ही सिग न हो तो फिर सवर्मधर्म समभाव के इस आधारहीन उपदेश का क्या अर्थ रह जाता है? ऐसी दशा में 'सर्वधर्म समभाव', मात्र विभिन्न कल्पनाओं पर आधारित उद्देश्यहीन पूजा पद्धतियों में समन्वय बिठाने के अलावा और कुछ नहीं रह जाता और 'सर्वधर्म समभाव' स्वयं एक खोखले एवं अर्थहीन वाक्यांश में रूपांतरित हो जाता है।

अब हमारे सामने आज का सबसे जटिल प्रश्न यह है कि यदि धर्म का मूल, मानव मस्तिष्क से स्वतंत्र या निरपेक्ष किसी चेतना अथवा आत्मा के काल्पनिक अस्तित्व में विश्वास करना है तो फिर धार्मिक स्वतंत्रता और धर्मनिरपेक्षता की मूल बात तथा एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा क्या हो? अपने इस रूप में यह प्रश्न सत्य और असत्य के बीच संघर्ष का रूप ले लेता है यानि, हमारे सामने प्रश्न इस रूप में आ खड़ा होता है कि सत्य और धर्म, दोनों में से किसकी रक्षा की जाए? सत्य की अथवा धर्म की, क्योंकि दोनों की रक्षा एक साथ सम्भव ही नहीं है। ऊपर की चर्चा में हमने देखा कि सत्य तो यह है कि चेतना अथवा विचार मानव मस्तिष्क की उपज है जोकि मानव मस्तिष्क के द्वारा इस भौतिक जगत का ही प्रतिबिम्ब हैं मानव चेतना में आया प्रत्येक प्रतिबिम्ब सत्य नहीं होता। उन प्रतिबिम्बों में कुछ सत्य व कुछ असत्य होते हैं। सत्य वे जो भौतिक जगत की यथार्थता से मेल खाते हैं और असत्य वे जो इसकी यथार्थता से मेल नहीं खाते और तमाम धार्मिक प्रतिबिम्ब इसी असत्य की श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे भौतिक जगत की यथार्थता से मेल नहीं खाते। इसलिए धार्मिक लोग, धर्म की यथार्थता पर न तो जाना चाहते हैं। और न ही किसी को जाने की अनुमति देते हैं। वे कहते हैं कि धर्म युक्ति-तर्क और परख पद्धति से भय नहीं लगता लेकिन धर्म अपनी परख किये जाने से हर क्षण भयभीत रहता है। थोड़ी सी तर्क की बात उठी नहीं कि धार्मिक लोग चीख पुकार करने लगते हैं कि उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई जा रही है। जबकि सत्य को कोई ठेस लग ही नहीं सकती। इसके उल्ट सत्य पर युक्ति-तर्क के जितने भी प्रहार होंगे उनसे सत्य और भी निखर कर सामने आता है। मिसाल के

तौर पर जब कोई व्यक्ति किसी कुम्हार से मिट्‌टी का घड़ा खरीदता है तो उसके सही होने की परख वह घड़े पर ठेस मारकर ही करता है। अब यदि घड़े का विक्रेता, खरीददार पर यह शर्त लगाने लगे कि घड़ा बिना ठनकाए आँख मूंद कर ही खरीदना होगा तो फिर समझो जरूर घड़े में कोई गड़बड़ है। साँच को आँच कैसी ? किसी सत्यान्वेषी की सत्य भावना पर कभी ठेस लग ही नहीं सकती। हमने वैज्ञानिकों को कभी चिल्लाते नहीं सुना कि कभी उनकी वैज्ञानिक भावनाओं को ठेस पहुंची हो। ठेस केवल धार्मिक भावनाओं को ही पहुंच सकती है क्योंकि उनका आधार यथार्थ से मेल न खाता हुआ एक काल्पनिक विश्वास है। धर्म केवल श्रद्धा और विश्वास पर टिका होता है जबकि सत्य का आधार मात्र किसी की श्रद्धा और विश्वास नहीं होता। गैलीलियो की खोज कि पृथ्वी गोल है और सूर्य के चारों ओर घूमती है एक वैज्ञानिक सत्य है जो गैलीलियो की श्रद्धा पर आधारित नहीं है बल्कि यदि कोई इस वैज्ञानिक कथन पर अश्रद्धा भी कर तब भी वह सत्य ही रहता है। इसके उलट जल का देवता इन्द्र महज एक कपोल कल्पना सिद्ध हुई है और इसका आधार सिर्फ श्रद्धा और धार्मिक विश्वास है। ऐसा विश्वास जो युक्ति तर्क से भय खाता है और अपनी परख से डरता है, अंधविश्वास कहलाता है तथा इसी प्रकार अंधश्रद्धा भी वही कहलाती है जो युक्ति तर्क से भय खाती है। शोषक वर्ग व उसके संत महात्मा जनता को समझाते हैं कि भौतिकवाद से दूर रहो और धर्म को अपनाओ। वे भौतिकवादी दर्शन को एक भोगवादी दर्शन के रूप में पेश करते हैं जबकि भोगवाद में वे खुद आकण्ठ डूबे हुए होते हैं। मार्क्स-एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, माओ त्सेतुंग, भगतसिंह ये सभी भौतिकवादी थे लेकिन इन्होंने जिस कठोर संघर्ष और अभाव के जीवन को जीया उसे जानकर इनका शत्रु भी इन पर यह इल्जाम नहीं लगा सकता कि वे भोगवादी थे जबकि अध्यात्मवाद के साइनबोर्ड वाले आज अनेक धार्मिक डेरे और अड्डे हमारे चारों ओर मशरूमों की तरह से खुलते जा रहे हैं और जनता को भौतिकवाद से दूर रहने की शिक्षा दे रहे हैं और खुद घोर भोगवाद में गोते लगा रहे हैं।

वर्तमान में सभी धर्म, वैज्ञानिक तकनीक का सहारा लेकर अपने-अपने किस्म की अन्ध श्रद्धा और अंधविश्वासों के प्रचार प्रसार की होड़ में लगे हैं जो समाज के लिए बिल्कुल भी श्रेयस्कर एवं हितकर नहीं हैं। धर्म अब आम जनता को सत्य से विमुख करने में अपनी एड़ी चोटी का जोर लगा रहा है जिसके पीछे शासक और शोषक वर्ग की शक्ति खड़ी है। वर्तमान शासक वर्ग धार्मिक स्वतंत्रता के जरिये सत्य का गला घोंटने पर उतारू है तथा शोषित वर्ग की धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है कि सभी धर्मों यानी, सभी ब्राण्ड की अफीमों को बराबर का बढ़ावा देना। कार्ल मार्क्स और भगतसिंह ने कहा कि धर्म जनता की अफीम है और समाज में अफीम के बढ़ावे पर रोक लगाई जाए। कोई व्यक्ति यदि किसी धर्म में अपना विश्वास रखना चाहता है और उस विश्वास के अनुसार अपनी पाठ-पूजा करना चाहता है और अपने विश्वास के भगवान को पाना चाहता है तो उस व्यक्ति को इसकी पूर्ण स्वतंत्रता एवं अधिकार हो। लेकिन यह उसका निजी मामला हो, उसे यह अधिकार हरगिज नहीं दिया जाना चाहिए कि वह अपने अंधविश्वास को टी.वी. चैनलों के जरिये प्रसारित करे और समाज में प्रदूषण फैलाए। यानी, अफीम की वर्षा करे। इसी प्रकार किसी धर्म-निरपेक्ष सरकार का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह हर धर्म द्वारा सामाजिक स्तर पर किसी भी भांति किये जाने वाले प्रचार-प्रसार पर रोक लगाये। धर्म निरपेक्ष सरकार का सही अर्थ यही हो सकता है कि वह किसी भी धर्म को अपनाकर न चले और किसी भी धर्म को बढ़ावा न दे। धर्मनिरपेक्षता का दावा करने वाली किसी भी पार्टी, दल अथवा संगठन की राजनीति अथवा कार्य पद्धति यदि किसी धर्म अथवा धार्मिक भावनाओं पर आधारित है तो अनिवार्य रूप से उस पार्टी, दल अथवा धार्मिक भावनाओं पर आधारित है तो अनिवार्य रूप से उस पार्टी, दल अथवा संगठन का धर्मनिरपेक्षता का दावा एक कोरा धोखा है। सच्ची धर्मनिरपेक्षता विभिन्न धार्मिक संप्रदायों को परस्पर जोड़ने का काम करती है न कि ताड़ने का और उनमें वैमनस्य पैदा करना।

किश्त-3

ब्रह्माण्ड यात्रा

डा. अवतार सिंह ढींढसा

साथियो, चन्द्रमा से शुक्र ग्रह की ओर उड़ान भरने से पूर्व जरा सामने देखो, चांद की धरती के पूर्वी हिस्से की ओर, कितना खूबसूरत दृश्य है। एक बड़े से गोल गड्ढे के मध्य में कितनी आकर्षक एक पहाड़ी चोटी है..... यह लगभग दो कि.मी. ऊँची है। इस गड्ढे का नाम है टाईको तथा इस पहाड़ी का नाम है टाईको शिखर...... यह नाम 'टाईको ब्राहे' वैज्ञानिक के नाम पर रखा हुआ है। इसी प्रकार अन्य शिखरों के नाम भी वैज्ञानिकों एवं अंतरिक्ष यात्रिकों के नाम पर रखे गए हैं जैसे कि एडीसन, टाईको ब्राहे, कैप्लर आदि। एक शिखर का नाम भारतीय वैज्ञानिक होमी जहांगीर भाभा के नाम पर भी रखा गया है। चन्द्रमा की सब से ऊँची चोटी 10786 मी. ऊँची है तथा हमारी पृथ्वी की सब से ऊँची चोटी ऐवरेस्ट 8848मी. ऊँची है। चलो एक बात तो शीशे की तरह से साफ हो गई कि चन्द्रमा कोई देवता नहीं है बल्कि यह भी हमारी पृथ्वी की तरह से ही पथरीला है। इस पर भी चला फिरा जा सकता है।

चलो दोस्तो चलते हैं उस अत्यन्त खूबसूरत चमकीले तारे की तरफ..... पृथ्वी से आप इसे कभी प्रातः काल के तारे एवं कभी सांयकाल के तारे के रूप में देखते हो...... सावधान, दूर से यह एक तारा ही दृष्टिगोचर होता है परन्तु यह भी हमारी पृथ्वी की तरह से सूर्य के गिर्द चक्कर लगाता एक ग्रह है। सूर्य से स्थिति के अनुसार यह द्वित्तीय ग्रह है। पृथ्वी पर रात्रि के समय आकाश में सर्वाधिक चमकने वाला तारा वास्तव में शुक्र ग्रह ने चमकने के हिसाब से, दोनों ने मानव का ध्यान प्रारम्भिक काल से अपनी ओर आकर्षित किया है क्योंकि इसकी चमक अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक होती है। अतः रोम निवासियों ने इसका नाम उनके साहित्य के अनुसार, सुन्दरता एवं प्रेम की देवी 'वीनस' के नाम पर ही रख दिया। भारतीय परम्परा एवं कुछ प्रचलित कहानियों के अनुसार इसका नाम शुक्र रखा गया।

साथियों, पिछली किश्त में आप द्वारा किया गया प्रश्न मुझे स्मरण है कि ग्रह क्या होते हैं? लो सुनों, ग्रह की वैज्ञानिक व्याख्या- ग्रह अंतरिक्ष का वह पिण्ड होता है जो सूर्य के गिर्द घूमता है, जिस के रास्ते में अन्य कोई अंतरिक्षीय वस्तु नहीं होनी चाहिए। यह किसी अन्य ग्रह का रास्ता न काटता हो। परन्तु इस के विपरीत ग्रहों के बारे में दन्त कथाएं इस प्रकार से शुरू हुई..... वास्तव में मानव ने सदियों से आकाश को रात्रि के समय में ध्यानपूर्वक देखना आरम्भ किया था। उसे पता चला कि सभी तारे एक दूसरे की तुलना में अपनी स्थिति नहीं बदलते। यदि वे चलते भी हैं तो पूरब से पश्चिम की ओर अपना पथ तय करते हैं। परन्तु वे आश्चर्य चकित तब रह जाते होंगे जब वे कुछ 'तारों को' जिनमें एक शुक्र भी सम्मिलित था, वास्तव में अपना पथ ' पश्चिम से पूरब' दिशा की ओर तय करते हुए देखा होगा। यूनानी सभ्यता ने इन में विशेष शक्तियां होने का अनुमान लगाया। बस तब से ही इनका अंग्रेजी में नाम 'प्लेनट' - अर्थात घुमक्कड़ तारे रखा गया। इन 'तारों' को ही हम ग्रह कहते हैं। एक अत्यन्त आश्चर्यजनक नियम भी दे दिया गया, कि इन ग्रहों में कोई 'अलौकिक शक्ति' है, जो कि अन्य तारों में नहीं है, इस लिए इन की यह शक्ति पृथ्वी पर आने वाली विपत्तियों के लिए जिम्मेवार है। देखो किस प्रकार अज्ञानता के कारण ग्रहों को खतरनाक मान लिया गया!!!

वास्तव में होता केवल इत्तफाक ही था जैसे कि शुक्र ग्रह (तारा) प्रातः काल के समय प्रकट होता तो संयोग से ये महीने यदि जनवरी, फरवरी, मार्च होते अर्थात् मौसम ठीक रहता था। परन्तु फिर कोई अन्य ग्रह (तारा) दृष्टिगोचर होता जैसे कि शनि, उस समय हो सकता है कि मौसम जून, जुलाई, अगस्त का होता होगा जब कि वर्षा,

अन्धड़ आदि तो मानसून के कारण आते थे, परन्तु मानव की अल्प बुद्धि ने इन विपत्तियों को ग्रहों के साथ जोड़ कर, एक अदभुत प्रकार का डर उत्पन्न कर दिया होगा। इसी भय के कारण मानव ने इन की शक्ति के दुष्प्रभाव से बचने के लिए इन की पूजा एवं दान-दक्षिणा इत्यादि शुरू की दी होगी। परन्तु हम अपनी यात्रा के दौरान शुक्र ग्रह के बारे में विचार-विमर्श शुरू कर रहे हैं, बस आप मेरे साथ-साथ अपने चिन्तन को गतिशील बनाए रखन. ... अथवा दूसरे शब्दों में मेरे साथ ब्रह्माण्ड यात्रा करते रहना.... चलो देखते हैं कि कुछ किलोग्राम सामग्री जोकि ज्योतिषी महाराज एक थाली में रखवा कर कहते हैं कि अब शुक्र का प्रभाव कम हो गया..... क्या यह सामग्री शुक्र ग्रह की गति अथवा प्रभाव को रोक सकती है अथवा नहीं? क्या शुक्र को कोई प्रभाव भी है हमारी पृथ्वी के ऊपर?

दोस्तो, शुक्र ग्रह हमारी पृथ्वी से आकार में बस थोड़ा सा ही छोटा है अर्थात् पृथ्वी के व्यास 6400 कि.मी. से केवल 326 कि.मी. कम। इसका गुरूत्वाकर्षण भी पृथ्वी के 9.8 मी./सैकिण्ड^2 से थोड़ा सा ही कम अर्थात् 8.27 मी./सैकिण्ड2 है। अर्थात् यदि एक व्यक्ति का मार पृथ्वी के ऊपर 100 कि. ग्रा. है तो इस का भार शुक्र पर 90 कि.ग्रा. होगा। यह चमकते हुए तारे में सवा तीन महीने प्रातः काल के तारे के रूप मे तथा सवा तीन महीने सायंकाल के तारे के रूप में दिखाई देता रहता है। क्योंकि सूर्य के गिर्द यह अपना एक चक्कर 225 दिनों में पूर्ण करता है अर्थात् इसका वर्ष पृथ्वी के वर्ष से छोटा है। इस ग्रह का वजन पृथ्वी से थोड़ा सा ही कम है अर्थात् अरबों मीट्रिक टन कम। अतः शुक्र का प्रभाव हमारी पृथ्वी पर नहीं है। यदि होता भी तो अरबों टन वज़न वाले ग्रह के प्रभाव को ज्येतिषियों द्वारा बताई गई कुछ किलोग्राम दान-पुण्य की सामग्री इस प्रभाव को कैसे रोक सकती है?

आईये जरा शुक्र के और समीप चलें। सूर्य के गिर्द इसकी गति 35.5 कि.मी. प्रति सैकिण्ड है। इतनी तीव्र गति से चक्कर लगा रहे ग्रह की गति को नियन्त्रित करने का दावा करते हैं ज्योतिषी। जो कि मानव के नियन्त्रण के वश में ही नहीं। चलो झूठ बोलने दो इन ज्योतिषियों को, आओ हम शुक्र ग्रह का बारीकीसे अध्ययन करें.... यह घूमता हुआ पृथ्वी से 3 मिलियन कि.मी. अर्थात् 3 करोड़ 80 लाख कि.मी. दूर ऊपर आ जाता है तथा हमारा अन्तरिक्ष यान यदि 12 कि.मी. प्रति सैकिण्ड की गति से चले तो हमें शुक्र ग्रह पर पहुँचने के लिए लगभग 1 वर्ष 2 महीने का समय लग जाएगा। ज्यों-ज्यों हम शुक्र ग्रह के निकट होते जाएंगे इसका आकार बड़ा और बड़ा दिखाई देगा, उधर पृथ्वी एवं चन्द्रमा का आकार कम होता दिखाई देगा। परन्तु हम तो अपने कल्पना रूपी यान पर सवार हैं इसलिए हम शुक्र ग्रह के निकट पहुँच रहे हैं। हमारी पृथ्वी पर 12 कि.मी. ऊंचाई तक बादल रहते हैं तथा शुक्र की अपनी पथरीली तह से 35 कि.मी. ऊंचाई तक बादल रहते हैं तथा यह बादल पानी के नहीं बल्कि सल्फर डाई आक्साईड गैस के बादल हैं। हमारी पृथ्वी पर तो सदैव बादल नहीं रहते इसलिए अन्तरिक्ष यान पर बैठे हुए पृथ्वी के समुदों आदि का दृश्य देखा जा सकता है। परन्तु शुक्र पर हमेशा बादल होने के कारण इस का नजारा केवल इन्फ्रारैड कैमरे के द्वारा ही देखा जा सकता है। अतः हम शुक्र ग्रह पर नहीं उतर सकेंगे बल्कि दूर से ही नज़ारा देखना पड़ेगा।

देखो, शुक्र ग्रह पर बहुत से ज्वालामुखी हैं। इसकी सतह कई स्थानों पर समुद्र की तरह से है परन्तु इसमें कोई पानी नहीं है। शुक्र ग्रह पर आक्सीजन भी नहीं है। हां, आपके एक प्रश्न का उत्तर शायद मैं भूल न जाऊँ - कि यहां पर तापमान कितना होता होगा। यहां पर तापमान लगभग 462° सैल्सियस तक पहुँच जाता है।

हमारे वैज्ञानिक अभी तक ऐसा परिधान नहीं बना सके जो शुक्र ग्रह के 462° सैल्सियस तापमान को सहन कर सके। इस तापमान पर तो सिक्का भी पिघल जाता है। परन्तु इस अत्याधिक

ऊँचे तापमान का कारण क्या है - यह कार्बन डाई आक्साईड गैस द्वारा बनाए गए ग्रीन हाऊस के प्रभाव के कारण से है। साथियो, आप के मन में यह प्रश्न अवश्य उत्पन्न हुआ होगा कि शुक्र ग्रह पर गैसीय दबाव कितना होगा? लो नोट करो.. ... यहां पर गैसों का दबाव पृथ्वी के गैसीय दबाव का 90 गुणा होता है अर्थात् जिस प्रकार एक बच्चा एक हवा से भरे हुए गुबारे को अपने हाथों में दबा कर पिचका देता है, उसी प्रकार शुक्र का गैसीय दबाव इतना अधिक है कि हमारे शरीर गुबारे की भांति पिचक ही जाएंगे। जीवित रहना असम्भव.... इसलिए इस ग्रह पर जीवन के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं है। फिर 'एलियन्ज' अर्थात अन्य ग्रहों के निवासियों वाली थ्योरी पता नहीं किस दिमाग का आविष्कार है? सरासर झूठ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

दोस्तो, आप तो भलीभांति जानते ही हो कि पानी तो 100° सैल्सियस पर भाप बन जाता है। यही कारण है कि शुक्र पर पानी नहीं है तथा इस पर कोई भी जीवन नहीं है। बस उजाड़ जमीन दूर-दूर तक नज़र आती है। ऊँची पहाड़ी चोटियां, गहरी खाईयां एवं गड्ढे ही गड्ढे नज़र आते हैं। शुक्र ग्रह आग उगलते ज्वालामुखियोंसे परिपूर्ण है। इस अधिक तापमान का कारण है, कार्बनडाई आक्साईड गैस के साथ-साथ दिन की लम्बाई। हमारी पृथ्वी का दिन 24 घण्टे का होता है परन्तु शुक्र का दिन हमारी पृथ्वी के 242.7 दिन के बराबर होता है! है ना शुक्र ग्रह का कमाल कि यहां पर वर्ष छोटा है परन्तु इसका दिन बहुत बड़ा!! मतलब यह है दोस्तों कि शुक्र ग्रह अपने अक्ष पर अत्यन्त धीमी गति से धूम रहा है। थोड़ा रूकना. .... वो सामने दिखाई देने वाली पहाड़ी चोटियों की ओर देखे जरा...... इन पहाड़ियों के नाम भारतीय हैं। ये हैं- लक्ष्मी (धन की देवी), सरस्वती (ज्ञान की देवी), काली (मृत्यु की देवी), गौरी (पर्वतों की देवी), एनाला (पैदायशी शक्ति देवी), ऊषा (प्रातः काल की देवी)। आप आश्चर्य चकित हो रहे होंगे कि ये नाम देवियों के नामों पर ही क्यों रखे गए हैं? साथियों, वीनस नाम भी रोम की प्रेम एवं सुन्दरता की देवी का ही है। एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौते के अनुसार सभी देशों से कुछ मादा (Female) नामों की सूची देने के लिए कहा गया था, परिणामस्वरूप भारत ने ये नाम भेजे थे।

साथियो, ध्यान देना जरा....... हमारी पृथ्वी पर सूर्य पूरब से निकलता है परन्तु शुक्र ग्रह पर सूर्य पश्चिम से निकलता है तथा पूरब से छिपता है। इसका कारण यह है कि यह अपनी धुरी के गिर्द 'पूरब से पश्चिम' दिशा की ओर घूमता है तथा सूर्य पश्चिम से पूर्व की ओर जाता हुआ दिखाई देता है। यह इसी प्रकार घटित होता है जिस प्रकार हमारी बस यदि पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर जाती है तो सड़क के किनारों पर खड़े वृक्ष पश्चिम से पूर्व की ओर अर्थात् विपरीत दिशा में दौड़ते नज़र आएंगे। शुक्र ग्रह की इस गति को उल्टी गति (Retrograde Motion) भी कहा जाता है। परन्तु शुक्र में पृथ्वी के मुकाबले कोई विशेष शक्ति नहीं है (जैसा कि ज्योतिष कहता है कि शुक्र में विशेष शक्ति है) तथा न ही यह पृथ्वी के निवासियों को प्रभावित करता है प्रभाव की बात चली है तो हम यह भी परख ही लें कि प्रभाव कितना पड़ता है? दोस्तो शुक्र सूर्य के गिर्द चक्कर लगाता हुआ, सूर्य की ओट में भी चला जाता है अर्थात् अब सूर्य, शुक्र ग्रह एवं पृथ्वी के मध्य मे है.... अब तो पृथ्वी पर सूर्य का प्रभाव अधिक होता है तथा शुक्र ग्रह तो पृथ्वी से 25 करोड़ कि.मी. की दूरी पर चला जाता है जब कि सूर्य 15 करोड़ कि.मी. दूर होता है। फिर ज्योतिष तो झूठ बोलता है कि शुक्र ग्रह का प्रभाव पूरा वर्ष पृथ्वी के निवासियों पर पड़ता रहता है। वास्तव में कोई प्रभाव है ही नहीं।

दोस्तो, आप को यह प्रश्न अवश्य ही परेशान कर रहा होगा कि यदि शुक्र ग्रह का हमें

कोई नुकसान नहीं है तो क्या कोई फायदा है? हां, दोस्तो शुक्र ग्रह जब सूर्य के गोले के आगे से निकलता है तो इसे 'शुक्र पारगमन' कहा जाता है। यह सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य में होता है..... इसकी सहायता से ही वैज्ञानिकों ने सूर्य एवं पृथ्वी की दूरी का सही पता लगाया है। इसलिए शुक्र ग्रह तो हमारे लिए अत्यन्त लाभदायक ग्रह सिद्ध हुआ है। यह सभी कुछ करने के लिए तो फ्रांस के वैज्ञानिक 'ली जैंटील' को अपना सब कुछ गवाँ देना पड़ा था। मार्च 1761 में यह तारा वैज्ञानिक जून 1761 में होने वाले शुक्र पारगमन से संबन्धित खोज़ करने हेतू हमारे देश की ओर समुद्री यात्रा करता हुआ पांडिचरी के लिए चला। परन्तु यहां पहुँच कर उसे ज्ञात हुआ कि पांडिचरी पर तो बर्तानवी अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया जहां पर उस से पूर्व फ्रांस का अधिकार था। वह वापिस लौटने लगा कि 6 जून 1761 को शुक्र-पारगमन लग गया। उसका जहाज़ समुद्र में था इस लिए वह इस पारगमन का निरीक्षण न कर सका। उसने सोचा कि आगामी शुक्र-पारगमन 8 वर्षों के पश्चात् जून 1769 को फिर से लगेगा, दोबारा आना मुश्किल है। अतः उसने फ्रांस वापिस लौटने का इरादा त्याग दिया। परन्तु 8 वर्षों की लम्बी प्रतीक्षा के पश्चात् शुक्र-पारगमन वाले दिन जब वह अर्ध-रात्रि में उठा तो काले बादल छा गए... . सारा दिन जोरदार वर्षा होती रही.... सांयकाल को जब वर्षा रूकी तो उस समय तक पारगमन हट चुका था। उसके हाथ कुछ भी न लगा। अत्यन्त निराशा के साथ ग्यारह वर्षों के उपरान्त सन् 1772 को जब वह पैरिस (फ्रांस) वापिस पहुँचा तो उसके आश्चर्य की कोई हद न रहीं। क्योंकि 11 वर्षों तक कोई अता-पता न होने के कारण उसको कानूनी तौर पर मृतक घोषित कर दिया गया था!! अतः उसकी पत्नी ने दूसरी शादी कर ली तथा उसके रिश्तेदारों ने उसकी सारी जायदाद कानूनी तौर पर आपस में बांट ली। कई वर्षों की मुक्क्दमें बाजी भी उसे उसका अधिकार न दिला सकी यह था जुनून कुछ वैज्ञानिक खोज करने का।

दोस्तो शुक्र-पारगमन 121.5 वर्षों के पश्चात् फिर 8 वर्षों के पश्चात्... फिर 105.5 वर्षों के पश्चात् तथा फिर 8 वर्षों के पश्चात् लगता है। जैसे सब से पहला पारगमन दिसंबर 1631 एवं दिसंबर 1639 को नोट किया गया। फिर जून 1761 तथा जून 1769, दिसंबर 1874 एवं दिसंबर 1882 तथा फिर इस सदी का शुक्र पारगमन 8 जून 2004 एवं 8 वर्षों के पश्चात् 6 जून 2012 को भी लगा था। मेरा ख्याल है कि अब आप में से कोई यह अवश्य पूछेगा कि हमें अगले शुक्र पारगमन के दर्शन अब कब होंगे? साथियो, अगला शुक्र-पारगमन अब लगेगा 2117 एवं 2125 में... आज की तारीख में इस पृथ्वी पर निवास करने वाले हम सभी में से कोई भी शायद तब तक जीवित नहीं रहेगा। शायद आप को यह प्रश्न भी बेकरार कर रहा हो कि शुक्र को हम पृथ्वी से अब कब देखेंगे? लो नोट करो... जून 2013 से आप इस ग्रह को 'सांयकाल के तारे' के तौर पर 3-4 महीनों तक देख सकते हैं। यह पहले रोज़ाना धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठता नज़र आएगा तथा फिर रोज़ाना नीचे की ओर जाता हुआ दिखाई देगा। दोस्तो, थोड़ा सा पीछे मुड़ कर भी देख लो..... हमारी पृथ्वी एक छोटा सा तारा ही नज़र आएगी तथा चन्द्रमा को देखने के लिए दूरबीन का प्रयोग करना पड़ेगा। अर्थात् पृथ्वी एवं चन्द्रमा आकाश में दो ग्रहों की भांति चलते हुए दिखाई देंगे तथा ज्योतिषी महाराज फिर किस प्रकार से अपनी पत्रियां नई छपवाएंगे? हम शुक्र के पास से गुजर कर अब आग पहुँचेगे बुध ग्रह के पास..... बस मेरा साथ निभाते रहना......

हिन्दी अनुवाद
बलवन्त सिंह लैक्चरार

कौन-सा मार्ग ?

इंगरसोल

दो रास्ते हैं-प्राकृतिक और परा-प्रकृतिक।

एक मार्ग तो है जिस संसार में हम जीते हैं, उस संसार के लिए जीने का, अध्ययन और खोज द्वारा अपने दिमाग को विकसित करने का और अविष्कार द्वारा प्राकृतिक शक्तियों से लाभ उठाने का जिससे हमें अच्छे घर मिल सकें, वस्त्र मिल सकें और भोजन मिल सके, जिससे हम कला और विज्ञान द्वारा दिमाग की भूख मिटा सकें।

दूसरा मार्ग है उस संसार के लिए जने का जिसकी हम आशा लगाए रहते हैं, जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते, उसके लिए वर्तमान-जीवन को बलिदान कर देने का, प्रार्थना और धार्मिक क्रिया-कलापों द्वारा आकाश में बादलों से ऊपर रहने वाले किसी से सहायता, किसी से रक्षा प्राप्त करने का।

एक मार्ग है- विचार का, खोज करने का, पीछे चलने का, अपनी इन्द्रियों को अप्रामाणित मानने का और ऐसे लोगों के सामने सिर झुका देने का जो निर्लजतापूर्वक यह कह सकते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं।

एक मार्ग है- अपने मानव-बंधुओं, अपनी स्त्री और अपने बच्चों के लिए जीने का, जिन्हें हम प्यार करते हैं, उन्हें सुखी बनाने का और जीवन के दुखों से उनका बचाव करने का।

एक मार्ग है- तर्क को सिंहासनारूढ़ करने का और वास्तविक घटनाओं पर भरोसा करने का।

दूसरा मार्ग है- अंध-श्रद्धा के सिर पर ताज रखने का और विश्वास पर जीने का।

एक मार्ग है- भीतरी प्रकाश के अनुसार चलने का, उस प्रदीप से जो बुद्धि को प्रकाशित करता है, मार्ग प्रशस्त करने का, साथ-साथ स्पर्श, चक्षु और श्रौत आदि इन्द्रियों से उस मार्ग को कसौटी पर कसते रहने का।

दूसरा मार्ग है- जमीन पर रेंगकर चलने का, अपने साथ विश्वासघात करने का और जिस स्वतंत्रता का उपयोग करने का तुममें साहस नहीं है, उससे दूसरों को वंचित करे का।

आप यह कल्पना न करें कि जो लोग आज तक दूसरे मार्ग पर चलते रहे हैं, जिन्होंने गलत दिशा ग्रहण की है, उनसे मैं घृणा करता हूं।

हमारे पूर्वजों ने, जो कुछ वे कर सकते थे, उसमें अपनी ओर से कुछ कसर नहीं रखी। वे प्रकृति से परे की किसी शक्ति में विश्वास करते थे। वे मानते थे कि बलिदानों और प्रार्थनाओं से, व्रत रखने और विलाप करने से, वह शक्ति धूप, वर्षो और अच्छी पैदावार देगी- इस संसार में दीर्घ आयु और दूसरे में अनन्त आनन्द देगी। उनके लिए परमात्मा एक निरंकुश तानाशाह था जो जल्दी गुस्सा होकर भयानक दंड देता था। वह ईर्ष्यालु, अपने शत्रुओं से घृणा करने वाला और अपने स्नेह-भाजकों के प्रति उदार था। वे एक शैतान में भी विश्वास करते थे, जो शक्ति में परमात्मा से कुछ ही कम था, किन्तु ठग विद्या में शायद उससे थोड़ा अधिक। इन दोनों के बीच में आदमी की आत्मा का वही हाल था, जो बिल्ली के दोनों पंजों के बीच बेचारे चूहे का।

इन दोनों भगवानों से आदमी को भय लगता था। हमारे पूर्वज न परमात्मा से प्यार ही प्यार करते थे और न शैतान से घृणा ही घृणा, हां, वे डरते दोनों से थे। असल में वे परलोक में तो परमात्मा के कृपा-भाजन बने रहना चाहते थे और इस लोक में शैतान के। उनकी मान्यता थी कि प्रकृति उन्हीं दोनों की दास है। उनकी समझ

में बाढ़, तूफान, रोग, भूकंप, आंधी दण्ड-स्वरूप भेजे जाते थे और सभी अच्छी चीजें पुरस्कार स्वरूप।

सभी कुछ परा-प्राकृतिक शक्तियों के अधिकार और आदेश के अधीन था। सूर्य-ग्रहण और चंद्र-ग्रहण लोगों के पापों के परिणाम समझे जाते थे और हर असाधारण घटना एक चमत्कार थी। पुराने समय में सारी ईसाइयत एक पागलखाना थी, और उन्मत्त पादरी-पुरोहित उसके रखवाले। विज्ञान का तो नाम न था। लोग न खोज करते थे, न विचार। वे केवल (भय से) कांपते थे और विश्वास करते थे। अज्ञान और मिथ्या-विश्वास का ही ईसाई संसार पर शासन था।

आखिरकार, कुछ लोग ऐसे हुए जिन्होंने आंख खोलकर देखना आरंभ किया, सोचना-विचारना आरंभ किया।

यह पता लगा कि चंद्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण निश्चित समय का अंतर देकर होते है उनके होने का पहले से पता लग सकता है। इससे यह स्पश्ट हो गया कि आदमियों के कर्त्तव्य और सूर्य-ग्रहण तथा चंद्र-ग्रहण का परस्पर कोई संबंध नहीं। कुछ लोग यह संदेह करने लगे कि भूकम्प और तूफान प्राकृतिक कारणों से होते हैं और उनका मुनष्यों के कर्मो से किसी तरह दूर का भी संबंध नहीं।

कुछ लोगों ने देवताओं के अस्तित्व में संदेह करना आरंभ किया अथवा आदमियों के कारोबार से उनके किसी भी प्रकार के संबंध में। ज्योतिष के बारे में, तारों की महान संख्या के बारे में, ग्रहमण्डलों की निश्चित और लगातार गति के बारे में और यह कि उनमें से अनेक पृथ्वी से बहुत बड़े हैं। पृथ्वी के निर्माण के बारे में। अग्नि, जल और वायु ने असंख्य शताब्दियों में उनके निर्माण में जो हिस्सा लिया है, उसके बारे में तथा जीवनमात्र के परस्पर संबंध होने के बारे में जानकारी प्राप्त करके, सूर्य के नक्षत्र-मण्डल में पृथ्वी का स्थान निश्चित करके; तजुर्बो और खोज के द्वारा रसायन-शास्त्रों के कुछ रहस्यों का उदघाटन करके; छापा खाने के अविष्कार द्वारा बातों, सिद्धांतों और विचारों को सुरखित रखकर तथा उनका प्रचार करके वे मिथ्या-विश्वास की कुछ कड़ियों को तोड़ने; प्रकृति से ऊपर किसी शक्ति के अधिकार को कुछ ढीला करने तथा ज्ञान के सूर्य की ओर अपना मुंह करने में सफल हुए। शनैः-शनै खोजियों और विचारकों की संख्या बढ़ी। शनैः-शनै वास्तविक बातों का संग्रह हुआ, विज्ञान प्रकट हुए, पुराने विश्वास थोड़े बेहूदा प्रतीत होने लगे और प्रकृति से ऊपर की शक्ति कुछ पीछे हटी तथा उसने मुनष्यों के कारोबार में दखल देना बंद किया।

स्कूलों की स्थापना हुई, बच्चों को शिक्षा दी गई, पुस्तकें छापी गई और विचारकों की वृद्धि हुई। दिन- प्रतिदिन प्रकृति से परे की किसी शक्ति में विश्वास घटता गया और दिन- प्रतिदिन आदमी का इस बात में विश्वास बढ़ता गया कि वह स्वयं अपना रक्षक और भाग्य-विधाता है। असभ्यता और मिथ्या-विश्वास के अंधकार में से प्रकृति का अरूणोदय हुआ। दिमाग को स्वतंत्रता की हवा लगी और आदमी अपनी शक्ति के स्वप्न देखने लगा। चारों और खोज, आविष्कार और साहसपूर्ण विचार दिखाई देने लगे। ईसाइयत ने विज्ञान के मित्रों को अपना शत्रु समझना आरंभ किया। सिद्धांतियों ने जंजीरों और चिंताओं का सहारा लिया- लोगों के अंग-भंग करने और उत्पीड़न के लिए।

विचार को नास्तिक और अनीश्वरवादी कहकर उसकी निंदा की गई। उन्हें शैतान के बच्चे और ईसा को बदनाम करने वाले कहा गया। मिथ्या-विश्वासियों के तमाम अज्ञान, ईर्ष्या और जलन को उत्तेजित किया गया। सभी खोज और विचार का नाश करने के लिए एकत्रित हो गया। शताब्दियों तक वह संघर्ष जारी रहा।

परा-प्राकृतिक के विश्वासियों ने कोई ऐसा अत्याचार न था जो न किया हो, कोई ऐसा पाप न था, जो न किया हो। किन्तु, इस सबके बावजूद प्राकृतिक शिष्यों की संख्या बढ़ने लगी और ईसाइयत का बल घटने लगा। अब सारी समझदार दुनिया प्राकृतिक के पक्ष में है। अभी भी संघर्ष जारी ही है, परा-प्राकृतिक निरंतर हार रहा है और प्राकृति-पक्ष लगातार प्रबल होता जा रहा है। कई वर्षो में विज्ञान मिथ्या-विश्वास को सर्वत्र और संपूर्ण रूप से परास्त कर देगा।

इस प्रकार कई शताब्दियों से जीवन के संबंध में दो प्रकार के दर्शन चले आ रहे हैं। एक तृष्णा के क्षय का मार्ग-इच्छाओं को कम करने का मार्ग, अपने से ऊंची किसी शक्ति पर संपूर्ण भाव से निर्भर रहने का मार्ग, दूसरा कामनाओं की उचित पूर्ति का मार्ग, इच्छाओं की वृद्धि का मार्ग और प्रयत्न, चतुरा, अविष्कार तथा आदमी की अपनी शक्ति पर भरोसा रखने का मार्ग। डियोजेनेस, एपिकटेटस, एक सीमा तक साक्रेटीस, बुद्ध और ईसा, सभी ने पहले जीवन-दर्शन की शिक्षा दी। सभी धन और आरामपसंदी से घृणा करते थे परंतु कला और संगीत के शत्रु थे। वे दरिद्रता और चीथड़ों के दार्शनिक थे। वे गरीबों की झोपड़ी के दार्शनिक थे। वे अज्ञान और श्रद्धा के दार्शनिक थे। उन्होंने इस लोक के दुखों और परलोक के सुखों का प्रचार किया। वे संपन्न, उद्योगी तथा जीवन का आनंद भोगने वालों पर नाक-भौं सिकोड़ते थे और भिखमंगों के लिए स्वर्ग में स्थान सुरक्षित रखते थे।

अब इस जीवन-दर्शन का प्रभाव घट रहा है। अब तो अधिकांश लोग यहां इसी जीवन में सुखी होना चाहते हैं। अधिकांश लोग भोजन चाहते हैं, निवास स्थान चाहते हैं, अच्छे वस्त्र चाहते हैं। वे दिमाग की शक्तियों का विकास करने में विश्वास रखते हैं और दिलचस्पी रखते हैं प्रकृति की शक्तियों पर अपना अधिकार कर उन्हें अपना दास और नौकर बनाने में।

अब संसार के समझदार आदमियों ने आत्मपीड़कों की शिक्षा को, आत्मपीड़कों के दर्शन को तिलांजलि दे दी है। अब वे भूखें मरने और काय-क्लेश को सदाचार नहीं मानते। उनका विश्वास है कि सुखपूर्वक रहना ही एकमात्र कुशल है और सुखी रहने का समय अभी है, यहीं है, इसी संसार में है। वे अब प्रकृति से किसी परे की शक्ति द्वारा दिए जाने वाले दण्डों और पुरस्कारों में विश्वास नहीं करते। वे कृत्यों और उनके परिणामों में विश्वास करते हैं - बुरे कृत्यों का परिणाम बुरा और भले कृत्यों का परिणाम भला समझते है।

उनका विश्वास है कि आदमी को खोज करके, विचार करके यह पता लगा लेना चाहिए कि आदमी किस प्रकार रहने से सुखी रहता है और उसकों उसी प्रकार रहना चाहिए। वे नहीं मानते कि भूकंपों, आधियों, ज्वालामुखी पर्वतों और चंद्र-ग्रहण तथा सूर्य-ग्रहण को आदमीयों के कृत्यों से कुछ लेना देना है। वे अब प्रकृति से परे की किसी शक्ति में विश्वास नहीं करते। वे अपने आपको अब न किसी दैवी-राजा का गुलाम समझते हैं, न नौकर ओर न कृपाभाजन। वे अनुभव करते हैं कि बहुत सी बुराइयां ज्ञान द्वारा दूर की जा सकती हैं और इसलिए वे मस्तिष्क के विकास में विश्वास करते हैं। विद्यालय उनका गिरजा और यूनिवर्सिटी उनका महान पूजा-गृह।

इसी प्रकार संसार में कुछ समय से शासन के भी दो सिद्धांत चले आ रहे हैं- एक धार्मिक सिद्धांत और दूसरा लौकिक सिद्धांत।

राजा को सीधे परमात्मा से अधिकार मिलता था। लोगों का काम था राजाज्ञा का पालन करना। पण्डे-पुरोहितों के जो मत थे वे भी उन्हें परमात्मा से प्राप्त थे। लोगों का काम था विश्वास करना।

धार्मिक सरकारें अब कुछ-कुछ अप्रिय

होती जा रही हैं। इंग्लैंड में पार्लियमेंट ने परमात्मा का स्थान ले लिया है और संयुक्त राज्य का शासन शासितों से ही शक्ति प्राप्त करता है। शायद जर्मनी का विलियम महाराज ही एक ऐसा व्यक्ति है, जो समझते हैं कि परमात्मा ने उसे सिंहासन पर बिठाया है और वही उसे, जर्मनी के लोगों के संतोष-असंतोष की परवाह न करके सदैव सिंहासन पर बिठाए रखेगा। इटली ने कैथोलिक परमात्मा को राजनीति से विदा कर दिया। फ्रांस फ्रांसीसियों का है और उन्हीं के द्वारा शासित होता है। रूस में भी लाखों आदमी जार और उसके समान दैवी-शासनाधिकार की बात को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

धार्मिक सरकारें लुप्त हो रही हैं और लौकिक सरकारें शनैः-शनैः उनका स्थान ले रही हैं। आदमी पहले की अपेक्षा बड़ा बनता जा रहा है और देवता-गण अस्पष्ट। इन दैवी सरकारों को आधार है अधिकांश लोगों का भय और अज्ञान तथा थोड़े से लोगों की ठग-विद्या, निर्लज्जता और असत्याचरण। लौकिक सरकार न केवल कुछ किन्तु बहुत लागों की बुद्धि, ईमानदारी और साहस में से पैदा होती है।

हमने यह देख लिया कि आदमी बिना किसी पण्डे, पुरोहित, पोथी अथवा परमात्मा की सहायता के अपने आप पर शासन कर सकता है। हमने देख लिया है कि मजहब कोई अपने में स्वतः प्रमाण वस्तु नहीं है और यह कोई अच्छी बात नहीं है कि आदमी किसी बात में बिना प्रमाण के विश्वास करे। हम मानते हैं कि जो स्वयं-सिद्ध है, वह दिमाग की बनावट में एक ध्रुव-तारे की तरह है। हम जानते हैं कि स्वयं-सिद्ध से कोई इंकार नहीं करता। हम जानते हैं कि पर्याप्त प्रमाण रहने पर विश्वास करने में कोई खास अच्छाई नहीं और पर्याप्त-प्रमाण न रहने पर भी यह कहने में कि हम विश्वास करते हैं, कुछ भी अच्छाई नहीं।

सभी ईसाई जानते हैं कि उनके अपने परमात्मा के अतिरिक्त शेष सभी के परमात्मा मनुष्यों द्वारा उत्पन्न किए गए हैं। वे झूठे हैं। मूर्ख थे, मूर्ख हैं। भयानक थे, भयानक हैं। सभी गैर-ईसाई मंदिरों और उनकी वेदिकाओं की रचना व्यर्थ है। सभी बलिदान निष्फल थे। सभी पुरोहित ढोंगी थे। उनकी प्रार्थनाएं कभी सुनी नहीं गई। गरीब आदमियों को सदैव धोखा दिया गया है, लूटा गया है और गुलाम बनाया गया है। लेकिन प्रश्न है कि क्या हमारा परमात्मा दूसरों के परमात्माओं से श्रेष्ठ है?

हम इस समय अपने से यह प्रश्न पूछ सकते हैं, क्योंकि इस समय हम संपन्न अवस्था में हैं और आदमी सम्पन्न अवस्था में साहसी हो जाता है। यदि इस समय कुद भूकंप होते अथवा महामारियां होती, तो कदाचित हम घुटनों के बल बैठ, आंखें बंद कर परमात्मा से इस प्रकार का विचार मन में आने देने के लिए भी क्षमा मांगते। हम जानते हैं कि जहां अंध-श्रद्धा है, वही अकाल भी पड़ते हैं, जहां मिथ्या-विश्वास हैं, वही विपत्ति भी आती हैं। लेकिन इन समय न हम किसी महामारी से पीड़ित हैं और न अकाल से तथा पृथ्वी का तल सामान्यतया शांत है, इसलिए परमात्मा के वास्तविक चरित्र की परीक्षा कर सकते हैं।

यह स्वीकार करना चाहिए कि शक्ति का उपयोग चरित्र की एक बहुत की बढ़िया कसौटी है।

क्या कोई भला परमात्मा पक्षपात और अज्ञान की ढाल-तलवार को अपील करेगा? उस अंधविश्वास को अपील करेगा, जो पण्डे-पुरोहितों के नेतृत्व में रहने वाली मूर्खता की एक कड़ी है? भय को अपील करेगा, जो ठग और ढोंगी का मूल धन है? क्या एक भला परमात्मा अपने बच्चों को डराएगा अथवा ज्ञान देगा? क्या एक भला परमात्मा तर्क को अपील करेगा अथवा अज्ञान को? न्याय को अथवा स्वार्थ को? स्वतंत्रता

को अथवा दण्ड को?

हमारे माता-पिता को उद्यान में परमात्मा ने प्रेम की पवित्रता के बारे में कुछ नहीं कहा, बच्चों के बारे में कुछ नहीं, न्याय और आजादी के बारे में कुछ नहीं। जब उनसे उसकी आज्ञा का उल्लंघन हो गया तो वह एक जंगली-पशु की तरह भयानक हो गया। उसने पृथ्वी को अभिशाप दिया और हव्वा को कहा- ''मैं दुख को बहुत बढ़ा दूंगा। दुख में तुम्हें बच्चों को जन्म देना होगा। तुम्हारा पति तुम पर शासन करेगा।''

हमारे परमात्मा ने प्रेम को पीड़ा का दास बनाया, पत्नियों को गुलाम और संसार की गृहस्थी को पशुत्व में बदल दिया। हमारे परमात्मा ने आठ आदमियों के अतिरिक्त शेष सारे संसार को पानी में डुबा दिया; पृथ्वी का लाशों से एके हुए एक अनंत समुद्र में परिवर्तन कर दिया।

जब वह जानता था कि उसे उनका नाश कर देना होगा, तो उसने पुरूषों, स्त्रियों और बच्चों को जन्म ही क्यों दिया? उसने उनके सुधार का प्रयत्न क्यों नहीं किया? जब वह जानता था कि उनका सुधार नहीं हो सकता, तो उसने लोगों की रचना ही क्यों की?

क्या यह संभव है कि हमारा परमात्मा समझदार और भला दोनों था? उस महान बाढ़ के बाद हमारे परमात्मा ने यहूहियों को चुना और अपने शेष सारे बच्चों को छोड़ दिया। उसने हिन्दुओं की ओर ध्यान नहीं दिया, मिस्र वालों की उपेक्षा की। वह पारसियों की ओर से लापरवाह हो गया, असीरिया के लोगों को भूल गया और यूनान के लोगों को याद न रख सका। इतना सब होने पर भी वह सबका पिता था। शताब्दियों तक परमात्मा केवल एक जाति का खुदा था। वह बहुतों से घृणा करने वाला और थोड़े से लोगों की रक्षा करने वाला था। हमारा परमात्मा अज्ञानी था। वह ज्योतिष अथवा भूगर्भ-शास्त्र के विषय में कुछ न जानता था। वह यह भी नहीं जानता था कि पृथ्वी की शकल कैसी है। वह समझता था कि ये तारागण आकाश में लगे हुए धब्बे हैं।

वह बीमारियों के बारे में अज्ञानी था। वह समझता था कि बहते हुए पानी पर मारे गए पक्षी का रक्त अच्छी दवाई है। उसमें बदला लेने की भावना भी। वह निर्दयी था। वह अपने कुछ बच्चों को दूसरों की हत्या करने में सहायता देता था। उसने उन्हें आज्ञा दी की वे पुरूषों, स्त्रियों और बच्चों को मार डाले और कुमारियों को जीवित रख उन्हें अपने सैनिकों में बांट दे।

हमारे परमात्मा ने गुलामी की स्थापना की, आदमियों को आज्ञा दी कि वे अपने मानव-बंधुओं को खरीदें, औरतों तथा बच्चों का क्रय-विक्रय करें। हमारे परमात्मा ने बहु-पत्नी-विवाह की अनुज्ञा दी, उसने स्त्रियों को पुरूषों की संपत्ति बनाया। हमारे परमात्मा ने राजाओं के लिए लोगों की हत्या की। कोई भी समझदार आदमी, जिसका दिमाग मिथ्या-विश्वास से विषाक्त नहीं हो गया है, जिसकी भय के कारण जड़ नहीं हो गई है, यदि पुराने प्रवचन को पढ़ेगा तो उसे इस परिणाम पर पहुंचना ही होगा कि हमारा परमात्मा एक जंगली पशु था।

यदि बिना परमात्मा के हमारा काम न चले तो उसे दयावान होना चाहिए। हमें स्मरण रखना चाहिए कि करूणा की वीणा के तार टूटे नहीं। हमें याद रखना चाहिए कि जिस समय न्याय की तलवार दुर्बल की सहायता के लिए उठती है, उसी समय उसमें फूल खिलते हैं और उन फूलों की सुगंध ही वह धूप है, वह पूजा है और वह बलि है, जिसे करूणा की देवी स्वीकार करती है।

इस प्रकार, रोग के कारण और उसकी चिकित्सा के बारे में भी दो मत रहे हैं। एक मजहबी मत है और दूसरा वैज्ञानिक।

मजहबी मत के अनुसार रोगों का कारण वे दुष्ट-आत्माएं थी, वे शैतान थे जो आदमियों के शरीर में प्रवेश पा जाते थे और पैगंबर, पहुंचे

हुए आदमी तथा पुरोहित इन दुष्ट आत्माओं को निकाल सकते थे।

प्राकृतिक कारणों और उनके प्रभाव के बारे में कुद जानकारी न थी। प्रत्येक बात चमत्कारपूर्ण तथा रहस्यपूर्ण थी। पुरोहित ठग थे और लोग अंधविश्वासी।

धीरे-धीरे रोग के कारण और उसकी चिकित्सा के संबंध में एक दूसरे सिद्धांत ने दिमाग में स्थान ग्रहण कर लिया। कुछ लोगों ने दुष्ट-आत्माओं वाले सिद्धांत को त्याग दिया। उन्होंने अपने मन में इस सिद्धांत को जगह दी कि रोग प्राकृतिक कारणों से पैदा होते हैं और उनमें से बहुत से रोग प्राकृतिक कारणों से अच्छे किए जा सकते हैं।

आरंभ में चिकित्सक बहुत अज्ञानी था, किन्तु तब भी वह पुरोहित की अपेक्षा अधिक जानकार था। धीरे-धीरे उसने पुरोहित को रोगी के बिस्तरे से दूर हटा दिया। अंत में कुछ लोगों में इतनी अक्ल तो आ गई कि वे अपने शरीर के बारे में डॉक्टरों पर भरोसा कर सकें; किन्तु वे इतने मूर्ख बने ही रहे कि वे अपनी आत्मा पुरोहितों के ही हाथ में सुरक्षित समझें। सभी लोगों में रोगों का मजहबी सिद्धांत एक ओर फेंक दिया गया है और अब चिकित्सा शास्त्र में चमत्कारपूर्ण और परा-प्राकृतिक के लिए कोई स्थान नहीं है। रोमन-कैथोलिक देशों में अब भी मूर्तियों, प्रार्थनाओं, पवित्र जल तथा साधुओं की हड्डियों द्वारा लोगों की चिकित्सा होती है; किन्तु जब पादरी पुरोहित स्वयं बीमार पड़ते हैं तो वे डॉक्टर को बुला भेजते हैं। अब तो परमात्मा का एजेण्ट पोप तक अपना शरीर पवित्र शरीर डॉक्टर के ही हाथ में सुरक्षित समझता है।

रोगों के वैज्ञानिक सिद्धांत ने मजहबी-सिद्धांत पर एक बड़ी हद तक विजय पा ली है। अब कोई समझदार आदमी यह विश्वास नही करता कि दुष्ट-आत्माएं अदमियों के शरीर में प्रवेश पा जाती हैं। अब कोई समझदार आदमी यह विश्वास नहीं करता कि दुष्ट आत्माएं आदमियों के कामों में दखल देने का प्रयत्न करती हैं। अब कोई समझदार आदमी यह विश्वास नहीं करता कि दुष्ट-आत्माएं होती भी हैं।

यह सब होने पर भी, इस समय न्यूयार्क शहर में कैथोलिक पादरी कुंवारी मेरी की मां मानी जाने वाली संतनी ऐनी की हड्डियों का प्रदर्शन कर रहे हैं। इनमें से कुद पादरी-पुरोहित अंधे श्रद्धालु तथा निर्बल-बुद्धि हो सकते हैं, परन्तु शेष सब शुद्ध ठग हैं। यदि उनमें कुद भी समझदारी हो तो उन्हें मालूम होना चाहिए कि वे यह बात किसी भी तरह सिद्ध नहीं कर सकते कि उस हड्डी के टुकड़े का सन्तनी ऐनी से कभी किसी तरह का संबंध रहा है और यदि उनमें कुछ भी वास्तविक समझ है तो उन्हें यह बात मालूम होनी चाहिए कि सन्तनी ऐनी की हड्डियां भी साररूप में दूसरे लोगों की हड्डियों के ही समान हैं, उसी तरह की सार-सामग्री से बनी हुई। इसलिए सभी मानव-हड्डियों में यदि कोई चमत्कार तथा रोग-नाशक गुण हो सकते हैं तो वे एक ही जैसे होने चाहिए। इतना सब ठीक होने पर भी ये पादरी-पुरोहित अपने अंधविश्वासी वंचितों से इन पवित्र हड्डियों को देखने तथा जिस पेटी में ये रखी हैं, उस पेटी का चुम्बन कर लेने के अधिकार के लिए लाखों डालर प्राप्त करते हैं।

यह है इन मजहबी लोगों की ईमानदारी। यदि ये सज्जन स्वयं बीमार पड़ जाएं, तो ये उन हड्डियों को (धातुओं को) स्पर्श नहीं करेंगे। ये एक डॉक्टर को ही बुलवा भेजेंगे।

शेष अगले अंक में...

शोक समाचार

'तर्कशील पथ' पत्रिका के संपादक बलवन्त सिंह प्राध्यापक के पिता जी स.तरलोक सिंह (आयु 100 वर्ष) का निधन दिनांक 7 मार्च 2014 को हो गया।

रेशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा (रजि.) परिवार के दुःख में सहभागी बनती हुई संवेदना व्यक्त करती है।

पुनर्जन्म-हिप्नोटिक रीग्रेशन...
आंखों की नज़र सुधर जाती है

प्रो.अब्राहम टी.कोवूर

विवादस्पद पुनर्जन्म विषय से संबंधित 'दैनिक जागरण' अखबार में छपने वाले पत्रों में से एक पत्र श्री चन्द्र परेश का भी छपा था जिसमें उसने निम्नलिखित पैरा Sense and non-sense in Psychology में से लिया था। (P-49- H.J.Eysenek-Palicon looks)

''ऐसा ही प्रभाव एक ऐसे व्यक्ति के केस में रिकार्ड किया गया था जिसकी नज़र बचपन से ही कमजोर थी तथा वह बारह वर्ष की आयु से ऐनक लगा रहा था। सम्मोहन के द्वारा जब उसे सात वर्ष की आयु तक लाया गया तो उसकी दूर की एवं समीप की नज़र में विशेष सुधार हो गया। यह तथ्य दृष्टि की जांच करने वाली मशीन द्वारा तसदीक किया गया।''

कितनी बुद्धिमता वाली बात होती यदि इस प्रकार के दावे को अपनी पुस्तक में प्रकाशित करने से पूर्व प्रो.एच.आईसैंक जैसा प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्वयं दावे की जांच पड़ताल करता जोकि किसी अन्य द्वारा रिकार्ड किया गया था? ऐसी जांच पड़ताल की उन परिस्थितियों में विशेष आवश्यकता होती है, जहां पर सम्मोहन विद्या को अत्यंत विचित्र धारणाओं जैसे कि जानवरों का चुंबकीकरण, सितारों का प्रभाव एवं अन्य ऐसी ही फालतू की बातों के साथ जोड़ा जाता है। प्रो.आईसैंक इन धारणाओं से परिचित है।

लगभग सभी विज्ञान जादू-टोना एवं बहम-भ्रमों की पैदावार हैं। जहां सभी विज्ञान अपने इन स्रोतों से अलग हो गये वहां पर सम्मोहन अभी भी तन्त्र विद्या से जुड़ा हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रो.आईसैंक ने भूसे के ढेर में से छननी पकड़ कर दाने अलग करने का प्रयत्न किया है परन्तु लगता है कि उसकी छननी में से दानों के स्थान पर भूसा अधिक निकल गया है।

सी.वी.हूजिन्ज ने हिप्नोटिक रीग्रेशन के दौरान आंखों की पुतलियों के सिकुड़ने एवं फैलने की उन इच्छित प्रक्रिया में प्रयोग की जाने वाली ट्रिक का पर्दाफाश किया है। ऐसे नकली प्रदर्शन का कारण निरोल अनुकूलित प्रतिक्रिया होती है, हिप्नोटिज़्म नहीं।

यह सत्य है कि सम्मोहित व्यक्ति के मन को प्रेरक संकेतों के द्वारा आगे की ओर अथवा पीछे की ओर ले जाया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप विशेष मनो-शारीरिक परिवर्तन उत्पन्न किये जा सकते हैं। परन्तु यह दावा कोरी कल्पना है कि सम्मोहन के अधीन किसी व्यक्ति को दूर संवेदी अथवा दिव्यदर्शी बनाया जा सकता है अथवा सम्मोहन अवस्था में उसे यह सुझाव देकर कि उसका शरीर आग में जल रहा है, उसके शरीर में फुलकरे उत्पन्न किये जा सकते हैं अथवा रीग्रेशन के द्वारा उसमें शारीरिक परिवर्तन उत्पन्न किये जा सकते हैं।

हम प्रो.आईसेंक समेत ऐसा दावा करने वाले सभी हिप्नोटिस्टों को चुनौती देते हैं कि किसी 60-70 वर्ष के व्यक्ति को रीग्रेशन के द्वारा चार वर्षीय बालक जैसा बना कर दिखाएं, बूढ़े व्यक्ति के गंजे सिर पर बाल उगा कर दिखाएं, मोतियों जैसे दांत उत्पन्न करके दिखाएं, किसी नवयुवक के बाल लुप्त करने जैसे शारीरिक परिवर्तन ला कर दिखाएं।

सम्मोहन अवस्था में बोली गई बातें व्यक्ति के अचेत मन में से आती हैं। यह बातें उसके अतीत से संबंधित बाह्य अनुभवों अथवा केवल कल्पना का परिणाम भी हो सकती हैं। जरूरी नहीं कि यह सभी बातें सत्य ही हों। परन्तु यह बातें किसी मनोचिकित्सक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि इन बातों के द्वारा उसे व्यक्ति के दिमाग के अंदर झांकने का अवसर मिलता है।

सम्मोहक निद्रा में पड़े व्यक्ति को यदि कोई सम्मोहनकर्ता यह सुझाव दे दे कि तुम कुत्ता हो तो यह संभव है कि वह व्यक्ति कुत्ते की तरह से भौंकना शुरू कर दे। परन्तु ऐसे व्यवहार से यह नतीजा निकालना

मूर्खता है कि व्यक्ति अपने पिछले जन्म में कुत्ता था। जो कोई ईसाई व्यक्ति स्वर्ग-नर्क के विश्वासों वाले वातावरण में पला-बढ़ा हो, यदि सम्मोहन अवस्था में उसे कहा जाए कि वह स्वर्ग में बैठा है तो यह संभव है कि वह स्वर्ग का वर्णन करते हुए बताने लग जाए कि ईश्वर सोने के तख्त के ऊपर उसके सम्मुख बैठा है, ईसा ईश्वर के दाहिने हाथ बैठा है, पंखों से युक्त फरिश्ते ईद-गिर्द खड़े ईश्वर की स्तुति में गायन कर रहे हैं।

उसकी स्वर्ग में बैठे हुए पैगम्बरों-अब्राहृम, ईसा, मूसा, एलिजा इत्यादि के साथ बातें करवाई जा सकती हैं। परन्तु सम्मोहित व्यक्ति की ऐसी बातों को स्वर्ग-नर्क, ईश्वर, फरिश्तों आदि के अस्तित्व का प्रमाण समझना बिल्कुल हास्यास्पद बात होगी।

यदि सम्मोहक निद्रा में बोली गई किसी व्यक्ति की बातें सत्य हों तो सस्ती एवं साधारण सी पुस्तकें पढ़ने के शौकीन पाठक जुर्मो की खोज करने में पुलिस के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

यदि सम्मोहक निद्रा में रीग्रेशन में किसी व्यक्ति से विदेशी वाद्य-यंत्र बजवाया जा सकता है अथवा विदेशी भाषा बुलवाई जा सकती है? इस प्रश्न का उत्तर है कि 'हां' ऐसा हो सकता है बशर्ते कि वह पहले से ऐसा करता रहा हो। जिस व्यक्ति ने कभी विदेशी वाद्य-यंत्र नहीं बजाया, विदेशी भाषा नहीं बोली उससे ऐसा कुछ भी नहीं करवाया जा सकता। (यदि इसमें कोई चालाकी न की जाए) सम्मोहन के द्वारा उसके अन्दर की वह रूकावट दूर की जा सकती है जोकि प्राप्त योग्यता के रास्ते में अड़चन बनी हुई हो, सम्मोहन की सहायता से वह ऐसी दबी हुई योग्यता को प्रकट कर सकता है।

प्रो.के.एन. ज्योतिलेके लिखती हैं, ''मानव जन्म इस पृथ्वी के ऊपर अथवा विशाल ब्रह्माण्ड के अन्य ग्रहों पर होने वाली मनुष्यों, जानवरों एवं अन्य जीवों की मौतों के लिए उत्तरदायी है।''

कितने मूर्ख हैं तिब्बती लोग जो अपने भूतपूर्व लामाओं को तिब्बत की सीमाओं के अन्दर ही ढूंढते हैं जबकि उनके मृतक दलाईलामा लोग किसी अन्य ग्रह के ऊपर भी किसी जानवर की योनि में भी जन्म ले सकते हैं? यदि वर्तमान दलाईलामा भारत में मृत्यु को प्राप्त हो जाए तो क्या तिब्बती लोग उसका वारिस तिब्बत में से अथवा ब्रह्माण्ड के किसी अन्य ग्रह में से ढूंढेंगे?

विद्वान प्रोफैसर आगे लिखती है, ''आयु संबंधित रीग्रेशन विधि का प्रयोग करके पुनर्जन्म से संबंधित प्रमाण ढूंढे जा सकते हैं। किसी व्यक्ति को गहरी सम्मोहक निद्रा में ले जाकर उसे प्रेरक संकेतों के द्वारा जन्म से पूर्व वाली अवस्था में ले जाया जाए। जब वह अपने अतीत में बहुत पीछे चला जाए तब उसे अपने अनुभव ब्यान करने के लिए वे सभी अवस्थाएं पुनः जीने के लिए कहा जाए जिन से गुजर कर वह वर्तमान अवस्था में आया है।''

प्रयोगशालाओं एवं रेडियो दूरबीनों पर अत्यधिक धनराशि खर्च करने के बजाए भविष्य में खगोल वैज्ञानिक प्रो.ज्योतिलेके की सादा एवं सस्ती रीग्रेशन तकनीक का प्रयोग करके ग्रहों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। किसी व्यक्ति को इस विधि के द्वारा जून से पूर्व वाले उस समय तक ले जाओ जब वह किसी ग्रह पर रहता था। वह आपको उस ग्रह के बारे में सभी बातें बताने लग जाएगा। इस प्रकार ब्रह्माण्ड के सभी ग्रहों के बारे में संपूर्ण जानकारी बहुत आसानी के साथ एवं सस्ते ढंग से प्राप्त की जा सकती है।

यदि प्रो.ज्योतिलेके हिप्नोटिक रीग्रेशन विधि के द्वारा वैज्ञानिक आविष्कारक बनना चाहती हैं तो हम उसे सलाह देंगे कि वह पहले उन समरूप जुड़वां व्यक्तियों को हिप्नोटाईज़ करे जो एक ही भ्रूण में से दो अलग-अलग व्यक्ति बने हों। यदि वे दोनों हिप्नोटिक रीग्रेशन के अधीन अपने पिछले जन्मों से संबंधित एक जैसे ही ब्यान देते हैं तो हम पुनर्जन्म से संबंधित इसे वैज्ञानिक प्रमाण के तौर पर स्वीकार कर लेंगे।

इच्छित सोच-विचार एवं अंधविश्वासी व्यक्तियों के द्वारा बताई गई कहानियां वैज्ञानिक प्रमाण नहीं बनती।

''अमेरिका की एब्ट लेबाट्रीज नामक एक कम्पनी साईलर्ट नाम से एक दवा तैयार कर रही हैं जिसके प्रयोग से जानवरों की सीखने की योग्यता बढ़ाई जा सकेगी। वर्तमान खोजों ने यह सिद्ध किया है कि आर. एन.ए.स्मृति की क्रिया में महत्त्वपूर्ण रोल अदा रकता है। डॉ.गलेस्की का ख्याल है कि मैग्नीशियम पीमोलीन की

क्रिया दिमाग की तन्तु कोशिकाओं में आर.एन.ए. उत्पन्न करने की गति तीव्र करेगी। वही गति इस दवाई के उन गुणों के लिए जिम्मेवार है जो स्मृति में सुधार करते हैं''? (सिलोन डेली न्यूज)

यह खबर पुनर्जन्म बारे हमारे स्थानीय खोजियों के लिए अत्यंत उत्साहवर्धक होनी चाहिए। हमारे लड़के लड़कियों को साईलर्ट खिला कर उन्हें अपने पूर्व जन्मों की स्मृतियां याद करने में सहायता की जा सकती है। व्यस्क व्यक्तियों को भी साईलर्ट पर्याप्त मात्रा में खिला कर उन्हें भी पिछले जन्म की बातें याद करवाई जा सकती हैं।

यदि स्मृति मस्तिष्क के तन्तुओं के आर.एन.ए.अणुओं पर आधारित है तो मृत्यु के पश्चात् मस्तिष्क के गलफ्सड़ जाने के पश्चात् भी यह किस प्रकार कायम रह सकती है? फिर पूर्व जन्मों के बारे में बार-बार बताई जाने वाली कहानियों को हम कैसे महत्त्व दे सकते हैं?

तीन वर्ष आठ मास की एक लड़की, जिसका नाम ओलिव शमलता रंजी प्रेमा था, एक दिन अपने मां बाप के साथ बाजार में चली जा रही थी। उसने एक घर की ओर इशारा करके कहा, ''पापा वह सामने वाला घर मेरे पूर्वजन्म के मां-बाप का घर है। मेरे मां-बाप यहां पर रहते हैं।'' यह सुनकर उसके मम्मी-पापा की उत्सुकता जाग पड़ी तथा उन्होंने विश्वास कर लिया कि ओलिव का उनके घर में पुनर्जन्म हुआ था। एक दिन ओलिव ने एक अन्य लड़की की ओर इशारा करके कहाः ''पिछले जन्म में मैं उस लड़की जैसी थी।''

अभी तक हम उस स्थानीय लड़की की उस दिलचस्प कहानी की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिसने देहिवाला चिड़ियाघर में घूमते हुए एक जानवर की ओर संकेत करके कहा था, ''पिछले जन्म में मैं उस जानवर जैसी थी।'' हमारे पुनर्जन्म के खोजियों को अभी तक ऐसा बच्चा क्यों नहीं मिला जो अपनी पशु योनि के साथ संबंधित अपनी स्मृतियो को सुना सके?

हम पुनर्जन्म के दावेदार से पूछते हैं कि ओलिव एवं अन्य लड़की जोकि पिछले जन्म में उस जैसी थी, पुनः दोनों एक साथ ही एक ही शहर में जन्म कैसे ले लिया? क्या कोई व्यक्ति समरूप युगलों को छोड़कर दो व्यक्ति बनकर जन्म ले सकता है?

'आज एक बौद्ध भिक्षुणी ने वियतनाम से संबंधित अमेरिकी नीति के विरूद्ध राष्ट्रपति जॉनसन को रोष पत्र लिखने के पश्चात् स्वयं को आग लगा ली एवं जलकर मर गई।' (सिलोन डेली न्यूज)

पश्चिमी देशों में लोग प्रायः व्यक्तिगत कारणों से आत्महत्या करते हैं तथा वहां पर आत्महत्याएं अपेक्षाकृत कम होती हैं। पुनर्जन्म में विश्वास करने वाले लोग अधिकतर आत्महत्याएं करते हैं। उनका उद्देश्य भी आमतौर पर धार्मिक एवं राजनैतिक होता है।

प्राचीन भारत में हिन्दू पत्नियां अपने पतियों की चिंताओं में जलकर सती हो जाया करती थी। वे इसलिए सती होती थीं ताकि वे पुनः अपने पतियों के साथ ही जन्म ले सकें। आजकल भारत में हिन्दू लोग गऊओं को बचाने के प्रयास में अपना जीवन बलिदान करने के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि वे इसे पुण्य का कार्य समढते हैं। जिसके एवज में वे अगले जन्म में अच्छी परिस्थितियों में जन्म लेने के अधिकारी बन जाएंगे। जो लोग पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं उनके लिए मृत्यु एकांतवादी केकड़े की तरह से पुराने खोल में से निकल कर नये खोल में प्रवेश करने के समान हैं। किसी महान अथवा नेक उद्देश्य के लिए मरना उनके लिए बढ़िया परिस्थितियों में जन्म लेने की गारंटी होती हैं। ऐसा करते समय उन्हें आशा होती है कि उनकी एकदम से तरक्की हो जाएगी। है तो यह मूर्खता परन्तु अपने विश्वास की सहृदयता के कारण वे प्रशंसा के हकदार हैं।

इन भोले-भाले वियतनामी लोगों के गिष्कप्ट विश्वास का धार्मिक लोग बहलाने वाले पुरोहितों के आडम्बर पूर्ण विश्वास के साथ मुकाबला करो। पुरोहित लोगों को चाहे पक्का विश्वास होता है कि मृत्योपरान्त स्वर्ग में उनका अमर, सुखों से परिपूर्ण जीवन आरम्भ होगा। फिर भी जब वे बीमार हो जाते हैं, अपने दुखों से परिपूर्ण जीवन को इस घटिया संसार में लम्बा करने के लिए हाथ पैर मारते हैं- मंहगे डॉक्टरों से इलाज करवाते हैं तथा अपने साथियों को अपने स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के लिए प्रार्थनाएं करने के लिए अनुरोध करते हैं।

हिन्दी अनुवाद-बलवन्त सिंह लैक्चरार

नास्तिकों को इकलौता तीर्थः
विजयवाड़ा

डॉ० रणजीत

भारत के प्रख्यात नास्तिकों पर सम्पादित की जा रही अपनी पुस्तक के लिए जब मैंने आंध्रप्रदेश के अग्रणी नास्तिक गोपाराजु राम चन्द्र राव 'गोरा' के जीवनवृत्त के लिए उनके पुत्र श्री विजयम से सम्पर्क किया तो उन्होंने बताया कि 28–29 सितम्बर 2012 में उनकी माँ और गोरा की सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में उनके साथ कदम से कदम मिला कर चलने वाली सरस्वती गोरा की जन्मशती के अवसर पर नास्तिक केन्द्र विजयवाड़ा में एक अनार राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित है, आप भी उसमें आईये।

सम्मेलन में मैं सपत्नीक गया और हम लोग विजयवाड़ा के नास्तिक केन्द्र में तीन दिन रहे, उसकी सामाजि-सांस्कृतिक गतिविधियों से परिचित हुए। 'नास्तिक केन्द्र' इस तरह के बेलौस नाम से भारत का ही नहीं, विश्व का ऐसा पहला केन्द्र है, जो मानववादियों, विवेकवादियों और नैतिक निरीश्वरवादियों का सचमुच एक तीर्थ स्थान है

विजयवाड़ा, हैदराबाद और विशाखापट्टनम के बाद आंध्र प्रदेश का तीसरा महानगर है, जो अपनी दस लाख की आबादी के साथ कृष्णा नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ है। इसके बैज सर्कल क्षेत्र में स्थित है वह अथीस्ट सेन्टर, जिसे हिन्दी में 'नास्तिक केन्द्र' और तेलुगू में 'नास्तिक केन्द्रम' कहा जाता है। इसकी इस तरह पर स्थापना गोरा जी ने अपनी महधर्मिणी और सहकर्मिणी सरस्वती जी के साथ 1947 में की थी।

पन्द्रह वर्षो तक विभिन्न कॉलेजों में पढ़ाने और अपने निरीश्वरवादी विचारों की अभिव्यक्ति के कारण दो बार उनसे निकाले जाने के बाद, अपने माता-पिता के परिवार से बहिष्कृत, वनस्पति विज्ञान के प्राध्यापक राम चन्द्र राव गोरा को यद्यपि एक बीमा कम्पनी और एक वैज्ञानिक उपकरण बनाने वाली कम्पनी ने नौकरी का प्रस्ताव किया, पर उन्हें लगा कि अब उन्हें नौकरी नहीं करनी चाहिए इस लिए उन्होंने अपने मित्र और स्वतंत्रता सैनानी एवं अंजइया के प्रस्ताव पर कृष्णा जिले के उनके गाँव मुदुनूर में रह कर स्वतंत्रता पूर्वक नास्तिकता के प्रचार और उससे जुड़े समाज-सुधार के कार्यक्रम चलाने का निश्चय किया। सो अगस्त 1940 में वे अपनी पत्नी और अपने एक से लेकर बारह वर्ष तक के छः बच्चों के साथ इस गाँव में ग्रामवासियों द्वारा गाछव के बाहर उनके लिए खड़े किये गये दो झोंपड़ी में आकर रहने लगे। यहाँ उन्होंने एक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाया। दो झोपड़ों के इस परिसर को नाम दिया गया – 'नास्तिक केन्द्रम' या एथीस्ट सेन्टर 1 केन्द्र में 20 से 70 वर्ष के 86 वयस्कों ने प्रवेश लिया। कक्षाओं का समय दोपहर बारह से दो तक रक्खा गया क्योंकि यह समय गांव के कृषि कर्मियों तथा प्राथमिक शाला के शिक्षकों के अनुकूल था। गोरा ने सभी विषयों – इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज, शास्त्र, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, दर्शन आदि की बुनियादी जानकारी इन वयस्कों को देनी शुरू की वे जीवन और जगत के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण बना सकें। प्रो. एन. जी रंगा ने उनकी सहायता के लिए उनहें अपनी निजी लाइब्रेरी से 'ॲनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' की सभी जिल्दें उपलब्ध ा करा दीं। केन्द्र में हर शनिवार की शाम इन छात्रों में से जो सभी जातियों और धर्मों के थे, दो या तीन छात्र अपने हाथ से चाय-नाश्ता बना कर सब को खिलाते थे। इस तरह हिन्दू-मुस्लमान-ईसाई से लेकर ब्राह्मण और अछूतों के एक साथ जलपान के कारा कई ब्रह्मण परिवारों ने अपने घरों के दरवाजे कई बार अपनी छात्र संतानों के लिए बन्द भी किये

पर धीरे धीरे इन शिक्षार्थियों की दृढ़ता के कारण गाँव का भेदभाव पूर्ण माहौल पूरी तरह बदल गया। 1941 की जनगणना में गांव के 142 लोगों ने अपने आप को नास्तिक लिखवाया।

परिवहन आदि की सुविधाएं देखते हुए 1947 में उन दो झोपड़ो को बैल गाड़ियों में लाद कर नास्तिक केन्द्र विजयवाड़ा के एक सीमावर्ती गाँव पतमाता की एक झौपड़पट्टी में ला खड़ा किया गया, जिसे धीरे धीरे विजयवाड़ा नगर ने निगल लिया।

गोरा गांधी से प्रभावित थे। उन्होंने और उनके परिवार के सदस्यों ने 'अग्रेजों, भारत छोड़ो' आन्दोलन में भाग लिया और जेल गये। अपने नास्तिक केन्द्र में उनहोंने गांधी के रचनात्मक कार्यो – प्रौढ़ शिक्षा, अस्पृश्यता निवारण, वेश्यावृति मुक्ति, आदि को अपनाया और गांधी जी से लम्बा संवाद किया, वे बिना गांधी जी की प्रार्थना-सभाओं में शामिल हुए सेवाग्राम में महीनों रहे भी। और गाँधी जी के ईश्वर संबंधी विचारों को प्रभावित भी किया, उनके गांधी जी के साथ लम्बे विचार विमर्श के बाद गाँधी जी, जो पहले उनसे बात करने तक को तैयार नहीं थे, यह तक कह गये –''डू यू थिंक, आइ ॲम सुपरस्टीशियस, आई ॲम सुपर-ॲथीस्ट'' वैसे भी ईश्वर सत्य है से सत्य ईश्वर है तक की उनकी वैचारिक यात्रा पर गोरा जी का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

1951 में गोरा जी ने गाँधी जी से जुड़े रचनात्मक कार्यकर्ताओं की एक कान्फ्रेस गुडीवाड़ा में आयोजित की और 'गांधी संघम (समता) नाम से एक संगठन की नींव रक्खी। इस संगठन के मंच से उन्होंने यह मांग रक्खी कि जनप्रतिनिधि जनता के नौकर है, इन्हें अपनी जीवन शैली में सादिगी की मिसाल पेश करनी चाहिए, वेतन-भत्ते, कम करने चाहिए, शान-शौकत छोड़नी चाहिए। 'संघम' ने मंत्रियों और राज्यपालों के तामझाम और फिजूलखर्ची के खिलाफ प्रदर्शन, धरने और सत्याग्रह भी आयोजित किये और गिरफ्तारियां भी दीं। 1975 में 'ग्रामीण भारत में सामाजिक परिवर्तन' विषय पर एक सभा में भाषण देते हुए मस्तिक आघात से उनका निधन हो गया। उन्होंने एक सामाजिक क्रांतिकारी का जीवन जिया और अंतिम क्षण तक लड़ते हुए मरे।

नास्तिक केन्द्र, गोरा जी के निधन के बाद भी उनके द्वारा शुरू की गयी सभी प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का उनकी सन्तानों तथा अगली पीढ़ियों के सदस्यों की प्रतिबद्धता के कारण, आज भी मुख्य केन्द्र बना हुआ है। आज भी चमत्कारों की पोल खोलने के लिए अंगारों पर चलने के प्रदर्शन वहाँ आयोजित किये जाते हैं।

प्रौढ़ो को वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करने वाली शिक्षा दी जाती है, आर्थिक समता के लिए संघर्ष करने के लिए अलग आर्थिक समता मंडल है, महिलाओं को समाज में बराबरी और सम्मान का स्थान दिलाने के लिए 'वासव्य महिला मंडली' कार्यरत हो 'वासव्य' शब्द वास्तविकता, संघदृष्टि तथा व्यक्तित्व के आरंभिक अक्षरों को मिला कर गढ़ा गया है। शिक्षा, अपने व्यापक अर्थ में, आज भी नास्तिक केन्द्र की प्राथमिक गतिविधि है। गोरा जी की तीसरी बेटी विद्या के निर्देशन में कार्यरत महिलाओं के छात्रावास में सिलाई, जिल्दसाज़ी, छपाई, नर्सिंग आदि सिखा कर महिलाओं को स्वाबलम्बी बनाया जाता है। गोरा जी की दूसरी बेटी मैत्री, जो कभी स्वयं अविवाहित माता थी, ऐसी परिस्थितियों में फंसी महिलाओं की कौन्सिलिंग करती हैं।

डॉ० समर द्वारा चलाये जा रहे 'समरा हॉस्पिटल', जो नास्तिक केन्द्र और उसमें कार्य करने वाले गोरा परिवार की जीविका का भी मुख्य स्रोत है, में भी चिकित्सा के अतिरिक्त सन्पति निग्रह तथा समलिंगी युग्मों सहित सभी तरह के लोगों को यौन समस्याओं परामर्श दिया जाता है।

नास्तिक केन्द्र में पूर्व देवदासियों को, जिन्हे आंध्र में जोमिन कहा जाता है और वेश्याओं का जीवन जीना पड़ता है, के उद्धार और पुनर्वास के लिए भी 'संस्कार' नाम से एक स्वतंत्र संस्था कार्य करती है।

नास्तिक केन्द्र में अपनी गतिविधियों में

अन्धविश्वासों से मुक्ति, अन्तरजातीय और अन्तरधर्मीय विवाहों को प्रोत्साहन तथा धार्मिक भेदभावों से मुक्त एक पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष समाज निर्माण के लिए ऐसे सामूहिक भोजों के आयोजन को भी शामिल किया, जिनमें गाय और सूअर दोनो का मांस एक साथ परोसा जाता है।

इस तरह विजयवाड़ा के नास्तिक केन्द्र ने केवल 'ईश्वर नहीं है' की नकारात्मक निष्क्रिय धारणा को मनुष्य अपने भाग्य को खुद मालिक है, वह प्रयत्न करे तो मानव समाज को स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के महान आदर्शों के अनुकूल ढाल कर इसी संसार को स्वर्ग बना सकता है' की सकारात्मक अवधारणा तक पहुंचा कर नास्तिकता को एक सामाजिक-सांस्कृतिक शक्ति बना दिया है।

स्वयं गोरा जी के शब्दों में ''नास्तिकता का सार है व्यक्ति की स्वतंत्रता। यह स्वतंत्रता मानवीय कल्पना, पहल और प्रयास की उन अनंत संभावनाओं के दरवाजे खोल देती है जिन्हें परावलम्बी आस्तिकताने बन्द कर रक्खा होता है। एक आज़ाद इन्सान अपनी परिस्थितियों का स्वामी होता है, उनका गुलाम नहीं। नास्तिक जीवन शैली में किसी लौकिक या दैविक सत्ता से अनुनय विनय, शिकवा-शिकायत या याचना-प्रार्थना का कोई स्थान नहीं है। नास्तिक हमेशा आग्रह पूर्वक अपनी बात कहते हैं, वे कभी समर्पण नहीं करते, सत्याग्रह करते हैं। एक नास्तिक के लिए जीवन का लक्ष्य भव बाधाओं से, जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति नहीं, इसी संसार इसी जीवन में दुख-दरिद्रता से विषमता-दासता से मुक्ति है, और वह भी सिर्फ अपने ही लिए नहीं, समस्त मानवता के लिए। ऐहिकता नास्तिकों को आत्मलीन नहीं बनाती, वह उनकी सामाजिक चेतना को बढ़ाती है, उन्हें समता और ईमानदारी के लिए लड़ना सिखाती है। नास्तिक सामाजिक मरजीवड़े होते है - सदैव और सर्वत्र अन्याय, अत्याचार और असमानता के विरूद्ध संघर्षरता

भारत के प्रत्येक मुक्तविचारक, विवेकवादी और मानववादी को इस तीर्थ की एक बार यात्रा अवश्य करनी चाहिए। और विजयम, लवणम, मैत्री, डॉ. मारू आदि उसके कर्मठ कार्यकर्ताओं से अवश्य मिलना चाहिए।

(गोरा जी के कार्यकलाप की अधिक जानकारी के लिए मानवीय समाजप्रकाशन, पुसद, महाराष्ट्र से प्रकाशित उनकी पुस्तक 'हम नास्तिक कैसे हुए' और नास्तिा केन्द्र के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, उसकी केन्द्र द्वारा प्रकाशित जिम हेरिक की पुस्तक 'द एथीस्टि सेन्टर अनबाउन्ड बाय केजेज' पढ़ी जा सकती है।)

डॉ रणजीत
फ्लैट201 मल्टी सफायर अपार्टमेन्ट
फर्स्ट मेन रोड सुद्दागुंटे पाल्या
बैंगलोर-560029

लघुकथा

धर्मात्मा

धर्मपाल जी धर्मात्माओं के धर्मात्मा थे रिटायरमेंट के बाद वो रोज सुबह पैदल चलकर नंगे पाँव गंगा जी नहाने जाया करते थे। एक झोले में पक्षियों के लिए दाना, एक आटे का गोला तथा एक पुड़िया में आटा और चीनी मिलाकर ले जाते थे। गंगा किनारे पेड़ों के नीचे चीटिंयों को आटा चीनी डालकर चबूतरे पर पक्षियों को दाना डालते और गंगा किनारे बैठकर मछलियों को आटे की गोलियां बनाकर खिलाते।

गंगा में वापस लौटते हुए धर्मपाल जी ने चुन्नू पानवाई से कहा चुन्नू हमारे पान तो बाँध दो। पानवाला कहने लगा धर्मपाल जी हाथ में ये पुड़िया कैसी ? और झोला भी आज बहुत भारी लग रहा है बहुत सामान लाये हो। धर्मपाल जी कहने लगे घर में चूहे और चींटिया बहुत हो गये है उन्हें मारने के लिए दवाई लाया हूँ और घर में मेहमान आने वाले हैं इसलिए शराब की बोतल और चिकन ले जा रहा हूँ।

जागन सिंह गौतम
रसूलपुर सैदाँ पटियाला
96464-19014

पिछले अंक का शेष–

ईसाई धर्म और हिंसा

गीतेश शर्मा

ईसाई धर्म जब राजसत्ता से जुड़ राजधर्म के रूप में प्रतिष्ठित हो गया तब यह और भी आक्रामक, निरंकुश और हिंसक हो गया। जिसने भी इसके निरकुंश, हिंसक एवं अमानवीय पक्ष का प्रतिवाद करने की चेष्टा की, उसे पूरी शक्ति के साथ कुचल दिया गया। राजसत्ता चर्च के और चर्च राजसत्ता के हितों की रक्षा करने लगे क्योंकि दोनों का एक–दूसरे से स्वार्थ जुड़ गया था और दोनों एक–दूसरे पर निर्भर हो गए थे। चर्च ने राजशाही और सामन्तशाही को धर्मसम्मत बताते हुए राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया। बदले में राजाओं के अत्याचार बढ़ते चले गए। जो राजा जितना अत्याचारी होता था, वह उतना ही धार्मिक होता था और पोप ऐसे राजाओं को सम्मानित करता था।

इन अत्याचारी राजाओं में चार्ल्स प्रथम के नाम से प्रसिद्ध फ्रांस के राजा चार्ल्स मैग्ने (Charles Magne) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसने राजद्रोह एवं धर्मद्रोह को सबसे बड़ा अपराध घोषित करते हुए अपराधियों के लिए मृत्यु–दंड की व्यवस्था दी। उसके शासनकाल में (सन् 775–90) धर्मान्तरण अनिवार्य कर दिया गया जिसके अन्तर्गत हर व्यक्ति के लिए ईसाई धर्म में दीक्षित होना आवश्यक था। धार्मिक कर्मकांडों को बढ़ावा दिया जाने लगा। उसने ऐसे नियम बनाए जिसके अनुसार बालक के जन्म के एक वर्ष के भीतर उसकी दीक्षा और नामकरण अनिवार्य था। मूर्तिपूजकों, गैर धर्मावलम्बियोंके समारोहों में शामिल होने पर लोग दंडित किए जाते थे। धर्मान्तरण को अस्वीकार करने वाले एवं चर्च में चोरी करने वाले को मृत्यु–दंड दिया जाता था।

चार्ल्स मैग्ने ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर पश्चिम यूरोप को एक किया। तीस वर्ष के युद्ध के बाद सैक्सन जाति (Saxon) को पराजित कर इंग्लैंड पर अधिकार किया। उसकी आज्ञा से युद्ध में बन्दी बनाए गए चार हजार पाँच सौ सैक्सनों का शिरच्छेद कर कत्लेआम किया गया। उसने अपने राज्य में चर्चो एवं धार्मिक स्कूलों का जाल बिछाया। धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए पोप लिओ ने सन् ८०० में रोमन सम्राट के रूप में उसका अभिषेक किया। यह पहली बार किसी पोप द्वारा राजा का अभिषेक था।

धर्म के नाम पर हुई हिंसा के इतिहास में क्रूसेड का जिक्र आवश्यक है। सन् 1096 से सन्1272 के बीच 'पवित्र स्थान' जेरूसलम पर अधिकार को लेकर हुए आठ क्रूसेडों (धर्मयुद्धों) में धर्म के जुनून में आकर लाखों लोगों ने अपनी जान गँवा दी। इसमें एक धर्मयुद्ध में पचास हजार अबोध बच्चे भी शामिल थे। जैसाकि पहले लिखा जा चुका है, जेरूसलम यहूदियों, ईसाईयों, मुसलमानों की पवित्र भूमि (Holy Land) यानी कि पवित्र धार्मिक स्थल है। क्या विडम्बना है कि तीन 'महान' धर्मो का धार्मिक स्थल होने के कारण ही विगत तीन हजार वर्षो से जेरूसलम अनवरत आक्रमणों का शिकार होता रहा। इस पर अधिकार को लेकर असंख्य लोग मारे गए और आज भी यह अत्यन्त विवादित अशान्त क्षेत्र बना हुआ तथाकथित धार्मिक सहिष्णुता, सहअस्तित्व और सर्वधर्म समभाव की धज्जियाँ उड़ा रहा है।

क्रूसेड का अर्थ होता है धर्मयुद्ध; गैर ईसाईयों तथा शंकालुओं के विरूद्ध पोप की स्वीकृति से छेड़ा गया युद्ध। पश्चिमी यूरोप के ईसाई शासकों ने मुसलमानों द्वारा हथियाई गई फिलिस्तीन की अपनी पवित्र भूमि को वापस प्राप्त करने के लिए सन् 1096 से 1291 के बीच 'क्रूसेड' के अन्तर्गत आठ सैनिक अभियान किए। क्रूसेड की पृष्ठभूमि में हालाँकि मूलतः धर्मांधता थी किन्तु इसके साथ–ही–साथ अधिक भूमि प्राप्त करने तथा व्यवसायिक हित

साधने की महत्त्वाकांक्षा भी रही।

हुआ यों कि सन् 637 में अरब मुसलमानों ने ईसाईयों के धर्मस्थान जेरूसलम पर कब्जा कर लिया परन्तु उन्होंने ईसाई तीर्थयात्रियों के आवागमन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया। हालात किन्तु सन् 1076 में उस वक्त बदल गए जब सेल्जुकीय तुर्कों ने धार्मिक नगर पर कब्जा कर ईसाई तीर्थयात्रियों के साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। मुस्लिम अतिक्रमणकारियों से जब बाइजेन्टाइन साम्राज्य को भी खतरा पैदा हो गया तो सन् 1095 में बादशाह अलेक्सियस कोमेनस ने पोप अर्बन द्वितीय से सहायता की अपील की। पोप ने क्लेरमोंट की परिषद में धर्मयुद्ध का ऐलान किया (सन् 1096-99) और इस प्रकार प्रथम क्रूसेड की शुरूआत दो समूहों ने की। एक फ्रेंच नाइट वाल्टर द पेनीलेस तथा दूसरे पीटर द हरमिट किसानों के एक अव्यवस्थित जत्थे के साथ चल पड़े, जिनमें से कुछ पवित्र भूमि तक पहुँचे। जत्थे के नेतृत्व में डयूक ऑफ लोरेन गाडफ्रे द बुइलोन, टोलाउस के आउंट रेमंड, ओ ट्रान्टो के लार्ड बोहेमंड, विजेता के ज्येष्ठ पुत्र नॉर्मण्डी के डयूक राबर्ट आदि शूरवीर थे।

कोन्स्तान्तिनोपल में 1,50,000 की फौज इकट्ठा हुई। एंतियक पर कब्जा कर लिया गया और अगले ही साल मुसलमानों के भयंकर नरसंहार के साथ जेरूसलम पर कब्जा कर लिया गया। गाडफ्रे द बुइलोन को जेरूसलम का गवर्नर नियुक्त किया गया तथा तुर्कों से जीती गई बाकी की जमीन क्रूसेड के नेताओं में बाँट दी गई। तत्पश्चात दो सैन्य दलों की स्थापना हुई जिनमें एक था नाइट्स ऑफ सेंट जॉन जिसका काम था बीमार व घायलों की मदद करना तथा दूसरा था नाईट्स टेप्लर जो तीर्थयात्रियों को सुरक्षा प्रदान करता था।

दूसरे क्रूसेड (सन् 1147-49) का कारण ईसाई राज्य एडेसा का पतन था तथा जिसका नेतृत्व फ्रांस के लुई सप्तम तथा बादशाह कोनराड तृतीय के हाथों में था। यह पूरी तरह असफल रहा।

जेरूसलम तथा उसके राजा गॉय द लुसिग्नन (सन् 1187) पर तुर्की नेता सलीदीन (सलाह-अल-दीन), जिसने मिस्त्र को जीत लिया था, के बलपूर्वक दखल ने तीसरे तथा अत्यन्त प्रसिद्ध क्रूसेड को जन्म दिया।

बादशाह फ्रेडरिक बारबरोसा सबसे पहली अपनी सेना को लेकर एशिया माइनर पहुँचा परन्तु दुभाग्यवश सैलेफ नदी में तैरने के दौरान डूबकर उसकी मृत्यु हो गई तथा उसकी फौज का विघटन हो गया।

इंग्लैंड के रिचर्ड-प्रथम तथा फ्रांस के फिलिप ऑगस्तस, मार्सेलिस से नौपथ से रवाना तो साथ-साथ हुए परन्तु पवित्र भूमि पर पहुँचे अलग-अलग क्योंकि साईप्रस को जीतने के चक्कर में रिचर्ड को देर हो गई। धर्मयोद्धाओं ने एकर के महान दुर्ग पर सन् 1191 में कब्जा कर लिया किन्तु फिलिप ऑगस्तस चूँकि रिचर्ड की बढ़ती लोकप्रियता से जलने लगा था इसलिए वह अस्वस्थता का बहाना बनाकर वापस लौट गया। शारीरिक अस्वस्थता तथा सेना में पलायन के कारण रिचर्ड अब इतना शक्ति सम्पन्न न रहा था कि जेरूसलम पर कब्जा कर पाता अतः उसने सलादीन के साथ एक सन्धि कर ली जिसके अन्तर्गत जेरूसलम में ईसाईयों को मुक्त प्रवेश की सुविधा मिली।

पोप इनोसेंट तृतीय ने फ्रांस के कुछ अभिजात वर्गों को चतुर्थ क्रूसेड की अनुमति तो दे दी परन्तु चूँकि यह वर्ग वेनेशियंस को यातायात का खर्च दे पाने में असमर्थ था, धर्मयोद्धा इस बात पर राजी हुए कि पहल वे जारा पर कब्जा जमाने तथा एलक्सियस को सिंहासनारूढ़ करने में उनकी मदद करेंगे। दोनों ही प्रयास सफल हुए परन्तु सन् 1204 में अलेक्सियस के तख्तापलट के बाद धर्म योद्धाओं ने कोंस्तांतिनोपल पर कब्जा कर उसे निष्ठुरतापूर्वक लूटा। क्रूसेड पवित्र भूमि तक तो न पहुँच पाया परन्तु बॉस्फोरस पर इसने एक लैटिन साम्राज्य की स्थापना जरूर की जो सन् 1261 तक बरकरार रहा।

पंचम क्रूसेड (1218-21) की घोषणा इनोसेंट तृतीय ने सन् 1215 में की परन्तु यह सफल रहा क्योंकि धर्मयोद्धा किसी मिस्री अभियान में जा जुटे, जो कि बुरी तरह विफल रहा।

छठे क्रूसेड का नेतृत्व बादशाह फ्रेडरिक द्वितीय ने किया। मामूली से युद्ध के बाद सन्धि हो गई जिसके तहत जेरूसलम, बेथलेहम तथा अन्य शहर ईसाईयों को सौंप दिए गए।

तुर्कों ने जेरूसलम पर जब सन् 1244 में फिर से अधिकार कर लिया तो फ्रांस के लुई नवम ने सातवें (1248-54) तथा आठवें (1270-72) क्रूसेड का नेतृत्व किया। सातवें में उसे मिस्त्र में बन्दी बना लिया गया तथा आठवें में वह प्लेग से 'जेरूसलम, जेरूसलम' बुदबुदाते मौत की नींद सो गया।

क्रूसेड की अत्यन्त दुःखद घटना तो वह है जहाँ धर्मांधता के अतिरेक में वेन्डोम के एक गड़ेरिया बालक स्टीफेन ने सन् 1212 में बच्चों के क्रूसेड का नेतृत्व किया जिसमें बारह वर्ष और कम आयु के तीस हजार बच्चों ने भाग लिया। राह की दुश्वारियों और जहाज के टूटने से हजारों बच्चों की जान चली गई और पाँच जहाजों में भरकर हजारों बच्चों को बतौर गुलाम बेईमान व्यापारियों द्वारा बेच दिया गया। इसके ठीक बाद एक जर्मन बालक निकोलस के नेतृत्व में 20 हजार बच्चों की एक और फौज का भी यही हश्र हुआ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्तिगत शौर्य तथा समर्पण के अलावा क्रूसेड का इतिहास जलन, लालच तथा विश्वासघात से भरा है। आधुनिक इतिहासकार सर स्टीवन रून्सिमैन ने तो इसे 'भगवान के नाम पर असहिष्णुता का लम्बा कारनामा' की संज्ञा दी है।

इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि क्रूसेड के प्रति भावनात्मक जुनून पैदा करने में चर्च की भूमिका सबसे अहम थी। चर्च ने क्रूसेड के महत्त्व और गौरव का बढ़ा-चढ़ाकर कुछ इस तरह बखान किया कि लोगों में क्रूसेड में हिस्सा लेने के लिए होड़ सी लग गई। सन् 1095 में क्लेरमोन्ट में पोप अरबन द्वितीय ने बड़ी चतुराई से लोगों की धार्मिक भावना का फायदा उठाते हुए उनमें धार्मिक उन्माद पैदा किया।

पोप के इस आह्वान से लोगों में ऐसा धार्मिक जुनून पैदा हुआ कि लोग क्रूसेड में भाग लेने के लिए पागल हो उठे। इस धार्मिक जुनून से लोगों के कई तरह के स्वार्थ भी जुड़े हुए थे। परलोक सुधारने के साथ इहलोक भी सुधरता दिखाई पड़ रहा था। तत्कालीन यूरोप में सामन्तों और कुलीन वर्ग के लोगों ने गरीब तबके के लोगों को बड़ी संख्या में दास बनाया हुआ था। उनके साथ जानवरों से बदतर व्यवहार किया जाता था और उन पर तरह-तरह के अत्याचार किए जाते थे। और यह सब धर्मसम्मत था। क्रूसेड ने दासों को मुक्त होने का सुनहरा अवसर दिया और बड़ी संख्या में दासों ने क्रूसेड में भाग लिया।

इसी प्रकार, कर्ज में डूबे लोगों को भी क्रूसेड एक मुक्ति का मार्ग दिखाई दिया। चरित्रहीन, अत्याचारी, मनचले, महत्त्वाकांक्षी सामन्त स्वर्ग की लालसा में क्रूसेड में शामिल हुए। स्वर्ग के साथ इहलोक के भौतिक कारण भी जुड़े हुए थे। क्रूसेड के लिए चले सामन्तों ने रास्ते में काफी लूटपाट की। ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि कई सामन्तों ने रास्ते में जागीरें हथिया लीं और जेरूसलम पहुँचने की बजाय जागीरदार बन वे वहीं बस गए।

मानव जाति के इतिहास का यह सबसे शर्मनाक और हृदयद्रावक अध्याय है, जो धर्म के नाम पर जुड़ा। वैसे क्रूसेडों का इतिहास ही धर्म के नाम पर काले धब्बों के रूप में याद किया जाएगा। धार्मिक असहिष्णुता का यह लम्बा अध्याय आपसी द्वेष, विश्वासघात, लोभ, हिंसा, बर्बरता से भरा पड़ा है। भले ही क्रूसेडों ने लाखों ईसाईयों और मुसलमानों की बलि ली, यूरोप की भूमि खून से लाल हो गई, दासों और श्रमिकों के अभाव में खेत बंजर हो गए, यूरोप

तबाह हो गया, पर चर्च फायदे में रहा। अचल सम्पत्ति और खेती की जमीन की कीमतों के गिरने का लाभ चर्च ने उठाया। इस दौरान घटी कीमतों पर चर्च ने बेशुमार जमीन-जायदाद खरीदी। यूरोप के आम आदमी की कीमत पर चर्च की आर्थिक सम्पन्नता बढ़ी।

यूरोप का मध्ययुगीन इतिहास गरीबी, जहालत और युद्धों का इतिहास रहा। राजा, छोटे-बड़े सामन्त अपना प्रभाव विस्तार करने, राज्य और जागीर की सीमा बढ़ाने और आपसी वैमनस्य से उपजे बैर का बदला चुकाने के लिए युद्ध करते रहे और खून की होली खेलते रहे। इस खून की होली में चर्च की महत्त्वपूर्ण और अधिकांशतः निर्णायक भूमिका रही। गरीब जनता के शोषण के लिए चर्च, राजा और सामन्त एकजुट थे और एक दूसरे के स्वार्थ की रक्षा करते थे। यह स्पष्ट है कि यह स्वार्थ आध्यात्मिक नहीं भौतिक थे-अर्थ से जुड़े हुए। उनकी बराबर यह संयुक्त चेष्टा रही कि जनता अज्ञान के गर्त में पड़ी रहे ताकि उनका वर्चस्व बना रहे और वे बेरोक-टोक उनका शोषण करते रहें। इन्होंने धर्म और ईश्वर को अपनी स्वार्थ पूर्ति का कारगर हथियार बनाया। धर्म और ईश्वर का भय जनता को मूर्ख बनाने का सबसे आसान नुस्खा रहा है। इसके लिए यह आवश्यक है कि लोगों में धर्म के प्रति अन्धास्था बनी रहे। इसलिए जब भी किसी ने धर्म-ईश्वर को लेकर शंका की, यहाँ तक कि उसमें सुधार की चेष्टा की, उसे पूरी शक्ति के साथ कुचला गया।

ऐसा नहीं कि ऐसा ईसाई सम्प्रदाय में ही हुआ हो। हम पाते हैं कि हर धार्मिक सम्प्रदाय में ऐसा हुआ। सबका इतिहास लगभग एक जैसा रहा, केवल देश, काल, पात्र बदलते रहे।

यहूदियों पर हिटलर के नेतृत्व में नाजियों द्वारा किए गए नृशंस अत्याचारों के बारे में काफी कुछ लिखा गया। पर यह कम लोग जानते हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले भी यहूदियों पर धर्म के नाम पर ईसाई और इस्लाम के अनुयायी सदियों से अत्याचार करते रहे थे। पहले लिखा जा चुका है कि क्रूसेड के दौरान 'धर्मयोद्धाओं' द्वारा यूरोप में यहूदियों के गाँव-के-गाँव जलाए गए, उन्हें मौत के घाट उतारा गया।

सन् 1290 में इंग्लैंड में यहूदियों पर हिंसात्मक आक्रमण किए गए और उन्हें इंग्लैंड से निर्वासित करने का प्रचंड अभियान चलाया गया। सन् 1306 में फ्रांस में इसकी पुनरावृत्ति हुई। स्पेन में विधर्मियों के विरूद्ध चलाए गए अभियान में मुसलमानों के साथ यहूदी भी हिंसात्मक दमन का शिकार हुए।

चर्च के बढ़ते प्रभाव के साथ जनता पर उसके अत्याचारों का सिलसिला भी जोर पकड़ता गया। चर्च द्वारा पैदा हुई घुटन से उभरने के लिए लोगों में, विशेषकर विवेकशील, शिक्षित लोगों में, विद्रोह की भावना भीतर-ही-भीतर सुलगती रही जो बीच-बीच में उभरकर सामने आती रही। कभी-कभी राजा और चर्च के स्वार्थों में भी टकराव होने लगा। इन सबका नतीजा यह हुआ कि चर्च का निरंकुश एकाधिकार विघटित होने लगा। विद्रोहियों, सुधारवादियों के अपने अलग सम्प्रदाय और चर्च होने लगे। इनमें भी सदियों तक हिंसक टकराव हुए और एक-दूसरे के समूल नाश की भावना के साथ अनेक युद्ध हुए। इनमें कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्टों को लेकर फ्रांस और स्पेन के बीच 72 वर्षों तक युद्ध चला (सन् 1555-1648)। फ्रांस में कैथोलिक और हुगनोट्स के बीच छत्तीस वर्षीय युद्ध, विशेष उल्लेखनीय हैं। धर्म के नाम पर हुए अन्य युद्धों की तरह इन युद्धों में भी, सामने भले ही धर्म रहा हो, पर उनके पीछे असली कारण आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं वैयक्तिक स्वार्थ थे।

चर्च द्वारा स्थापित मान्यताओं, कर्मकांडों और चर्च के बढ़ रहे निरंकुश अत्याचार और अनाचार के विरूद्ध प्रतिरोध का स्वर इसके प्रारम्भिक काल से ही उभरने लगा था। दसवीं सदी से यह जोर पकड़ने लगा। चौदहवीं सदी आते-आते विद्रोह एक संगठित शक्ति के रूप में उभर चर्च को चुनौती देने लगा।

इजिप्ट के पादरी एरिअस (सन् 256-336)

द्वारा ईसा के सम्पूर्ण दैवी स्वरूप को नकारने के फलस्वरूप उसे चर्च का कोपभाजन बनना पड़ा था और काऊन्सिल ऑफ निसिआ (Necaea) ने उसकी भर्त्सना की थी। दसवीं सदी में युरोप के बाल्कन क्षेत्र में कथारों ने चर्च को चुनौती दी। सन् 1170 में फ्रांस के शहर लिओन्स के एक व्यापारी पीटर वाल्दो ने वाल्देन्सस (Waldenses) मत की स्थापना की। उन्होंने चर्च की निरंकुशता को चुनौती दी। यहीं से प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय की नींव पड़ी। अंगेज सुधारक जॉन विक्लिफ (1320-84), बोहेमिया के जॉन हुस (1373-1415), जो जर्मनी में है, प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय की स्थापना करने वाले जर्मनी के मार्टिन लूथर (1483-1546) आदि सुधारकों ने चर्च के स्वरूप को जनोन्मुखी बनाने और ईसाई धर्म को प्रगतिशील रूप देने के प्रयास किए। इन चुनौतियों से चर्च को अपने स्वार्थों पर खतरा महसूस हुआ। इनके अनुयायियों की बढ़ती हुई संख्या से चर्च भयभीत हो उठा। जॉन हुस को सन् 1414 में काउन्सिल ऑफ कॉन्स्तान्स द्वारा उपस्थित होने का आदेश हुआ, जहाँ उसने पोप के अधिकार को अस्वीकार करते हुए जॉन विक्लिफ का समर्थन किया। इसके लिए उसे जिन्दा जलाने की सजा दी गई और सन् 1384 में मृत्यु को प्राप्त हुए जॉन विक्लिफ के कंकाल को कब्र से निकालकर उसकी हड्डियों को फैंकने का आदेश दिया गया।

इसके पहले सन् 1377 में पीटर वाल्दो और जॉन विक्लिफ के अनुयायी लोलार्डपन्थियों को विधर्मी करार देकर चर्च ने जिन्दा जलाने का धर्मादेश दिया।

पहले बताया जा चुका है कि ट्रिनिटि और न्यू टेस्टामेंट को लेकर मतभेद तीसरी शताब्दी आते-आते अत्यन्त तीव्र हो उठे थे। सन् 325 में एरिअस की भर्त्सना के बाद उसके अनुयायियों को अथनासिअस (Athanasius, 296-373) और सिकन्दरिया के बिशप के नेतृत्व में हुए लम्बे संघर्ष के बाद ही दबाया जा सका।

एक ही धर्म के अनुयायी होने के बावजूद राजाओं के स्वार्थों में टकराव होने के कारण उनमें आपस में युद्ध होता रहता था। पोप और राजाओं के बीच संघर्ष के अनेक उदाहरण मिलते हैं। ऐसे सम्राट और राजा भी हुए जिन्होंने पोप की सत्ता को चुनौती दी। ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं कि पोप ने राजा को धर्मच्युत किया, तो राजा ने पोप के समानान्तर प्रतिद्वन्द्वी पोप नियुक्त कर दिया और कहीं तो स्वयं को ही चर्च का मुखिया नियुक्त कर लिया।

सम्राट फ्रेडरिक (1124-90) को पोप अलेक्जेन्डर तृतीय ने सन् 1160 में ईसाई सम्प्रदाय से बहिष्कृत कर दिया। प्रत्युत्तर में फ्रेडरिक ने भी प्रतिद्वन्द्वी पोप नियुक्त कर दिया। ज्ञात रहे, सम्राट फ्रेडरिक ने ही तीसरे क्रूसेड का नेतृत्व किया था और नदी पार करते समय डूबकर मृत्यु को प्राप्त हुए थे। इसी प्रकार हेनरी अष्टम (1509-47) ने पोप से मतभेद होने पर स्वयं को चर्च का मुखिया घोषित कर चर्च ऑफ इंग्लैंड के ईसाईयों के बीच निरन्तर खूनी संघर्ष चलता रहा है। हेनरी अष्टम का कैथोलिक रोमन चर्च से मतभेद के पीछे कोई धार्मिक या सैद्धान्तिक कारण नहीं था। विशुद्ध व्यक्तिगत कारण था। हेनरी अष्टम ने अपने भाई की विधवा कैथराइन से जो उससे उम्र में बड़ी थी, विवाह किया। पर दोनों में निभी नहीं और न ही उनके कोई सन्तान हुई। हेनरी ने कैथराइन को तलाक देकर अपनी प्रेमिका एनी (Anne) से विवाह करना चाहा। पोप ने तलाक और पुनर्विवाह की अनुमति नहीं दी। इस प्रकार क्रुद्ध हेनरी ने अपने राज्य को रोमन कैथोलिक चर्च से अलग कर लिया और स्वयं इंग्लैंड के चर्च का मुखिया बन बैठा।

भले ही राजा-राजा आपस में लड़ते रहे हों, पोप और राजाओं में संघर्ष होता रहा हो, लेकिन नास्तिकों, विधर्मियों और सुधारकों पर दमन उत्पीड़न करने के प्रश्न पर कोई पीछे नहीं रहा, क्योंकि इनसे सबको खतरा था। इनके वर्चस्व को चुनौती देने वालों और विवेक, ज्ञान और जिज्ञासा की बात करने वालों को इन्होंने कभी बर्दाश्त नहीं किया। उन पर संगठित रूप से आक्रमण और अत्याचार किए। अनीश्वरवादियों, सुधारकों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए सम्राट

फ्रेडरिक द्वितीय ने सन् 1232 में विशेष धार्मिक न्यायालय (The Inquisition) की स्थापना की, जिसके सदस्य पादरी और बिशप होते थे। पोप ग्रेगोरी दशम (Pope Gregory) ने इसे धर्मसम्मत बताते हुए मान्यता दी। सन् 1252 में इन न्यायालयों को यह अधिकार भी प्राप्त हो गया कि ये शारीरिक यातना देकर लोगों से पाप स्वीकारोक्ति (Confession) कराकर उन्हें दडित करें। कई देशों में इस तरह की अदालतें स्थापित की गईं। इनमें स्पेन में स्थापित न्यायालय विशेष उल्लेखनीय है। सम्राट फर्डिनेन्ड (Ferdinand) एवं महारानी इसाबेला प्रथम (Isabella I) द्वारा सन् 1479 में स्पेन के मूर (मुसलमान) और यहूदियों पर अभियोग लगा, सजा देने के लिए इसकी स्थापना की गई। बाद में इस श्रृंखला में प्रोटेस्टेन्ट भी शामिल किए गए। यहूदियों, मुसलमानों और प्रोटेस्टेन्टों के विरूद्ध इसके तहत स्पेन में चला अत्याचारों का सिलसिला सन् 1834 तक जारी रहा। महारानी इसाबेला प्रथम के कुख्यात राज्याधिकारी तोमसदे तोर्क्यमादा (1420–98) के आदेश से सन् 1483 में कम–से–कम 2000 विधर्मियों को जिन्दा जलाया गया। उसने यहूदियों को बड़े पैमाने पर स्पेन से निष्कासित करवाया जिसके फलस्वरूप स्पेन की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल हो गई। 24 जुलाई, 1557 में फ्रांस में फतवा दिया कि जो परम्परावादी कैथोलिक नहीं है, वह मृत्यु–दंड का अधिकारी है। यह फतवा एडिक्ट ऑफ कम्पीन (Adict of Compeene) के नाम से प्रसिद्ध है। नवम्बर 1559 में यह आदेश जारी किया गया कि जो प्रोटेस्टेन्टों के प्रवचनों में उपस्थित हों, उन्हें भी मौत के घाट उतारा जाए; उनके घर जला दिए जाएँ और जले हुए घरों को कभी न बनने दिया जाए। प्रोटेस्टेन्टों की संगतोंकी खबर देने वालों को क्षमादान के साथ पाँच सौ लिवटेस नकद देने की घोषणा की गई। छत्तीस वर्षो तक निरन्तर प्रोटेस्टेन्टों के विरूद्ध हिंसक अभियान चला। फ्रांस में ये प्रोटेस्टेन्ट हुगनोत कहलाते थे।

1 मार्च, 1552 को गुइज के ड्यूक (Duke of Guise) शहर के बाहर सैर पर जा रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ प्रोटेस्टेन्ट प्रवचन कर रहे हैं। बिना किसी चेतावनी के डयूक और उसके अंगरक्षकों ने निहत्थे प्रोटेस्टेन्टों की हत्या कर दी और कहा, ''इन्हें ईश्वर के पास भेजा जा रहा है।'' 17 सितम्बर, 1575 को पेरिस में फ्रांस की सम्राज्ञी कैथराइन के आदेश से पच्चीस हजार हुगनोतों की हत्या की गई। नरसंहार का यह सिलसिला फ्रांस के अन्य प्रान्तों में 3 अक्तूबर, 1575 तक चला। इस नृशंस हत्याकांड की अपराधिनी सम्राज्ञी कैथराइन को समस्त कैथोलिक राज्यों ने बधाइयाँ दीं और पोप ने कैथराइन को इस 'महान धार्मिक कृत्य' के लिए पदक प्रदान किया।

7 अगस्त, 1572 को, केवल पेरिस शहर में घरों से निकलकर हजारों की संख्या में प्रोटेस्टेन्टों को मारा गया। फ्रांस के अन्य प्रान्तों में भी यही हुआ। चालीस वर्षो तक फ्रांस के कैथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों के बीच चले गृहयुद्ध में लाखों लोग मारे गए और फ्रांस की माली हालत बिगड़ती चली गई। केवेन्नस (Cevennes) में हुए युद्ध में हुगनोत जीते, तब कहीं जाकर समझौता हुआ। हेनरी अष्टम जब सन् 1558 में फ्रांस का राजा बना तब हुगनोतों को धार्मिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता प्रदान की गई। पर सम्राट लुई चौदह ने सन् 1785 में अपने मन्त्री लोविस (Louvis) के प्रभाव में आकर हुगनोतों के विरूद्ध फतवे को फिर जारी किया और उन्हें जबरन ध र्मान्तिरण का आदेश दिया। इस पर कम–से–कम चार लाख हुगनोतों ने फ्रांस से भागकर इंग्लैंड और हॉलैंड में शरण ली। अन्त में सन् 1789 में फ्रांस की राज्य क्रान्ति से इस टकराव का अन्त हुआ। राज्य और चर्च के संयुक्त निरंकुश शासन से फ्रांस सदियों आक्रान्त रहा जिसके परिणामस्वरूप जनता में राजा और चर्च के प्रति वितृष्णा और घृणा से उत्पन्न आक्रोश का ज्वालामुखी सन् 1789 में फ्रांस की राज्य क्रान्ति के रूप में फटा। ज्ञात रहे, राज्य क्रान्ति के दौरान जनता के घृणापूर्ण आक्रोश का शिकार सम्राट लुई सोलहवाँ ही नहीं वरन चर्च, पादरी और इसके संरक्षक अभिजात और कुलीन सामन्त भी हुए। इस राज्य क्रान्ति की वैचारिक जमीन तैयार करने में वाल्तेयर, मान्तेस्क्यू और रूसो जैसे प्रखर दार्शनिकों की लेखनी की अहम भूमिका रही।

कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के बीच यूरोप में चले मतभेद और हिंसात्मक संघर्ष की परिणति मध्य यूरोप में तीस वर्षीय युद्ध (1618–48) में हुई।

धर्म के नाम पर पुस्तक से–

शेष अगले अंक में ...

मेरे देश के बच्चे

देश को आजाद हुए लगभग 65 वर्ष हो चुके हैं परन्तु देश के बच्चे जिनको देश का भविष्य माना जाता है, लाखों-करोड़ों की गिनती में अंधेरी गलियों, झुग्गियों, झोंपड़ियों यहां तक कि सड़क की पटरियों पर शरण लिए देखे जा सकते हैं। इनके हिस्से में न पेट भर अन्न है, न चिकित्सा की सुविधा और न ही शिक्षा की रोशनी है। इनको घरेलू नौकर के रूप में 18-18 घंटे काम करना पड़ता हैं। इनके बचपन की सारी खुशियां छीन ली जाती हैं और बाल कानून की सरेआम धज्जियां उड़ाई जाती हैं। जूठन धोते-धोते बचपन बीत जाता है। चाय के ढाबों पर बगैर किसी आराम के लम्बी सेवा करनी पड़ती है। कूड़े के ढेरों पर प्लास्टिक की थैलियां बिनते हुए देखा जा सकता है। किसी लकड़ी में चुम्बक बांधे लोहे के कचरे इकट्ठे करते हुए भी इनको देखा जा सकता है। रेलगाड़ियों में सांग रचाए कच्चे मिट्टी के ठीकरों पर संगीत की धुने निकालते इन बच्चों को प्रायः देखा जा सकता हैं। मैंने गया रेलवे स्टेशन पर पतलों से झूठन चाटते हुए इन मासूम बच्चों को स्वंय अपनी आंखों से देखा है। छोटी उम्र में ही कुली का काम करते हुए भी इनकी लाचारी को देखा है। गलीचा-फैक्टरियों में बन्धुआ मजदूरों की तरह बच्चों का प्रयोग किया जाता है। दियासलाई और बीड़ी उद्योग में भी इन बच्चों से कड़ा काम लिया जाता है। हीरा उद्योग में भी नन्हें बच्चों से रगड़ाई का काम लिया जाता है। इस काम में इनके नन्हें हाथों की कोमल ऊंगलियां तक जख्मी हो जाती हैं। कांच उद्योग में गैसों के कारण इनके फेफड़े खराब हो जाते हैं और इनको कइ्र प्रकार के श्वसन सम्बन्धी रोग लग जाते हैं। कोर्ट-कचहरियों में, वकीलों के चैम्बरों में इन बच्चों को चाय परोसते देखा जा सकता है। कानून के रखवालों के सामने ही बाल-कानून का चीर हरण होता है। छोटे-छोटे बच्चे बूट-पालिश करते हुए भी प्रायः देखे जा सकते हैं। इतना ही नहीं ये बूट-पालिश करवाने के लिए अपने ग्राहकों के सामने गिडगिड़ाते हैं कि इनको पालिश का काम मिल जाए। इनके दर्द को देखकर किसी का मन नहीं पसीजता उल्टा कुत्ते की तरह इनको दुत्कार दिया जाता है।

बाल-मजदूरी के खिलाफ कानून तो बन गया है पर कानून के निर्माताओं ने यह नहीं सोचा कि आखिर बाल-मजदूरी करने पर विवश क्यों हैं? अगर उनसे यह मजदूरी छीन ली जाए तो उनको और उनके मां-बाप को भूखे मरने के लिए विवश होना पड़ेगा। सर्दी के मौसम में ठिठुरती सर्दी के अन्दर फटेहाल वस्त्रों में एक चार साल की लड़की और छः साल के लड़के को सड़क के किनारे छोटी-छोटी लकड़ियां इकट्ठी करते देखा तो मैं भावुक हो उठा। मैंने अनुमान लगाया कि ये बच्चे लकड़ियां इकट्ठी करके घर ले जाएंगे तब इनके घर का चुल्हा जलेगा और खाने का कुछ प्रबन्ध हो पाएगा। सामने ही मंदिर के दरवाजे पर पीली धोती पहने एक पुजारी खड़ा था। मैंने इस पुजारी से जब संकेत करके इन बच्चों के बारे में बताया तो पुजारी का उत्तर था, ''यह सब चलता है।'' उसके दिमाग में समाज के प्रति किसी प्रकार की कोई चिन्ता न थी। कर्मों का फल कहकर बात को टाल दिया। पुजारी जैसे लोगों का भक्तों के द्वारा चढ़ाए गए हलवा-पूरी और चढ़ावे से मतलब रहता है। इससे आगे समाज की समस्याओं से उनका कोई लेना-देना नहीं होता।

इसी प्रकार मैंने एक बार बाजार में दो बच्चों को देखा जो शायद भाई-बहन थे। इनके पास एक थाली और मांगने के लिए एक कटोरा था। भाई थाली बजाता और बहन पांव में घुंघरू बांध उल्टी सीधी कमर मटकाती। इसके बाद एक लोहे के रिंग से एक करतब दिखाती। तमाशा खत्म होने पर कटोरे की सहायता से भीड़ से पैसे मांगते। जब खेल-तमाशा खत्म हुआ मैंने उन दोनों बच्चों को अपने पास बुलाया; उनको चाय पिलाई। उनसे

पूछा कि तुम हर रोज कितने किलोमीटर सफर कर लेते हो। उन्होंने बताया कि इसका हमारे पास कोई सटीक जवाब नहीं। हम तो इतना जानते हैं कि सवेरे ही मां-बाप हमें घर से भूखे निकाल देते हैं और मांगे गए पैसों से ही हम नाश्ता करते हैं। शाम को जब थके हारे घर पहुंचते हैं तो जितने भी पैसे हमारे पास होते हैं; हमारा बाप हमसे छीन लेता है। इन पैसों से वह शराब लेकर आता है। शराब पीकर नशे की हालत में वह हमारी मां को गन्दी गालियां निकालता है और उसके साथ मार-पीट करता है। इन बच्चों की बात सुनकर मेरा मन भर आया और मैं सोचने पर विवश हो गया कि मां अपने शराबी पति से क्यों गालियां सहती है और मार-पीट क्यों बर्दाश्त करती है। आखिर इन बच्चों का क्या दोष है? जो दिन भर सड़कों पर भटकते हैं। बार-बार मेरे मस्तिष्क में ये प्रश्न टकरा रहे थे कि क्या इन जैसे बच्चों के जीवन में भी कभी रोशनी की किरण आएगी? कब समाज बदलेगा? कब इन बच्चों और इनके परिवार को बुनियादी सुविधाएं मिलेंगी?

ऐसी कितनी ही कहानियां हर गली-मुहल्ले में देखने को मिल जाएंगी। विशेषकर अंधेरी गलियों और झुग्गी-झोपड़ियो में। कितने ही लोगों को अपराध की दुनियां में धकेल दिया जाता है। वे अपराधी बनकर एक अस्वस्थ समाज को जन्म देते हैं जहां दया और सहानुभूति का कोई नाम नहीं होता। चोरी, डकैती, छीना-छपटी, बलात्कार जैसी घटनाए ऐसे समाज में प्रायः घटती रहती हैं। कई तरह के अवैध धंधे इन बच्चों की मार्फत चलाए जाते हैं। कम उम्र की लड़कियों को भी देह व्यापार के लिए कोठों पर बिठा दिया जाता है। कानून के रखवाले भी इन स्थानों से अपनी जेबें भरते हैं। राजनीतिक लोग भी इन बातों का ज्ञान होते हुए भी अनजान बने रहते हैं या अनजान होने का स्वांग करते हैं। वे तो सत्ता में बने रहने के लिए जनता को प्रलोभन देते रहते हैं और मूल समस्या की ओर कोई ध्यान नहीं देते। धर्म, भाषा, क्षेत्रवाद का सहारा लेकर आम जनता को उनके बुनियादी हकों से दूर रखा जाता है। इससे बचपन भी पिसता है। बच्चों के प्रति गैर जिम्मेदार सरकारें बनती हैं परिणाम यह होता है कि बच्चों का भविष्य अंधकारमय बन जाता हैं। जिससे देश अंधकार में भटकने लगता है। यदि हम देश का भविष्य उज्जवल देखना चाहते हैं तो हमें अपराध की दुनियां में लिप्त बच्चों, अधेरी गलियों में भटकते बच्चों को उनका बचपन उनको वापिस दिलाना होगा।

उत्तर-प्रदेश के नगर सहारनपुर में लकड़ी उद्योग में भी बच्चों को छैनी-हथौड़ा लिए लकड़ी को गढ़ते देखा जा सकता है। ये लकड़ी पर फूल-पत्ती आदि तराशते है। यह सारा काम सरकार की आंखों के सामने होता है परन्तु नेताओं की आंखे इनको देखना ही नहीं चाहती। उनकी नजर तो जनता के वोट पर रहती है। गरीबी के दलदल में फंसे इन मासूम बच्चों की सुध लेने वाला कोई नहीं। मां-बाप को भी बच्चों की मजदूरी से मतलब है। उनके अंधेरे भविष्य की उनको भी चिन्ता नहीं। इसलिए दायित्व बनता है उन बुद्धिजीवी इन्सानों का जिनको समाज की चिन्ता है। सब मिलकर इस युग को पलटें और एक ऐसे समाज का निर्माण करें जहां किसी का बचपन न छीना जाए। देश का हर नागरिक आजादी का सही लाभ उठा सके यह तभी संभव हो पाएगा जब हम देश के सभी बच्चों को देश का भविष्य समझे और उनका भविष्य उज्जवल करने के लिए एक विचार क्रांति का उद्भव हो। वैज्ञानिक सोच अपना कर भाग्यवाद की दीवारों को तोड़ना होगा। तभी जाकर देश का भविष्य सुरक्षित रह सकता है। इससे मानव द्वारा मानव का शोषण बन्द होगा और हम एक नए युग में प्रवेश करेंगे। आओ सब मिलकर इसके लिए प्रयास रत हों।

आर.पी. गान्धी, 50, लक्ष्मी नगर,
यमुना नगर, मोबाइलः 9315446140

व्यंग

भक्त और भगवान में साक्षात्कार

मैं एक दिन भगवान की पूजा करने भगवान के घर यानि मंदिर में गया। जहां भगवान से साक्षात्कार होता है।

भक्तः हे भगवन, हमें गरीबी और दास्ता से मुक्ति दिला दें।

भगवनः यदि मुक्ति का मार्ग दरअसल में जानना चाहते हो तो मेरी पूरी व्यथा सुनो और मैं जो बताऊंगा यह किसी पंड़े-पुजारियों और धर्माचाय। से भूलकर भी मत कहना। तुम समझते हो कि जो तुम पुजा, अर्चना, मंदिर में देते हो वो वाकई मेरी होती है? यह तो पंडे पुजारी की होती है। हम तो केवल कमाई का माध्यम हैं।

भक्तः लेकिन मंदिर तो आपका घर है प्रभु?

भगवनः अरे मूर्ख तुम्हें पता नहीं हे यह मेरा घर नहीं है मैं तो वहां बंधक बनाकर रखा हूं। मैंने बहुत कोशिश की यहां से भागने की, लेकिन दिन में भागने का मौका नहीं मिलता और रात में ताले बंद रहते हैं।

भक्तः भगवन, आप में अपार शक्ति है, अंतर्यामी हैं ताले तो क्या दुनिया को प्रलय कर सकते हैं।

भगवनः अरे मूर्ख भक्त तुम्हें पता नहीं मैं जो निर्जीव पत्थर का मूरत हूं तुम्हारे जैसे इंसान ने ही पत्थर को छेनी-हथौड़ी से काट-छांटकर भ्गवान (ईश्वर) का रूप दिया है। पंडितों ने माण-प्रतिष्ठा दिया, उस दिन से भोले-भाले भक्त मेरी पूजा-अर्चना करते हैं, मुझसे सम्पदा मांगते हैं तुमको जानना होगा कि मरनासन्न इंसान में दो घंटे के लिए प्राण-प्रतिष्ठा देकर जिन्दा नहीं किया जा सकता लेकिन हजारों वर्षो तक पत्थर की मूरत में प्राण-प्रतिष्ठा करना पाखंड नहीं तो क्या है।

भक्तः भगवन हमारे देश में बड़े-बड़े तीर्थधाम हैं इसमें बड़ी शक्ति है ऐसी मान्यता है।

भगवनः सुनो भक्त मैंने तुम्हें पहले ही बताया था कि मेरे जैसे ईश्वर देवता, भगवान को तुम्हीं ने ही बनाया है। इसमें प्रमाणित होता है कि मनुष्य ने ही भगवान को बनाया है, भय से भगवान, अज्ञानता का नाम ईश्वर है पंडित राहुल संकृत्यायन। इतिहास गवाह है, सन 1024 ई.में गुजरात के सोमनाथ के मंदिर पर मु०गजनी ने चढ़ाई की थी। पंड़े-पुजारियों ने कहा भगवान शिव त्रिनेत्र खोलेंगे हमलावर जल कर भस्म हो जायेंगे, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ, मु०गजनी पंड़े-पुजारियों को कत्ले आम कर मंदिर को लूट लिया। कहां गयी शिव, भगवान की शक्ति। अब तो मुझे मंदिर में सुख-शांति नहीं मिलती। क्योंकि अब तो चोरों का एक ऐसा गिरोह है जो अष्टधातुओं की मूर्तियां चुराकर स्वर्णकारों के हाथ अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेच दिया जाता है, कहां गयी शक्ति।

भक्तः भगवान, तो ये बताये कि तब तो मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारा सब झूठ है। हजारों वर्षो से लोग आस्था से जुड़े हैं।

भगवानः देखो भक्त हमारे देश के 99 प्रतिशत लोग आंखों से नहीं बल्कि अक्ल से अंधे हैं। अंधभक्ति, अंधश्रद्धा, अंधविश्वास देश की जबर्दस्त बीमारी है। पूर्व न्यायाधीश माननीय काटजु ने कहा 90-95 प्रतिशत भारतीयों के मूर्खता के दस प्रमाण। अभी हाल ही में एक फिल्त दिखायी जा रही है। 'ओ माई गोड' जरूर देखें, आंख खुल जाएगी। तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, भूत-प्रेम, ओझा, झाड़-फूंक, गंडा, ताबीज, मुहूर्त, ज्योतिषी अंधविश्वास है।

भक्तः भगवान, लोग कहते हैं कि कण-कण में भगवान हैं मंदिर में जाने की क्या जरूरत है।

भगवानः सुनो भक्त कण-कण में भगवान नहीं

बल्कि कण-कण में विज्ञान है, भगवान तो पंड़ितों की दुकान है। आज हम शिक्षा, टैक्नोलॉजी स्वास्थ्य, कृषि के क्षेत्र में विकास कर रहे हैं यह सब विज्ञान का चमत्कार है भगवान का नहीं। विज्ञान को समझने के लिए डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत क्यों, कहां और कैसे जानना जरूरी है।

भक्तः भगवान, मुहूर्त ज्योतिषी क्या है?

भगवानः सुनो भक्त अच्छे मुहूर्त में शादी होने के बाद भी रिश्ता टूट जाता है। भगवान राम और सीता की शादी अच्छे मुहूर्त में हुई थी उसके बाद भी 14 वर्ष का बनवास और सीता को धरती में समा जाना ज्योतिष तो बिल्कुल झूठा है। 2012 में दुनिया समाप्त होने की घोषणा की गई थी, अभी 17 जून 2013 की घटना केदारनाथ, उत्तराखण्ड त्रासदी आपदा घटना में हजारों लोग मारे गये। दो दिन पहले की कोई ज्योतिषी जानकारी देता तो इतना बड़ा हादसा नहीं हो पाता। ज्योतिषी खुद भविष्य नहीं जानता है।

भक्तः भगवान, विज्ञान का इतना विकास होने के बाद भी अंधविश्वास बढ़ रहा है, जबकि आप कण-कण में व्याप्त हैं।

भगवानः सुनो भक्त जहां अशिक्षा है वहीं अंधविश्वास है, जहां अंधविश्वास है वहीं धर्म पनपता है, भारत में ज्यादातर अशिक्षा है, विज्ञान की कमी है। इसलिए (धर्मान्धता) का बोलबाला है। जैसे-जैसे विज्ञान, शिक्षा की बढ़ोतरी होगी। वैसे-वैसे अंधविश्वास, अंधश्रद्धा का खात्मा होगा। विज्ञानवादी चिंतन से लोग जुड़ेंगे वैसे ही भाग्य और भगवान से जनता का मोह खत्म होगा। देश के पूंजीपति सरकार और पूंजीपति वर्ग के लोग भाग्य और भगवान के नाम पर शोषण करते हैं इस व्यवस्था को समाप्त करने के लिए आंदोलन चलाना होगा। जिस प्रकार से गौतम बुद्ध, महाबीर, दयानन्द सरस्वती, कबीर, राजा राम मोहन राय, कॉपरनिकस, ब्रूनो, गैलिलियों ने किया था।

भंते बुद्ध प्रकाश

आस्तिक नास्तिक संवाद

डॉ. रणजीत , मो. 9019303518

''किस अभागे को अरे इस धूप मे दफ़ना रहे हो
और इसकी मौत पर क्यों खुशी से चिल्ला रहे हो
कौन है ऐसा बिचारा, दो बता?''
''मर गया ईश्वर, नहीं तुमको पता?''
''मर गया ईश्वर?
ईश्वर की जिसने स्वयं अपने हाथ से धरती बसायी
चांद औ' सूरज बनाये
पर्वत के, झीलों के, सागर औ' द्वीपों के नक्श उभारे
ऊँचे-ऊँचे गिरि-शिखरों पर बर्फ जमायी
औ' उनकी लंबी छाँहों में
नदियों के डोरों से सी कर
वन, उपवन, ऊसर, परती की भूरी-हरी थिगलियों वाले
कंथे से मैदान बिछाये-
ईश्वर कि जिसने आदमी पैदा किया
क्या वही अब मर गया?
''हां मर गया ईश्वर कि उसके त्रास सारे मर गये
सृष्टि के आरम्भ से चलते हुए
आदमी के खून पर पर पलते हुए
अन्याय के इतिहास सारे मर गये!
''मर गया ईश्वर कि उसके धर्म सारे मर गये
स्वर्ग-नरक के, पाप-पुण्य के
पुनर्जनम औ' कर्मवाद के मर्म सारे मर गये!
''मर गया ईश्वर, विषमता का सहायक मर गया
आदमी के हाथ में ही आदमी का भाग्य देकर
विश्व का दैवी विधायक मर गया
मर गया ईश्वर!''
''यह हुआ कैसे मगर?''
''साइंस की किरणों ने मारा, मर गया
वहम का पर्दा उघाड़ा, मर गया
आदमी ने जब तलक पूजा अंधेरे में उसे, जिन्दा रहा
रोशनी के सामने ज्यों ही पुकारा मर गया!''
''खैर, अच्छा था बिचारा, मर गया!''

डायन प्रथा से जूझता झारखण्ड

इक्सवीं सदी के भारत में आज जहां देशवासी दिन प्रतिदिन नित्य नए आयाम को छू रहे हैं वहीं झारखण्ड आज भी विभिन्न प्रकार की कुरितियों से जूझ रहा है। झारखण्ड को बने लगभग 13 साल हो गए हैं लेकिन आज भी डायन कुप्रथा के नाम पर औरतों खास कर विधवाओं को प्रताड़ित किया जा रहा है। गौरतलब है कि 15 नवम्बर 2000 को झारखण्ड राज्य के गठन के साथ ही राज्य में डायन प्रथा प्रतिबेध अधिनियम लागू कर दिया गया था। इस अधिनियम के अंतर्गत डायन का आरोप लगाने वाले पर अधिकतम तीन महीने कैद या फिर एक हजार रुपये के जुर्माना का प्रावधान है और किसी महिला को डायन बता कर प्रताड़ित करने पर छह महीने की कैद, दो हजार का जुर्माना या फिर दोनों की सज़ा का प्रावधान है।

झारखण्ड प्रदेश की सरकार के अनुसार ये कुरीति पूरी तरह ख़त्म हो गई है लेकिन आये दिन समाचार पत्रों में घटनाये आती रहती हैं।

झारखण्ड में पिछले 12 महीने में करीब 121 महिलाओं की हत्या डायन बता कर कर दी गई जाहिर है ऐसी घटनाओं में पंचायत से लेकर गांव वाले की मिली भगत रहती है, पुलिस इन मामलों में प्राथमिक दर्ज तो करती है लेकिन बात उससे आगे नहीं बढ़ पाती है। डायन बता कर महिलाओं को सावर्जनिक तौर पर मैला पिलाया जाता है, उसके बाल काट दिए जाते हैं, उन्हें निवस्त्र करके पूरे इलाके में घूमाया जाता है। आंकड़ों के मुताबिक झारखण्ड गठन होने के बाद से 2012 तक लगभग 1200 महिलाओं को डायन बता कर मार दिया गया।

कुछ महीनों पहले की एक घटना है जिसमें कोल्हान क्षेत्र में डायन बता कर तकरीबन 10 महिलाओं के जीव काट दिए गए थे। मई में लोहरदगा में 70 वर्षीय बृद्ध को डायन बता कर जला दिया गया था। हद तो तब हो जाती है जब परिवार के लोग भी डायन के नाम पर महिलाओं को प्रताड़ित करने लगते हैं ऐसे ही मामले में एक बेटे ने अपनी मां की कुल्हाड़ी मार कर हत्या कर दी थी। पुलिस के अनुसार वो अपनी मां पर डायन होने का संदेह करता था इसलिए अपनी पत्नी के साथ अपने ससुराल में रहा था। बेटे को शक था कि उसकी मां ने टोना टोटता करके उसके दो छोटे बच्चों की जान ले ली थी। बहुत मामले तो प्रकाश में आते ही नहीं हैं जोकि सुदूर आदिवासी बहुत क्षेत्र में होते हैं।

आखिर ये सब क्या हो रहा है? इसे रोकने की जवाबदेही किसकी है? देश को आजाद हुए 66 साल हो गए जहां लोग हर दूसरे दिन नए आविष्कार कर रहे हैं विज्ञान की नई ऊंचाईयां छू रहे हैं, और लोग पाषाण युग की तरह जी रहे हैं आदिम युग की तरह सोचने लगे हैं, अपनी नासमझी से मूर्खता की सारी हदें पार कर रहे हैं, इन्हें समझाने की जवाबदेही किसकी है? क्या इसी को झारखण्ड का विकास कह रहे हैं? यहीं भारत का निर्माण हो रहा है? जब पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम चल रहा था तो जोर शोर से एक नारा दिया गया था 'एक भी बच्चा छूटा सुरक्षा चक्र टूटा' क्या इसी तरह का नारा डायन कुप्रथा उन्मूलन में क्यों नहीं लागू किया जा सकता है।

आज के युग में जहां हम ऐसे तत्व को नकारते हैं वहीं दूसरी तरफ इन्हीं को स्वीकारते भी हैं जिससे समाज में इस तरह की घटनायें देखने को मिलती हैं। ऐसी घटनायें वहीं देखने को मिलती है जहां के लोग गरीब हैं, अशिक्षित हैं। सरकार ऐसी जगह पर विकास की दीप क्यों नहीं जला पाई? आज जरूरत है ऐसे ग्रामीण आदिवासी इलाके में जा कर उन्हें जागरूक करने की।

साभारः प्रवक्ता, कॉम

अब किसी धर्म की जरूरत नहीं

मनोज कुमार, राष्ट्रीय महामंत्री,
अर्जक संघ, 09431510239

पूरी दुनिया में तथाकथित बहुत सारे ध र्म हैं, जैसे-हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, सिख धर्म, इसाई धर्म, यहूदी धर्म, बौद्ध धर्म आदि। इन सभी धर्मों की अपनी-अपनी मान्यताएं और व्यवस्थाएं हैं। इन सभी के उत्पति काल, स्थान और विचारधाराएं भी अलग-अलग हैं। कोई भी विचारधारा एक दूसरे से प्रायः मेल नहीं खातीं। ध्यान से देखने पर प्रायः सभी धर्मों की नीति विस्तारवादी और साम्राज्यवादी रही है। सभी ध र्म राजनीति से चाहे जिना तौबा करें परन्तु सभी धर्म दीर्घकालीन राजनीति करते हैं। यह भी सही है कि दुनिया में सबसे जयादा खून खराबा धर्म के नाम पर ही हुआ है। सबसे जयादा समय तक लड़ाईयां धर्म के नाम पर ही लड़ी गई हैं। ये लड़ाईयां एक ही धर्म के अंदर अलग-अलग विचारधारा के गुटों के बीच भी हुआ है। धर्म के नाम पर हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, यहूदी, पारसी सभी लोगों का एक दूसरे धर्मों वालों के साथ लड़ाई झगड़ा, खून खराबा कहीं न कहीं अवश्य हुआ है। एक ही ध र्मों के अन्दर विभिन्न सम्प्रदायों के बीच भी दंगा फसाद हुआ है। शिया-सुन्नी कैथेलिक-प्रोटेस्टेंट जैसी लड़ाईयां इसका उदाहरण है। अन्य दूसरे धर्मों के अन्दर भी ऐसा हुआ है। आज भी धर्म के नाम पर धर्म की रक्षा के लिए ऐसे लड़ाई झगड़े बदस्तूर जारी हैं। धर्म के नाम पर इंसानों का कत्लेआम कर आज भी खून बहाया जा रहा है। अकेले धर्म के नाम पर आदमी का जितना खून बहाया गया है, मानव समाज में जितना भय और तनाव का वातावरण बनाया गया है उतना किसी और दूसरे कारण के द्वारा दुनिया में नहीं हुआ है। ये सब कुछ अनैतिक जघन्य कार्य सिर्फ और सिर्फ धर्म के नाम पर हुआ है। परन्तु आश्चर्य की बात तो ये है कि सभी धर्मों के ठेकेदार लोग कहते हैं कि सभी धर्म सन्मति और मानवता की बात करता है।

दुनिया के प्रायः सारे धर्म और सम्प्रदाय तीन हजार साल से ज्यादा पुराना नहीं है। सिख धर्म तो मात्र चार-पांच सौ साल पुराना है। सारे धर्मों की अपनी पुस्तक, अपनी आस्था अपनी व्यवस्था और अपनी परंपरा है। इन सबमें कुछ न कुछ समानता है। जैसे-कोई एक दूसरे से मेल नहीं खाती। सबसे आपस में टकराव है। सारे धर्मों के ज्ञान पुराने हैं। सभी राजा महाराजाओं और कबीले युगों की है। सबकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाएं हजारों साल पुरानी हैं। किसी भी धर्म की बात आज के लोकतांत्रिक व्यवस्था से मेल नहीं खाती है। आज के ज्ञान विज्ञान से उनका दूर-दूर तक कोई ताल मेल नहीं है। किसी भी धर्म के धार्मिक पुस्तकों में नई खोजों अविष्कारों, अनुसंधानों, टेक्नोलॉजी का ज्ञान नहीं है।

आज दुनिया बदल गई, दुनिया के सारे उत्पादन, निर्माण और सेवा की व्यवस्थाएं बदल गई। आदमी धरती से चांद पर चला गया। सारी पुरानी सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था बदल गई। पिछले सैंकड़ों हजारों सालों में सब कुछ बदल गया, सबमें विकास हुआ परन्तु सारे धर्म आज से सैंकड़ों हजारों सालों पहले जहां

खड़े थे वे आज भी वहीं खड़े हैं। आज तक उनमें फुल स्टोप और कॉमा तक नहीं बदला। आदमी की जरूरत के मुताबिक कोई बदलाव नहीं हुआ। आदमी की जरूरत के मुताबिक हर देश और समाज के संविधान में बदलाव हुआ परन्तु धर्म ग्रंथों में आज तक कोई बदलाव नहीं देखा गया।

दुनिया के सारे धर्मों की पैदाइस विज्ञान के पैदा होने के पहले का है। आज विज्ञान की खोज और अनुसंधान, तर्क-वितर्क के सामने किसी भी धर्म में ठिकाने की क्षमता जरा भी नहीं है। यही कारण है कि जबसे विज्ञान आया है तब से कोई भी नया धर्म पैदा नहीं लिया है। वार्ता पता नहीं आजकल के बाबा महात्मा लोग और कितना धर्म पैदा अब तक कर दिए होते। सभी धर्मों का ज्ञान आज इतना पुराना और अव्यवहारिक हो गया है कि विभिन्न धर्मों के ठेकेदार भी अपने बच्चों को इसकी शिक्षा नहीं देते। वे भी अपने बच्चां को साइंस टेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर और मैनेजमेंट की पढ़ाई पढ़ाने के लिए देश विदेश के संस्थानों में दाखिला देते हैं, अप्रगतिशील है। जबकि आधुनिक ज्ञान विज्ञान नया है, ताजा है प्रगतिशील है। यह कल्याणकारी है, व्यवहारिक है, स्वीकार्य है। कुछ लोग कहते सुने जाते हैं कि जहां विज्ञान खत्म होता है वहीं से अध्यात्म शुरू होता है मगर सच तो यह है कि जहां विज्ञान खत्म होता है वहीं से अज्ञान शुरू होता है। विज्ञान ने अपने तीन-चार सौ साल की छोटी सी अवधि में ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी है कि विभिन्न धर्मों के ठेकेदार भी अपने अज्ञान की बातों में विज्ञान की बातें ढूंढने लगे हैं। विज्ञान के साये में अपनी धर्मों की असफल व्याख्या करने में लग गए हैं। आज धर्म और धर्म के कारोबार में इस्तेमाल होने वाले आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग-नरक, वरदान-श्राम, जादू टोना, पुनर्जन्म, भाग्यवाद, चमत्कार जैसे झूठे चीजों के नाम पर मानव समाज का जितना नुकसान किया जा रहा है उतना नुकसान शायद ही किसी दूसरी चीजों के नाम पर हो रहा होगा। धर्म की आड़ में अंधविश्वास, पाखण्ड और ढोंग फैलाकर लोगों का जितना शोषण हुआ उतना शायद ही किसी दूसरी चीजों के कारण हुआ है। धर्म ने ही लोगों में विभेद पैदा कर विभाजक की दीवार खड़ी की है। लोगों को खूब लड़ाया और खून बहवाया। लोगों को कहीं हिन्दू तो कहीं मुसलमान बनाया। इंसान को इंसान नहीं रहने दिया।

आज जो भी देश और समाज तरक्की कर रहा है वा किसी धर्म और उनके ग्रंथों के कारण नहीं है बल्कि अपनी साईंस टेक्नोलॉजी का विवेकपूर्ण और मानव संसाधन के समुचित उपयोग के कारण तरक्की कर रहा है। किसी भी धर्म के साहित्य से रसायनशास्त्र, भौतिकीशास्त्र और गणित का फार्मूला नहीं निकला है। किसी धर्म के ठेकेदारों ने मोबाइल, टी.वी., फ्रीज, कार, साइकिल, बिजली पंखा यहां तक कि सूई, कैंची तक बनाकर समाज को नहीं दी है। मानव के जीवन को सुखी और कल्याणकारी बनाने के लिए साधनों को जुटाने में धर्मों का आज तक नगण्य योगदान रहा है। लोगों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध कराने में भी धर्मो का कोई योगदान नहीं रहा है।

ऐसे में लोगों को दिमाग में ये प्रश्न उठना लाती है कि आखिर मानव जीवन में तथाकथित धर्मों की क्या आवश्यकता है? क्ष हम इसके बगैर नहीं रह सकते? धर्म को अगर कोई न माने तो उसका क्या बिगड़ जाएगा? धर्म को आदमी अगर न माने तो क्या कोई प्रलय हो जाएगी? आदमी का अस्तित्व मिट जाएगा? आदि ऐसे ही अनेक सवाल मानव मन में उठना

स्वाभाविक है।

आज ज्ञान-विज्ञान की प्रगति ने इस बात को साबित कर दिया है कि पूरी सृष्टि पदार्थ से निर्मित है। इसे बनाने और चलाने वाला पदार्थ और उसकी स्वभाविक आचरण स्वयं है। किसी ईश्वर या ऐसी कोई शक्ति का जीव जगत की किसी भी चीज को बनाने में कोई योगदान नहीं है। सारे जीव धरती पर विकासवाद के परिणाम हैं। आज धरती पर पेड़-पौधे, कीड़े-मकौड़े से लेकर मानव तक सभी जीव पदार्थ के बने हैं। आज-कल के बच्चे ऐसे ज्ञान विज्ञान की बातों को पढ़ लिखकर डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफैसर, वकील, वैज्ञानिक आदि सभी कुछ बनते हैं। बचपन में उन बच्चें को समाजशास्त्र, साहित्य, विज्ञान, नैतिकता समेत सभी जरूरी विषयों की शिक्षा दी जाती है ताकि वो देश के एक अच्छे जिम्मेदार नागरीक बन सकें। इन पूरे शिक्षा की अवधि में धार्मिक शिक्षा की कहीं कोई योगदान नहीं रहता है। दुनिया में ऐसे कई आदिम मानव समूह आज भी हैं जो किसी भी धर्म को न जानते हैं न मानते हैं परन्तु अपनी व्यवस्था में पूरी तरह से आज भी चल रही है। उनपर आज तक न प्रलय आया और न ही उनका अस्तित्व खत्म हुआ। साम्यवादी दर्शन के जन्मदाता कार्ल मार्क्स ने तो धर्म को अफीम तक कहा। धरती पर ज आदमी का विकास हुआ उस समय कोई धर्म नहीं था।

मानवों के पूर्वज हजारों वर्षो तक बगैर किसी धर्म के रहे और अपने जीवन के ममाम आवश्यकताएं पूरी करते रहे। हजारों पूर्वजों को कभी किसी धर्म की जरूरत नहीं हुई। मानव समाज को थोड़ा व्यवस्थित होने पर कुछ लोगों ने समाज का साधने और व्यवस्थित करने के लिए तरीका निकाला जिसे दुनिया में अलग-अलग नामों से जाना गया। सभी धर्मग्रंथों के विचार और तौर-तरीके आज के जमाने में कहीं से भी ंटि नहीं बैठते। आदमी भूतकाल से सीखता है वर्तमान में जीता है और भविष्य ठीक करने का प्रयास करता है। कोई चाहे लाख कोशिश कर ले परन्तु फिर से अब हल-बैल और बैलगाड़ी का युग आनेवाला नहीं है। अब कोई भी लंगोटा पहनकर गांव से दो किलोमीटर दूर लोआ में पानी लेकर खुले में पखाना करना पसंद नहीं करता। कोई व्यक्ति जा जरूरी सुख सुविधाओं रोटी, कपड़ा और मकान के साथ अन्य जरूरतों को पूरा करते हुए जीवन जीये और दुनिया के कोई भी बढ़िया से बढ़िया धर्म को न माने तो उसका कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं है। उल्टे पूरी मौज मस्ती से जिंदगी जीयेगा। परन्तु अगर कोई व्यक्ति धर्म और अध्यात्म में सराबोर होकर वगैरह जरूरी आधुनिक सुख सुविधाओं के जीवन जीना चाहेगा तो उसका जीवन पल-पल कष्टदायक हो जाएगा।

वैसे धर्म किसी का व्यक्तिगत मामला होता है। कोई किसी धर्म को अपनाए किसी धर्म को छोड़े या वगैर किसी भी धर्म के रहे ये उस व्यक्ति पर निर्भर करता है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान साहित्य और कला ने प्रायः सभी धर्म और उनके साहित्यों को निरर्थक और मानव जीवन के लिए गेरजरूरी साबित कर दिया है। वर्तमान मानव जीवन के लिए अनुपयोगी सिद्ध कर दिया है। लोग आज जबरदस्ती विभिन्न धर्मो को ढो रहे हैं। वो दिन दूर नहीं जब आगे आने वाली पीढ़ी धर्म के नशे में चूर रहने वाली सारी पीढ़ियों पर हंसेगी। तथाकथित बढ़िया से बढ़िया कहलाने वाले किसी धर्मो को भी कोई नहीं पूछेगा। वर्तमान समय का धर्म साहित्य, कला और विज्ञान का धर्म है। विवेक बुद्धि का मानवहित में प्रयोग का धर्म है। मानववाद का धर्म है। अब किसी धर्म की जरूरत नहीं।

केस रिपोर्ट

और उसकी वाणी लौट आई

— बलवन्त सिंह लैक्चरार

हरप्रीत का परिवार एक निम्न मध यवर्गीय परिवार है। वे दो बहनें हैं एवं उन से छोटा उनका एक भाई है। उनका पिता आटो रिक्शा चलाता है, जिस से उनके परिवार का गुजारा जैसे-तैसे चलता आ रहा था। परन्तु पिछले कुछ समय से हरप्रीत एक अजीब उल्झन में घिर गई जिस के कारण उनके परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ आ गिरा। उनका हंसता खेलता परिवार परेशानियों से घिर गया।

जब हरप्रीत की दसवीं कक्षा की परीक्षाएं चल रही थी, तब से वह परेशान सी रहने लग गई थी। वह परिवार के सारे सदस्यों के साथ उखड़ी-उखड़ी सी रहने लग गई थी, उसे चक्कर आने लग गए थे। कई बार वह चक्कर खाकर गिरते-गिरते बची थी। उसे भूख बहुत कम लगने लग गई थी तथा नींद भी ठीक ढंग से नहीं आती थी।

फिर जब दसवीं कक्षा का वार्षिक परीक्षा परिणाम आया और वह उसमें फेल हो गई तो उसकी मुसीबत और भी बढ़ गई। अब वह बिल्कुल गुमसुम रहने लगी। उसका मन किसी भी कार्य में नहीं लगता था तथा वह काफी समय तक एक ही जगह पर चुपचाप ही बैठी रहती। यदि घर का कोई सदस्य उससे बात करने की कोशिश करता तो वह उसका कोई जवाब न देती। धीरे-धीरे उसने बोलना बिल्कुल ही बन्द कर दिया। यदि कोई सदस्य उससे बातचीत करने की कोशिश करता तो वह केवल इशारों के साथ उसका जवाब देती। घरवालों को शक हो गया कि हरप्रीत की जुबान ही बन्द हो गई है। वे उसे शहर के एक-दो डाक्टरों के पास भी लेकर गए पर उन डाक्टरों की समझ में भी जब कोई कारण न आया तो उन्होंने उसे केवल दवाई देकर ही अपने कर्त्तव्य की इति समझ ली।

अन्धविश्वासी होने के कारण उसके घर वाले उसे लेकर कई बाबाओं, तान्त्रिकों इत्यादि के पास भी गए परन्तु समस्या का समाधान होने की बजाए वह समस्या और भी विकृत होती चली गई। अब उसने बोलना तो बिल्कुल ही बन्द कर दिया। अब वह रात को डर कर उठ कर बैठ जाती तथा आंखों से आंसू बहाती रहती। उसकी पढ़ाई भी लगभग छूट चूकी थी। ठीक ढंग से भोजन न करने के कारण वह अत्यन्त कमजोर हो चुकी थी तथा चलने फिरने में भी वह लाचार सी हो गई थी।

उनका एक रिश्तेदार तर्कशील सोसायटी द्वारा चलाए जा रहे जनहित के कार्यो से परिचित था। उस की ऐसी दशा देख कर उनके रिश्तेदार ने उन्हें मेरे पास रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केन्द्र में भेज दिया। मैंने पहले तो काफी समय तक उसके साथ बातचीत करने की कोशिश की, परन्तु वह बिल्कुल गुमसुम एवं लाचार सी पड़ी रही। मैंने उसका नाक दबा कर उसके शरीर को थोड़ा कष्ट देकर प्रभावित करने की भी कोशिश की परन्तु सब व्यर्थ।

अन्त में मैंने उसे लिटा कर धीरे-धीरे सम्मोहक निद्रा में लाने का प्रयत्न शुरू कर दिया। थोड़ा सा प्रयत्न करने पर वह गहरी सम्मोहन अवस्था में चली गई। सम्मोहन अवस्था

में उसे, बाबाओं द्वारा उसके अवचेतन में बिठाए गए कथित भूत-प्रेतों के डर के कारण, कई भूत-प्रेतों के साये-से दिखाई देने शुरू हो गए। उसकी अवस्था में ही मैंने उसके मन से इन कथित भूत-प्रेतो के डर को दूर किया तथा उसे बातचीत करने के लिए प्रेरित करना शूरू कर दिया। काफी लम्बा समय प्रेरित करने पर वह धीरे-धीरे थोड़ा सा बोलने लग गई। अब मेरे थोड़े से प्रयत्न से वह स्पष्ट रूप से बोलने लग गई तथा उसने अपनी सारी समस्या अपनी जुबान से व्यक्त कर दी। उसकी समस्या को समझ कर मैंने उसे तथा उसके परिवार वालों को कुछ आवश्यक निर्देश दिये, जिन को पालन करने में उन्होंने अपनी सहमति जता दी तथा उसके पश्चात् वह सामान्य तौर पर बातचीत करने लग गई।

उसकी जुबान बन्द होने के कारणः

जब वह दसवीं कक्षा में पढ़ती थी तो उस समय वह गणित एवं सामाजिक विज्ञान विषयों में थोड़ा कमजोर थी। वह बचपन से ही अत्यन्त संवेदनशील, शर्मीली एवं जज्बाती लड़की थी। ऊपर से उनकी गणित की अध्यापिका थोड़ा कठोर स्वभाव की थी। जब उसे गणित को कोई सवाल नहीं आता तो उसकी गणित की अध्यापिका बाल मनोविज्ञान को न समझ कर मनोवैज्ञानिक ढंग से उसकी समस्या का समाधान न करके उसे डांट-फटकार देती अथवा थोड़ा-बहुत शारीरिक दण्ड दे देती। शारीरिक दण्ड से भी अधिक सारी कक्षा के सामने अध्यापिका की डांट-फटकार उसके कोमल मन पर आघात पहुँचा देती। इसी आतमग्लानि के कारण धीरे-धीरे वह मानसिक रोगी बनती चली गई। इसी मानसिक परेशानी के कारण अपनी पढ़ाई की ओर से उसका मन पूरी तरह से उचाट हो गया। दसवीं कक्षा की परीक्षाएं सिर पर थी और वह पढ़ाई से पूर्णतः उदासीन हो गई। अतः वह दसवीं कक्षा की परीक्षा में फेल हो गई।

पहले तो उसके मन में अच्छा पढ़ लिख कर अपना बेहतरीन कैरियर बनाने की अभिलाषा थी। परन्तु अब जब वह फेल हो गई तो उसके सार सपने मिट्टी में मिलते हुए प्रतीत होने लगे। इससे वह गहरे डिप्रैशन में चली गई। इसी कारण उसका बोलना-चालना भी बन्द हो गया तथा वह चारपाई पर पड़ी-पड़ी हर समय रोती रहने लगी। डाक्टरों ने भी उसके गले को तो चैक कर लिया परन्तु उसके मन की वेदना को पहचान नहीं सके तथा उनका सही मार्गदर्शन भी न कर सके। उसकी मानसिक समस्या को न समझ पाने तथा अन्धविश्वासी मानसिकता के कारण उसके घर वाले उसे बाबाओं इतयादि की चौकियों पर ले जाने लगे। अपने बाबागिरी के व्यापार में लगे होने के कारण तमाम् बाबाओं ने उन्हें अपने शब्दजाल में उलझा कर उन्हें अंधविश्वास रूपी रेल की पटरी पर डाल दिया। जहां से वे बिना ब्रेक चलते हुए अन्धविश्वास के गहरे दलदल में धंसते चले गये तथा हरप्रीत मौत की आगोश की ओर आगे बढ़ती चली गई।

उचित समय पर मिले मनोवैज्ञानिक परामर्श के कारण उसकी मानसिक समस्याओं का अन्त हो गया तथा वह सुखमय जीवन व्यतीत करने लगी। उसके पश्चात्
लगातार 5-6 बार की गई मनोवैज्ञानिक कांऊसलिंग के प्रभाव से उसने फिर से स्कूल में दाखिला ले लिया तथा आगामी सत्र में होने वाली परीक्षाओं में उसने बहुत अच्छे अंको से दसवीं कक्षा उत्त्तीर्ण की तथा अब वह अपनी पढ़ाई के दम पर उपना उज्जवल भविष्य बनाने हेतू प्रयासरत् है।

केस रिपोर्ट

...और घबराहट बंद हो गई

राजेन्द्र जोधपुरिया, राज सिंह राज, 94660-90720

माया देवी एक 36 वर्षीय महिला है जो पिछले एक साल से कुछ अजीब तरह के व्यवहार प्रकट कर रही थी। उसके पति सुभ्छाष एक किसान हैं जिनके पास पांच एकड़ जमीन रत्ता खेड़ा गांव की है। माया देवी के एक लड़का व एक लड़की है। लड़का अजय 10वीं में कम्पार्टमेन्ट के कारण आगे पढ़ाई जारी नहीं रख पाया व खेती में पिता का हाथ बंटाता है।

माया देवी के जेठ व पति में आपस में जायदाद का बंटवारा हो चुका है। फैसले के अनुसार माया देवी के पति को प्लाटों में नये मकान बनाने पड़े हैं लेकिन अभी निर्मा कार्य चल रहा है और वे अपने पुराने घर में ही हैं। जय से नये मकान बनाने शुरू किये हैं तब से माया देवी कुछ अजीब सी परेशानियों की शिकायत करती है। वह नये घर में जाने की बात पर चिढ़ जाती है और छाती में दर्द के साथ घबराहट उबकाईयं (जी मचलना) व मन में बुरे विचार आने की शिकायत करती है।

घर वाले परेशान रहने लगे व लोगों के बताये अनुसार झाड़-फूक व ताबीजों का सहारा लेने लगे। फिर भी समस्या ज्यों-त्यों बरकार थी। गांव के ही सुझवान व तर्कशील विचारधारा से प्रभावित राजेन्द्र पाल ने उन्हें तर्कशील सोसायटी से संपर्क करने को कहा।

उन्होंने तर्कशींल ईकाई कालौंवाली में मास्टर अजायब जलालाना जी से संपर्क किया उन्होंने उन्हें सिरसा में तर्कशीलों के सहयोग व परामर्श द्वारा चलाये जा रहे मनोरोग परामर्श केन्द्र का पता लगाया। वहां उन्होंने मनौवैज्ञानिक काउंसलर राजेन्द्र जोधपुरिया व राज सिंह से संपर्क किया।

दोनों काउंसलर द्वारा माया देवी की मनोवैज्ञानिक तरीके से परेशानी की वजह मानकर काउंसलिंग द्वारा उसकी समस्या का हल कर दिया गया। आज चार महीने बीत जाने के बाद भी माया देवी अपने नये मकान में बिना किसी परेशानी के खुश है।

कारणः

माया देवी के पति व जेठ में जायदाद बंटवारे के दौरान माया देवी के परिवार को प्लाट में नया मकान बनाकर दिये जाने का फैसला हुआ था। माया देवी की जेठानी ने उन्हें एक दिन ताने के रूप में कहा कि हमें पुराना व खुद नये घर में धोखे से जा रहे हैं यह बात माया देवी के अचेतन मन पर लग गई वह स्वभाव से भी कभी संवेदनशील औरत थी। इसी बात के कारण व अचेतन रूप से नये घर से नफरत व अपराधबोध के भावों के घिर गई और उसे परिणाम के रूप में उपरोक्त लक्षण आने लगे। परिवार वाले अंधविश्वासी होने के कारण साधु, चेलों व पाखंड़ियों से अपनी आर्थिक, व मानसिक लूट कराने लगे।

नोटः

यह सत्य घटना है, विशेष कारणों से पात्रों के नाम व स्थान बदल दिये गए हैं।

पिछले अंक का शेष

युग कैसे बदलते हैं

डॉ.अमृत

.... बिल्कुल ठीक, परन्तु इस लिए उन्हें महान कहना तथा उन देशों का गुणगान करना सर्वथा उचित नहीं। हां उन देशों की विरासत में जो कुछ भी मानवता के पक्षघर है (तथा ऐसा थोड़ा नहीं है), वह सभी की साझा विरासत है। अब यह देखें कि क्या प्रत्येक वस्तु यूरोप से पैदा हुई है जैसा कि श्री कपूर साहिब का कथन है? कृषि का प्रारम्भ मिश्र, भारत, चीन में पहले हुआ तथा यहां से वह यूरोप में फैली। वास्तव में प्रारम्भिक सभ्यताएं जो अपने समय में अत्यन्त ऊँचे विकास के स्तर पर थी, वे सभी यूरोप से बाहर ही अस्तित्व में आई तथा वे यूनान एवं रोम के उदय से पूर्व स्थापित हुईं।... .... यह कहना भी पूर्णतः गैर-ऐतिहासिक है कि प्रथम शहर रोम ही था, रोम से पूर्व कई शहर अस्तित्व में आ चुके थे। उपरोक्त सभ्यताएं भी मुख्य तौर पर शहर केन्द्रित सभ्यताएं ही थी। अन्य अनेकों आविष्कारों, तकनीकों एवं दर्शनिक योगदान का हवाला दिया जा सकता हैं। जो न केवल यूरोप से बाहर पैदा हुए, बल्कि उस समय पैदा हुए जब यूरोप स्वयं अत्यन्त पिछड़ा हुआ था। यूनान एवं रोम सदैव मानवीय गतिविधियों के मुख्य केन्द्र नहीं रहे। मानवीय सर्वाधिक गतिविधी के केन्द्र अलग-अलग समय में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे हैं। प्रारम्भिक सभ्यता के काल में ये केन्द्र मिस्र, मैसोपोटामिया (वर्तमान इराक), भारत एवं चीन रहे। फिर ये केन्द्र यूनान एवं रोम की तरफ चला गया। मध्यकाल में आकर जब यूनान एवं रोम का पतन हो चुका था तो यह केन्द्र अरब संसार में चला गया। फिर पुनर्जागरण काल के साथ यह केन्द्र इटली तथा फिर प्रबोधन लहर के समय फ्रांस चला गया। चाहे आज तक भी इन देशों का स्थान बना हुआ है, परन्तु कुछ समय के लिए रूस एवं चीन भी मानवीय गतिविधियों के उच्चत्तम केन्द्र बने रहे। इस लिए विश्व के किसी एक कोने को पूरे विश्व के लिए एकमात्र प्रकाश-स्तंभ बना कर पेश करना किसी ओर से भी समझदारी की बात नहीं है।

अपनी पश्चिम-आरती जारी रखते हुए श्री कपूर कहते हैं - ''यहूदियों इसाईयों का कैलेण्डर देखकर ही सभी धर्मों-सम्प्रदायों ने अपने कैलेण्डर बनाए।'' पता नहीं क्यों हमारे विद्वान ये समझते हैं कि वे जो भी लिखेंगे वह बस ''सत्य'' ही होगा। विश्व का प्रथम कैलेण्डर मिस्र वासियों ने बनाया, लगभग 4000 ई.पू. पहले तथा उस समय यूनान एवं रोम का कोई नाम-पता भी नहीं था। यह कैलेण्डर सूर्य पर आधारित था तथा इस में 365 दिन होते थे, 12 महीने तथा प्रत्येक महीना 30 दिन का होता था, शेष बचे 5 दिन वर्ष के अन्त में आते थे। यही नहीं, ईरानी लोग भी उन पहले लोगों में थे जिन्होंने चन्द्र-आधारित कैलेण्डर के स्थान पर सौर-कैलेण्डर को पहल दी। माया सभ्यता का कैलेण्डर भी सौर-कैलेण्डर था जो 5वीं ई.पू. सदी में बन चुका था। जिस सौर-कैलेण्डर के हमारे विद्वान बलिहार जा रहे हैं, वह जूलियन कैलेण्डर है अथवा ग्रीगोरियन कैलेण्डर, इसके बारे में उन्होंने स्पष्ट तो नहीं किया परनतु फिर भी पाठकों को बता दें कि जूलियन कैलेण्डर 49 ई.पू. में रोमन साम्राज्य में लागू हुआ, उससे पूर्व रोमन साम्राज्य में 700 ई.पू. से लेकर जूलियन कैलेण्डर लागू होने तक, चन्द्र-आधारित कैलेण्डर ही चलता था। ग्रीगोरियन कैलेण्डर 1582 ई. में आकर इंग्लैंड में प्रचलित हुआ तथा इंग्लैंड की शक्तिशाली हैसियत के कारण यह शीघ्र ही शेष विश्व में फैल गया। और देखो- ''इतिहास तब संभव होता है जब सौर-कैलेण्डर एवं लेखन कला का विकास

होता है।'' लेखन से तो इतिहास के लिखित रूप का संबन्ध समझ में आता है, परन्तु सौर-कैलेण्डर के साथ बिल्कुल बेतुका है। चीन का इतिहास 1400 ई.पू. से लेकर लगभग लिखित रूप में उपलब्ध है परन्तु चीनी उदाहरण भी सामने है। रोम एवं यूनान का इतिहास लेखन चीन से बेहतर अवश्य है परन्तु यह चीन से पूरी इस सदी बाद में लिखा जाता है।

पश्चिम-भक्ति कपूर जी के कितनी हड्डियों में रम गई है, इस का प्रमाण उनके इस कथन से मिलता है- ''वर्तमान विश्व पर यूरोप अथवा पश्चिम का राज्य है। अमेरिका पश्चिम का विस्तार है। शेष विश्व पश्चिम के पदचिन्हों पर चल कर विकास कर रहा है। पश्चिम का विरोध करने वाले मध्यकालीन समस्याओं में उलझे होने के कारण स्वयं के लिए विपदाएं ही उपजा रहे हैं। पश्चिम के साथ मतभेद हो सकते हैं परन्तु पश्चिम के योगदान को अनदेखा करना सीाव नहीं हैं।'' विश्व के किस कोने में आज के समय में समस्त समाज का विकास हो रहा है? फिलहाल तो पश्चिम की आर्थिक संकट के कारण खुद की ही दुर्गति हो रही है तथा सब से भयंकर हालत यूनान एवं रोम की बनी हुई है। ''पश्चिम का विरोध'', परन्तु किस प्रकार का साम्राज्यवादी धौसं एवं लूट तथा लोकतन्त्र की बरामद का विरोध कपूर साहिब को ''मध्यकालीन समस्याओं में उलझे होना'' तथा ''स्वयं के लिए विपदाएं ही उपजाना'' लगता है तो वे साम्राज्यवादी पूंजीवाद के टुकड़ों पर पलने वाले बौद्धिक चाकरी नहीं भी तो भी यह बुझदिली है तथा अपने लोगों के साथ गद्दारी है। '' पश्चिम के साथ मतभेद हो सकते हैं परन्तु पश्चिम के योगदान को अनदेखा करना संभव नहीं है।'' यह बिल्कुल सही है, परन्तु यह योगदान किस क्षेत्र में, यह भी तो स्पष्ट करना पड़ेगा। यदि यह पुनर्जागरण एवं प्रबोधन की लहरों के संबन्ध में है, पुरातन यूनानी एवं रोमन दर्शन कलाओं के संबन्ध में है, आधुनिक विमान के विकास के संबन्ध में है, फ्रांसीसी, जर्मन एवं अंग्रेजी के मानवता पक्षीय दर्शन, समाज विज्ञान, साहित्य एवं कला के सबन्ध में है तो इस योगदान को कभी भी अनदेखा नहीं किया जा सकता, इस प्रकार का योगदान अकेले पश्चिम का तो छोड़ो किसी भी राष्ट्र का ऐसा योगदान अनदेखा नहीं किया जा सकता। परन्तु यदि योगदान यह है कि ''आधुनिक विश्व पर यूरोप अथवा पश्चिम का राज है, अमेरिका पश्चिम का विस्तार है। शेष समस्त विश्व पश्चिम के पदचिन्हों पर चल कर ही विकास कर रहा हैं'' तो इससे न केवल प्रत्येक मानवता पक्षघर व्यक्ति का मतभेद होना चाहिए बल्कि इसका विरोध करना भी नैतिक कर्त्तव्य है।

भारतवर्ष के बारे में टिप्पणियां करते हुए उन्हें भारत के समस्त इतिहास में आलस, सुस्ती, बौद्धिक कंगाली के बिना कुछ भी दिखाई नहीं देता। वे कहते हैं - भारत के पास इतिहास का कोई संकल्प नहीं है, भारत के पास कालचक्र का संकल्प है। उन्हें यहां भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार डी.डी. कौशम्बी के शब्दों की याद दिलानी प्रर्याप्त होगी- इन सभी बातों के कारण (लिखित स्रोत सामग्री प्रर्याप्त न होने के चलते) प्रबुद्ध विद्वान भी यह कहने लगे हैं कि भारत का कोई इतिहास नहीं है। निश्चय ही रोम अथवा यूनान के इतिहास की तरह प्राचीन भारत का तथ्य पूर्ण एवं ब्यौरेवार इतिहास प्रस्तुत करना संभव नहीं है। परन्तु इतिहास क्या है? यदि इतिहास का अर्थ केवल बड़े-बड़े युद्ध तथा कुछ विशेष घमण्डी नामों का सिलसिला ही है तो भारत का इतिहास लिखना मुश्किल है। परन्तु यदि किसी सम्राट के नाम के स्थान पर यह जानना अधिक महत्वपूर्ण है कि उसके राज्य के किसान हल का प्रयोग करते थे अथवा नहीं; तो भारत का इतिहास मौजूद है।

भारत के इतिहास के बारे में अपनी

आधारहीन टिप्पणियां जारी रखते हुए वे लिखते हैं - भारत के इतिहास ने चार प्रमुख मोड़ काटे हैः आर्यो का आगमन, बुद्ध का प्रकट होना, इस्लाम का प्रवेश तथा अंग्रेजों का आना। ये चार मोड़ काटने में भारत ने कोई उद्यम नहीं किया, उद्यम आने वालों ने किया। प्रथम बात तो यह है कि बुद्ध धर्म का जन्मस्थान भारत है, न कि यह कहीं बाहर से आया है। हां, बुद्ध को जन्म दिलाने में भारत के बहुसंख्यक निवासियों का योगदान उतना ही है जितना ईसा मसीह अथवा किसी अन्य महान व्यक्ति को जन्म दिलाने में वहां के निवासियों का होता है। अब आए शेष तीनों की ओर-ये तीनो आक्रमणकारी थे, तथा आक्रांताओं से स्वयं पर आक्रमण करवाने के लिए आज तक किसी भी समाज ने स्वयं उद्यम नहीं किया। ''.......... उद्यम आने वालों (अर्थात् आक्रांताओं) ने किया,'' इस कथन से यह भी स्पष्ट होता है कि कपूर साहिब भी उन अंग्रेज-परस्तों में शामिल हैं जो कहते हैं कि अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बन कर भारत पर अहसान किया, भारत को सभ्य बनाया तथा भारत में रेलें बिछाई। एक बार फिर से डी.डी. कौशम्बी ऐसे विद्वानों को जबाब देते हैं- यदि बात इस प्रकार हो तो लिखाने योग्य भारतीय इतिहास केवल विजेताओं का ही इतिहास होता। विदेशी लेखक जो पाठ्यपुस्तकें छोड़ कर गए, उनसे सहज ही इस धारणा को बल मिलता है। परन्तु जिस समय जिस समय मकदूनियां का सिकन्दर हिन्द की पौराणिक अमीरी एवं जादुई नाम को सुन कर पूर्व की ओर खिंचा चला आया था, उस समय इंग्लैंड एवं फ्रांस लौह-युग में कदम रख ही रहे थे। भारत के लिए नये व्यापारिक मार्ग खोजने की कोशिश में से ही अमेरिका की खोज हुई। यही कारण है कि आज भी अमेरिका के मूल निवारियों को इन्डियन कहा जाता है। अरब लोग जब बौद्धिक दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक प्रगतिशील एवं सक्रिय थे, उस समय उन्होंने अपने चिकित्सा ग्रंथ तथा काफी हद तक गणित के ग्रंथ भी, भारतीय स्रोतो के आधार पर तैयार किये थे। एशियाई संस्कृति एवं सभ्यता के दो प्रारम्भिक स्रोत चीन एवं भारत ही थे। सूती कपड़े (कैलिको, छींट, डूंगरी, पाजमा, मैसा तथा सिगंम शब्द भारतीय उत्पत्ति के हैं) तथा चीनी नित्यप्रति के जीवन को भारत की देन हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे कागज, चाय, चीनी मिट्टी तथा रेशम चीन की देन हैं। हमारी लेखक को सलाह है कि वह जेम्ज मिल के अंग्रेजी में लिखे उपभोक्तावादी इतिहास की पुस्तकें एवं उन पुस्तकों की भारतीय नकलें, जो हमारे कालेजों/यूनिवर्सिटियों में आज तक पढ़ाई जाती हैं, के स्थान पर भारत के इतिहासकारों जैसे डी.डी. कौशम्बी, रामशरण शर्मा, इरफान हबीब, रोमिल्ला थापर, डी.एन.झा जैसे इतिहासकारों की पुस्तकें पढ़े ताकि उन्हें भारत के इतिहास के बारे में कुछ जानकारी मिल सके।

नरिन्द्र सिंह कपूर के लेख में और भी बड़े अज्ञान रूपी कंकर हैं, बात क्या पूरा लेख ही कंकरों का ढेर है। हमने अपने लेख में कुछ अधिक हानिकारक कंकरों की ही चीरफाड़ की है, शेष अनय कंकरों को फिलहाल छोड़ दिया है। परन्तु इतना अवश्य है कि उनके भारत के साथ इस शिकायत पर, कि 'भारत के पास इतिहास का संकल्प नहीं है,' भारत तो पूरा नहीं उतरता, हां श्री कपूर अपने गिले के अनुसार सच्चे भारतीय हैं क्योंकि 'उनके पास इतिहास का कोई संकल्प नही है।

हिन्दी अनुवाद
बलवन्त सिंह प्राध्यापक

तर्कशील हलचल

23 मार्च को शहीदी दिवस पर सैमिनार

रेशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा (रजि.) द्वारा दिनांक 23-3-14 को प्रीत पैलेस इस्माईलाबाद जिला कुरुक्षेत्र में श.भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के शहीदी दिवस को समर्पित एक राज्य स्तरीय सैमिनार का आयोजन किया गया कार्यक्रम के प्रारम्भ में मा.सतीश आजाद ने श.भगत सिंह का जीवन-परिचय देते हुए बताया कि किस प्रकार से श.भगत सिंह ने अपने वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित विचारों की बदौलत इस देश की राजनीति को प्रभावित किया।

तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक बलवन्त सिंह प्राध्यापक ने श.भगत सिंह की विचारधारा एवं तर्कशील सोसायटी के विचारों के समन्वय पर बातचीत करते हुए श.भगत सिंह के लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूं' से विशेष तौर पर उदाहरण देकर समझाया कि भारत की आम जनता की मुक्ति धर्म के पाखण्ड का मार्ग छोड़ कर यहां पर वैज्ञानिक ढंग से समाजवाद स्थापित करके ही होनी सम्भव है। कार्यक्रम में तर्कशील कार्यकर्ता हरबलास ने अपने तर्कशील बनने की दास्तान अत्यंत मार्मिक शब्दों में प्रस्तुत की। जीन्द से सुभाष तितरम ने अपने वक्तव्य में श.भगत सिंह के व्यक्तित्व के बारे में विस्तार सहित बताया।

साथी बलबीर सिंह ने अपनी बातचीत में विस्तार से समझाया कि यदि श.भगत सिंह होता तो वर्तमान दौर में वह क्या कुछ करता। उन्होंने जनता को श.भगत सिंह के नक्शेकदम पर चलने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में सोसायटी के प्रान्तीय प्रधान राजा राम हंडियाया ने अपने अध्यक्षीय भाषण के साथ-साथ सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का धन्यवाद भी किया। कार्यक्रम का मंच संचालन इस्माईलाबाद इकाई के प्रधान टहल सिंह गिल द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में साथी जयभगवान एवं उनके साथियों द्वारा कई क्रांतिकारी गीत भी प्रस्तुत किये गए।

कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए साथी कर्मजीत सिंह, करनैल सिंह, मनजीत सिंह, स्वर्ण सिंह एवं बलचित्र सिंह ढिल्लो ने विशेष तौर पर सहयोग दिया।

मां के नाम.....

जा रहा हूँ ''माँ'', रूक नहीं पाया
तेरे लिए खुशियाँ समेट नहीं पाया।।

बहुत सपने थे मेरे, कुछ अपने थे मेरे
उन्हें पूरा कर नहीं पाया
तेरे लिए खुशियाँ समेट नहीं पाया।।

तेरी ममता तेरा दुलार भुला नहीं पाऊँगा
लेकिन अब मै तुझे पुकार नहीं पाऊँगा
हर पल तेरा दर्द बाँट नहीं पाऊँगा
और तुझे हँसा नहीं पाऊँगा
मैं जा रहा हूँ माँ, रूक नहीं पाया तेरे लिए खुशियाँ समेट नहीं पाया।।

तू तो जन्म देने वाली है माँ
अपने सपने मुझ में देखती है,
दिन रात मेरी ख्वाहिशें सजाती है, चाहे खुद रोती पर मुझे हँसाती है
पर जा रहा हूँ माँ, रूक नहीं पाया तेरे लिए खुशियाँ समेट नहीं पाया।।

छोड़ के जा रहाँ हूँ तेरे लिए अपना प्यार
जो चला आयेगा जब भी तू देगी पुकार
उसके रूप में तू देख पायेगी मुझे
जल्द ही समझ जायेगी उसे
पर जा रहा हूँ माँ, रूक नहीं पाया तेरे लिए खुशियाँ समेट नहीं पाया।।

दर्द में गुम न हो जाना माँ
हर पल हूँ साथ ये एहसास करना मेरी माँ
क्या हुआ अगर आँखें न देख पायें मुझे, मैं तो तेरे तन मन में बसा हूँ माँ
तेरी सांसों सें ही नहीं दिल की हर एक धड़कन से जुड़ा हूँ माँ
पर जा रहा हूँ माँ, रूक नहीं पाया तेरे लिए खुशियाँ समेट नहीं पाया।।

''ऋचा गांधी''

बाबाओं के काले कारनामे

छेड़छाड़ में बद्रीनाथ धाम के मुख्य पुजारी गिरफ्तार पी रखी थी शराब 14 दिन की न्यायिक हिरासत

नई दिल्ली। ब्रदीनाथ धाम के मुख्य पुजारी वी. केशवन नंबूदरी और उनके चचेरे भाई विष्णु को छेड़छाड़ के आरोप में गिरफ्तार कर तिहाड़ जेल भेज दिया गया है। जिस महिला की शिकायत पर पुलिस ने यह कार्यवाई की उस महिला का परिवार लंबे समय से इनका भक्त था।

दक्षिण जिला डीसीपी बीएस जायसवाल ने बताया कि दोनें के खिलाफ आईपीसी धारा-354 (छेड़छाड़) व धारा-342 (कमरे में बंधक बनाने) के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है। आरोपियों को साकेत कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार, गुलमोहर पार्क निवासी 32 वर्षीय महिला ने बताया कि केरल निवासी नंबूदरी ने उसे सोमवार रात करीब साढ़े आठ बजे डिलाइट इन होटल में बुलाया। जब महिला ने अगले दिन आने की बात कही तो नंबूदरी ने कहा कि वह मंगलवार दिल्ली से चला जाएगा। बाद में पिता को जानकारी देकर वह ड्राइवर के साथ होटल पहुंची। वहां पहुंचते ही महिला को कुछ संदेह हुआ। उसने पति को फोन लगाया और होल्ड रखने के लिए कहा। आरोप है कि मुख्य पुजारी महिला को लेने के लिए नीचे आया।

अमर उजाला 5.2.2014

एक साल की सजा घटवाने कोर्ट गए, कैद तीन साल की हुई

सिरसा। दूसरों का भविष्य बताने वाले ज्योतिष गुरू को इस बात की भनक नहीं लगी कि उनके अपने सितारे भी गर्दिश में हैं। धोखाधड़ी और जालसाजी के मामले में ज्योतिष गुरु को एक साल की सजा दी गई थी। वे इसे कम कराने पहुंच गए ऊपरी अदालत में। लेकिन अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश संदीप सिंह की अदालत ने उन्हें दोषी मानते हुए सजा को बढ़ाकर तीन साल कर दिया।

जानकारी के अनुसार, 28 फरवरी 2003 को गांव फरवाई कलां निवासी विधवा आमदेवी ने ज्योतिष गुरु शशि देव शबाना पर धोखाधड़ी कर प्लॉट हड़पने का मामला दर्ज कराया था। पुलिस ने आरोपी को 18 अप्रैल 2003 को गिरफ्तार कर लिया। बाद में उसे अदालत में जमानत मिल गई। 28 अक्तूबर 2010 को न्यायिक दंडाधिकारी सुधीर परमार की अदालत ने मामले की सुनवाई पूरी करते हुए शशि देव को दोषी ठहराया और एक वर्ष के कारावास की सजा सुनाई। ज्योतिष गुरू ने अदालत में चुनौती देकर सजा कम किए जाने की गुहार लगाई। इस दौरान उन्हें निचली अदालत से जमानत भी मिल गई। ऊपरी अदालत में उनकी अपील पर मामला तीन साल तक चलता रहा। अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश संदीप सिंह की अदालत ने भी ज्योतिष गुरु को प्लॉट हड़पने, धोखाधड़ी और जालसाजी करने का दोषी पाया।

अमर उजाला 20.5.2013

लड़कों के यौन उत्पीड़न में साधु बंदी

पश्चिम बंगाल में लड़की के यौन उत्पीड़न करने के आरोप में भारत सेवाश्रम के एक साधु को गिरफ्तार किया गया है। 27 वर्षीय साधु के खिलाफ स्थानीय लोगों ने चार लड़कों का यौन उत्पीड़न करने की शिकायत दर्ज कराई थी, जिनमें से तीन नाबालिग हैं। साधु को मंगलवार को स्थानीय अदालत में पेश किया गया जहां से उसे तीन दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया। पीड़ित लड़के आश्रम में ही रहकर पढ़ाई करते हैं।

अमर उजाला, 26-12-13

अंधविश्वास के चलते

बकरे का 'टोटका' भी नहीं बचा पाया बंसल की कुर्सी

नई दिल्ली। रेलवे घूस कांड से विवादों में आए रेलमंत्री पवन कुमार बंसल को शुक्रवार को अपनी कुर्सी बचान के लिए टोटकों का सहारा लेते देखा गया। बंसल को संकट से उबरने के लिए अपने किसी शुभचिंतक की सलाह पर शुक्रवार को एक सफेद बकरे को दाना खिलाते और उसकी पीठ पर हाथ फेरते देखा गया। बाद में पत्नी ने बंसल की नजर भी उतारी। इन टोटकों के बाद ही वह पूरे पांच दिन के बाद मंत्रालय पहुंचे। लेकिन रात तक भांजे की करतूत के चलते घिरे मामा को आखिरकर अपने पद से इस्तीफा देना ही पड़ा। भाजपा ने बंसल द्वारा आजमाए गए टोटके पर चुटकी लेते हुए कहा कि गलती रेलमंत्री तथा कांग्रेस की है और जान बेचारे बकरे की मुसीबत में है।

पार्टी प्रवक्ता शहनवाज हुसैन ने कहा कि कांग्रेस अपनी गलती की सजा मासूम बकरे को देना चाहती है। बंसल लाख जतन कर लें, टोने टोटके से उनकी कुर्सी नहीं बचने वाली। पार्टी के एक अन्य प्रवक्ता कैप्टन अभिमन्यु ने भी रेल मंत्री को टोने टोटके और कर्मकांड में उलझने के बजाए सच का सामना करने की नसीहत दी।

मीडियाकर्मियों पर भड़का बेटा

टीवी चैनलों पर बकरा पूजा से संबंधित खबरों के प्रसारण से बंसल परिवार बुरी तरह भड़क गया। रेलमंत्री के पुत्र मनीष बंसल ने मीड़िया को निजता का हनन न करने की नसीहत देते हुए कैमरे पर हाथ मार कर अपना गुस्सा जताया।

शुभचिंतक की सलाह पर पूजा

बताा जाता है कि उनके किसी शुभचिंतक ने कुर्सी बचाने के लिए उन्हें इस टोटके को आजमाने की सलाह दी थी। हालांकि उनका यह दांव उल्टा पड़ता दिख रहा है। इस मामले को टालने वाली कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी अचानक प्रधानमंत्री से मिलने उनके निवास पर पहुंची। बताते हैं कि इस मुलाकात में बंसल की विदाई पर अंतिम मुहर लग गई है, जिसकी अब महज औपचारिक घोषणा होना शेष है।

अमर उजाला 11.5.2013

घरेलू कलह शांत कराने आया तांत्रिक जेवर ले उड़ा।

घरेलू कलह का समाधान करने के नाम पर एक तांत्रिक ने धोखाधड़ी से एक परिवार से तीन लाख रुपये का सोना और 21 हजार रुपये की नकदी ठग ली। ठगी के बाद शास्त्री नगर दिल्ली निवासी तांत्रिक सोनू अहमद फरार हो गया। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जांच पड़ताल में पता चला कि तांत्रिक यहां पर कई वर्षो से रह रहा था और उसने कई अन्य परिवारों के साथ भी ठगी की है।

पुलिस के अनुसार कृपाल नगर निवासी हितेश ने शहर थाना में शिकायत दर्ज कराई कि शास्त्री नगर दिल्ली निवासी सोनू अहमद ने गृह क्लेश से मुक्ति दिलाने के नाम पर उसके घर पर अनुष्ठान किया और धोखधड़ी कर उससे तीन लाख रुपये का सोना व 21 हजार रुपये की नकदी ठगी है। हितेश ने बताया कि तांत्रिक ने उससे कहा था कि वह घर के जेवरात लेकर आए, जिन्हें शुद्ध किया जाएगा। बाद में उसने नकली जेवरात दे दिए। पुलिस ने हितो के बयान पर आरोपी सोनू के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। आरोपी तांत्रिक पहले खेखरा कोट में रहता था और इस दौरान उसने अन्य परिवारों से ठगी कर रखी है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

अमर उजाला, 12-12-13

आईना

बलजीत भारती

नई राह पर कुछ कदम

1. राजस्थान के भरतपुर जिले में प्रशासन ने बाल-विवाह को रोकने के लिए शादी के कार्ड पर 'बाल विवाह अपराध है' और 'लड़की की आयु 18 वर्ष और लड़के की आयु 21 वर्ष अनिवाय है' लिखवाना होगा। लड़के-लड़की की जन्म-तिथि भी दर्शानी होगी।
2. भारत सरकार द्वारा आनंद मैरिज एक्ट-1909 में संशोधन का प्रस्ताव है। इस संशोधन के अनुसार अब शादी का रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य होगा। बिना किसी धर्म व जाति की प्रतिबद्धता के शादी रजिस्ट्रेशन करवाना अपने आप में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।
3. केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने इन विद्यालयों में पढ़ाने वाले अविवाहित पुरूष या महिला अध्यापकों की जानकारी अपनी वेबसाइट पर डाल दी है। इस जानकारी में निवास-स्थान, कार्यस्थल, उम्र, ई-मेल आई डी और फोन नं. शामिल हैं। लेकिन गौरतलब बात यह है कि इसमें धर्म व जाति से संबंधित कोई जानकारी नहीं दी गई है। केन्द्रीय विद्यालय नं.1 धनबाद (बिहार) की प्रधानाचार्य के.देवी के अनुसार इस कदम से अविवाहित अध्यापक-अध्यापिकाएं व अन्य व्यक्ति आपस में सीधे संपर्क कर सकते हैं। उनके अनुसार इस कदम से दहेज कुप्रथा पर रोक लगेगी व अंतर्जातिय शादियों को बढ़ावा मिलेगा।
4. हरियाणा ने अंतर्जातिय शादी करने वाले जोड़े के संयुक्त खाते में 50000 रुपये जमा करवाने का निर्णय लिया (दिसम्र 2012) है।
5. राजस्थान सरकार ने अपने 2013-2014 के बजट में प्रावधान किया है कि अन्तर्जातिय शादी करने वाले दलित लड़के या लड़की को 5 लाख रुपये की सहयोग राशि दी जाएगी।

सुनने में ये बातें मामूली लग सकती हैं, लेकिन यही छोटे-छोटे कदम एक स्वस्थ समाज के निर्माण की दिशा में मील के पत्थर साबित होंगे।

सूरते हालात बदलेगी 'खलिश' इक दिन जरूर
गो अभी बरहम है साकी, और तही है जाम भी।

लेखकों/पाठकों के लिए

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mail:tarksheeleditor@gmail.com आदि पर भेजी जा सकती हैं। mail भेजते समय SG-4 Hindi Fonts का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतनिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रेशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा को सहयोगः
बलवन्त सिंह प्राध्यापक द्वारा अपने पिता सः तरलोक सिंह की स्मृति में सोसायटी को 1100 रुपये (600 रुपये स्टेट बाडी एवं 500 रुपये जिला इकाई) का सहयोग भेजा। इनका सोसायटी हार्दिक धन्यवाद करती है।

बधाई

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के महासचिव गुरमीत सिंह की सपुत्री अमरप्रीत कौर की शादी गुरजन्ट सिंह के साथ 12.04.2014 को सम्पन्न हुई। सोसायटी नवविवाहित जोड़े को बधाई भेजती है और इस अवसर पर परिवार द्वारा सोसायटी को रूपये 1100/– का सहयोग भेजने पर धन्यवाद व्यक्त करती है।

हरियाणवी रागिनी

भूख को उपवास लिखेंगे

जब सियासत दां ही इतिहास लिखेंगे।
लाजिम है वो भूख को उपवास लिखेंगे।।

तेरे तन पे कपड़ों का, अभाव हुआ तो क्या,
तंगी में अब तक, तेरा निभाव हुआ तो क्या,
बेईमानी का तेरे ऊपर, प्रभाव हुआ तो क्या,
ऐसी बातों का तेरे दिल पे, घाव हुआ तो क्या,
खूब किया उत्थान, वो अपने प्रयास लिखेंगे।

हमने तो भारत में, इतने उद्योग लगाए,
रोज नई बनी योजना, तू फिरता मुँह लटकाए,
टी०वी० पर हर तरफ, हैं पकवान सजाए,
तू भूख का फिर भी, क्यूं झूठा शोर मचाए,
स्वर्ण युग की ला रहे, वो तो आस लिखेंगे।

राहों के अंधेरों ने, चलना किया मुहाल यहाँ,
पिछले से बदतर आया, हर अगला साल यहाँ,
दारू की नदियां बहती, पानी हुआ मुहाल यहाँ,
सौ रुपये किलो बिक गई, हुई कीमती दाल यहाँ,
इन्हीं बातों को नेताजी, तेरा विकास लिखेंगे।

दाल–सब्जी के दर्शन, हो गए दुर्लभ थाली में,
झूठ कहें ये लोग सब, फर्क पड़ गया लाली में,
जनता को बहका रहे हैं, विकास डाल के नाली में,
'रामेश्वर' नहीं लिखे झूठ, नेता लगे दलाली में,
फुटपाथों को सियासत में, ये आवास लिखेंगे।

रामेश्वर दास 'गुप्त', 94162–20513

Reg. No. HARHIN05683/07/1/2013-TC



नार्थ अमरीकन तर्कशील सोसायटी आफ कैनेडा के समागम को संबोधन करते हुए कहानीकार वरियाम संधु



4 अप्रैल 2014 को बरनाला में हुई राज्य स्तरीय छिमाही एकत्रता में शामिल डैलीगेट



एकत्रता के दौरान सोसायटी की तरफ से नवप्रकाशित पुस्तकें रिलीज करते हुए राज्य स्तरीय पदाधिकारी



अमृतसर जोन की तरफ से निकाले गए वैज्ञानिक चेतना मार्च का दृश्य



नेत्र प्रदानी माता गंगा देवी के मुक्तसर में धार्मिक रस्मों के बगैर की जाने वाली शोक सभा को संबोधित करते हुए राजिन्द्र भदोड़



स. स. स. सोहाना में तर्कशील साहित्य वैन में पुस्तकें देख रही छात्राएं

If undelivered please return to :

Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera Bye Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....